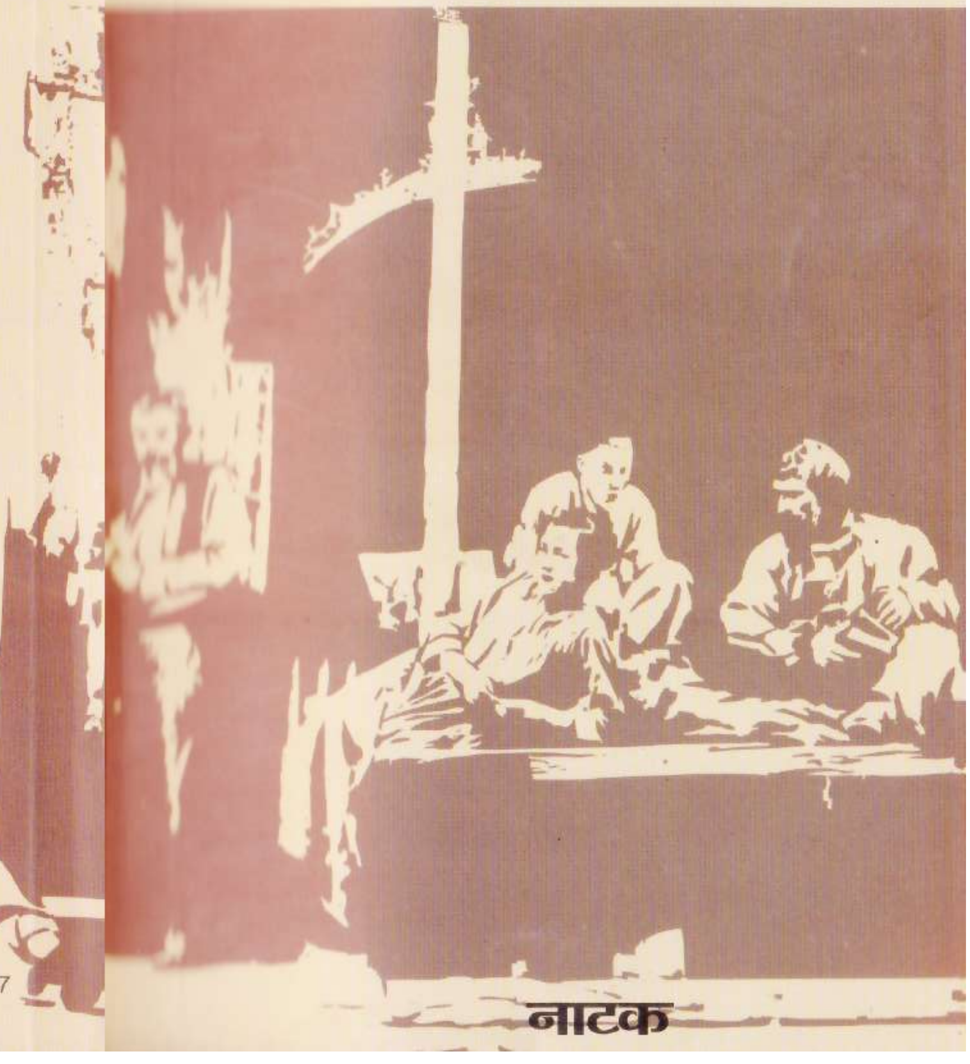
करवट

मक्सिम गोर्की





नाटक

परिकल्पना प्रकाशन
लखनऊ

ISBN:81-87425-68-7

करवट

(नाटक)



करवट

(नाटक)

मक्सिम गोर्की

परिकल्पना प्रकाशन
लखनऊ

ISBN: 81-87425-68-7 (PB)
81-87425-69-5 (HB)

मूल्य : रु. 40.00 (पेपर बैक)
रु. 80.00 (सजिल्द)

पहला संस्करण : **जनवरी, 2006**

परिकल्पना प्रकाशन
द्वारा, जनचेतना, डी-68, निरालानगर,
लखनऊ-226 020 द्वारा प्रकाशित

क्रिएटिव प्रिन्टर्स, 628/S-28, शक्तिनगर, लखनऊ द्वारा मुद्रित

आवरण : **रामबाबू**

KARVAT *A Play by **Maxim Gorky***

इस नाट्य कृति के बारे में

मक्सिम गोर्की का पहला नाटक **'करवट'** ('मेश्चाने') 1900-1901 के दौरान लिखा गया और 1902 में प्रकाशित हुआ। अंग्रेज़ी में इसके अनुवाद **'स्मग सिटिज़न्स'**, **'दि फिलिस्टाइन्स'**, और **'दि पेटी बुर्जुआ'** नाम से हुए हैं।

1901 में गोर्की की **चेखव** से मित्रता होने के एक वर्ष पहले से ही मास्को आर्ट थियेटर में *"वोल्गा क्षेत्र के एक आवारा"* के किस्से पहुँचने लगे थे जिसके पास *"लिखने की जबर्दस्त प्रतिभा"* थी। इस समय तक गोर्की की सर्जनात्मक यात्रा लगभग एक दशक पूरा कर चुकी और उनकी सामाजिक-विचारधारात्मक खोजी यात्रा उन्हें मार्क्सवाद के मुकाम तक पहुँचा चुकी थी।

वह **लेनिन** के **'इस्क्रा'** अखबार की राजनीति के साथ अपनी प्रतिबद्धता घोषित कर चुके थे और 1901 में राजनीतिक कार्रवाइयों के लिए मुक़दमे और इलाक़ा-बदर के दण्ड का भी सामना कर चुके थे। अपनी सर्जनात्मक सक्रियता के पहले दशक की कहानियों में, इतिहास-निर्माण में मजदूर वर्ग की ऐतिहासिक भूमिका की पहचान करते हुए गोर्की ने आम लोगों के अन्धकारमय जीवन की विमानवकारी परिस्थितियों का विश्वसनीय चित्र प्रस्तुत किया और साथ ही अलग-थलग व्यक्तिगत विद्रोहों की निरर्थकता को तथा रूसी समाज में एक नई सामाजिक-राजनीतिक चेतना के प्रस्फुटन के तथ्य को रेखांकित किया। अपनी इन कहानियों में गोर्की ने उन्नीसवीं शताब्दी के यथार्थवाद और स्वच्छन्दतावाद की सर्वश्रेष्ठ परम्पराओं को विकसित किया और फिर इन दोनों का संश्लेषण करते हुए समाजवादी यथार्थवाद की पूर्वपीठिका तैयार की। नाटकों की दुनिया में प्रवेश से पहले गोर्की के दो उपन्यास **'फ़ोमा गोर्देयेव'** और **'वे तीन'** भी प्रकाशित हो चुके थे। इनमें गोर्की ने सर्वहारा वर्ग और बुर्जुआ वर्ग के विभिन्न संस्तरों के प्रतिनिधि चरित्रों को उभारा था और मेहनतकशों के अन्धकारमय जीवन के आभासी यथार्थ को भेदकर उनकी इतिहास-निर्मात्री शक्ति की पहचान की थी।

नाट्य-सृजन के क्षेत्र में गोर्की के प्रवेश के पीछे अन्तोन चेखव की महत्वपूर्ण भूमिका थी। मास्को आर्ट थियेटर उस समय रूस की अग्रणी रंग-संस्था थी जिससे **स्तानिस्लाव्स्की** और **नेमिरोविच-दांचेंको** जैसी हस्तियाँ जुड़ी हुई थीं। उनके प्रयोगों की चर्चा उस समय रूस से बाहर पूरे यूरोप तक में हो रही थी। मास्को आर्ट थियेटर द्वारा चेखव के नाटक **'हंसनी'** (सीगल) का मंचन उन दिनों काफी चर्चा का विषय बना हुआ था। चेखव ने गोर्की का परिचय इस थिएटर कम्पनी से कराया और उनके लिए नाट्य-लेखन करने के

लिए गोर्की को प्रोत्साहित किया। गोर्की ने भी इस नयी विधा में हाथ आज़माने के लिए कमर कसी और एक साथ दो नाटकों का लेखन शुरू किया। इनमें से एक नाटक में अपने आप में सिमटे और अहंकारी बुर्जुआ बुद्धिजीवियों के मुकाबले सर्वहारा चरित्रों को प्रस्तुत किया गया था और उनके आत्मिक-नैतिक मूल्यों की श्रेष्ठता को उभारा गया था। दूसरा नाटक समाज की सबसे निचली सतह के निवासियों के अन्धकारमय जीवन पर केन्द्रित था। स्तानिस्लाव्स्की और दांचेंको की अधिक दिलचस्पी उस दूसरे नाटक में थी जिसका शीर्षक आगे चलकर **'तलछट'** रखा गया। लेकिन गोर्की ने पहले नाटक 'करवट' का लेखन पहले पूरा किया और मास्को आर्ट थियेटर तत्काल इसके मंचन की तैयारियों में जुट गया।

नाटक का लेखन-कार्य पूरा होने के बाद, स्तानिस्लाव्स्की और दांचेंको के अतिरिक्त चेखव वह पहले व्यक्ति थे जिन्होंने इसे पढ़ा और तत्क्षण अपनी प्रतिक्रिया दी। 22 अक्टूबर 1901 को उन्होंने नाटक पर अपनी राय देते हुए गोर्की को लिखे गये अपने पत्र में लिखा :

"आपका नाटक पढ़े हुए मुझे पाँच दिन हो गये हैं। मैंने अब तक आपको इसलिए नहीं लिखा था कि मुझे चौथा अंक नहीं मिला था, मैं इसका इन्तज़ार करता रहा, और–मुझे अब भी यह नहीं मिला है। और इसलिए मैंने सिर्फ तीन अंक पढ़े हैं, लेकिन मैं सोचता हूँ कि नाटक के बारे में राय बनाने के लिए इतना काफ़ी है। यह जैसी कि मुझे आशा थी, बहुत अच्छा है, गोर्की के अपने अन्दाज़ में लिखा गया है, मौलिक है, बेहद दिलचस्प है, और अगर कमियों से बात शुरू करें, तो मुझे बस एक दिखायी दी। यह कमी वैसी ही है जैसे लाल बालों वाले किसी शख़्स में लाल बाल–फ़ॉर्म की रूढ़ि। आपने नये और मौलिक लोगों से नये गीत गवाये हैं लेकिन उनके साथ जिन साज़ों की संगत है वे पुराने लगते हैं। आपने चार अंक रखे हैं, पात्र भारी-भरकम वक्तव्य देते हैं, लम्बी वक्तृताओं के पहले चेतावनी का भाव है, वगैरह, वगैरह। लेकिन यह सब महत्वपूर्ण नहीं है, और यह सब, कहें तो नाटक के अच्छे बिन्दुओं में डूब जाता है। पेर्चीख़िन–कितना जीवन्त! उसकी बेटी मोहक है, तत्याना और प्योत्र भी, और उनकी मां तो एक शानदार बूढ़ी महिला है। नाटक के केन्द्रीय चरित्र नील का चित्रण ऊर्जस्वी ढंग से किया गया है और बेहद दिलचस्प है! सच तो यह है कि नाटक पहले दृश्य से ही आपको बाँध लेता है। अगर आप पेर्चीख़िन की भूमिका आर्त्योम के अलावा किसी और को दें तो भगवान ही बचाये, जबकि अलेक्सेयेव स्तानिस्लाव्स्की को निश्चित तौर पर नील की भूमिका निभानी चाहिए। ये दो व्यक्ति बिल्कुल वही करेंगे जिसकी जरूरत है; प्योत्र– मेयेरहोल्ड। बस नील की भूमिका, एक शानदार भूमिका, दो-तीन गुना बड़ी करनी चाहिए। आपको नाटक का अन्त इससे करना चाहिए, ताकि यह प्रमुख भूमिका बन जाए। बस उसे प्योत्र और तत्याना के साथ कण्ट्रास्ट न करें, उसे अपने जैसा और उन्हें अपने जैसा होने दीजिए, ये सब एक दूसरे से स्वतंत्र, अद्भुत, शानदार लोग हैं। जब नील प्योत्र और तत्याना से श्रेष्ठ दिखना चाहता है और

अपने बारे में कहता है कि वह बढ़िया आदमी है, तो हमारे अच्छे मेहनतकश इंसान की वह ख़ासियत, विनम्रता का तत्व ख़त्म हो जाता है। वह डींग हाँकता है, वह बहस करता है, लेकिन, इसके बिना भी हम देख सकते हैं कि वह किस तरह का आदमी है। उसे मस्ती में रहने दीजिए, चारों अंकों में उसे शरारतें करने दीजिए, अपने काम के बाद उसे ख़ूब खाते हुए दिखाइये–और दर्शकों का दिल जीत लेने के लिए इतना ही काफ़ी होगा। प्योत्र, मैं फिर से कहता हूँ, अच्छा है। ज्यादा सम्भावना है कि आपको ख़ुद पता न हो कि वह कितना अच्छा है। तत्याना की भूमिका भी पूरी है, बस (क) उसे वाक़ई एक मास्टरनी होना चाहिए, बच्चों को पढ़ाना चाहिए, स्कूल से घर आना चाहिए, अपने विद्यार्थियों और अभ्यास पुस्तिकाओं के साथ दिखना चाहिए, और (ख) पहले या दूसरे अंक में यह ज़िक्र होना चाहिए कि उसने ज़हर खाने की कोशिश की है, और तब, इस संकेत के बाद, तीसरे अंक में ज़हर खाने की घटना इतनी चौंकाने वाली नहीं लगेगी और ज़्यादा उपयुक्त दिखेगी। तेतेरोव बहुत अधिक बोलता है : ऐसे चरित्र औरों के बीच थोड़ा-थोड़ा करके दिखाये जाने चाहिए, क्योंकि वैसे भी, इस क़िस्म के लोग हर कहीं आकस्मिक ही होते हैं–जीवन में भी और मंच पर भी। पहले अंक में येलेना को औरों के साथ खाना खाते हुए दिखाइये, उसे बैठकर हँसी-मज़ाक करते हुए दिखाइये, वरना वह बहुत कम सामने आती है, और उसका चरित्र स्पष्ट नहीं होता। प्योत्र से उसकी स्वीकारोक्ति बहुत अचानक होती है, मंच पर यह कुछ ज़्यादा ही तीखेपन से उभरकर आयेगी। उसे भावनाओं से लबरेज़ स्त्री बनाइये, अगर प्यार करने वाली नहीं तो कम से कम ऐसी जो प्यार में पड़ सकती है।"

1902 में मास्को आर्ट थियेटर ने मंच पर गोर्की के पहले नाटक 'करवट' को पहली बार प्रस्तुत किया। इस समय तक कम्युनिस्ट राजनीति की ओर झुकाव के नाते गोर्की पर पुलिस लगातार नज़र रख रही थी। पहले तो नाटक के प्रदर्शन के लिए लाइसेंस ही नहीं दिया गया, फिर उसे बुरी तरह से सेंसर किया गया, और आखिरकार थिएटर के कुछ चुनिन्दा नियमित दर्शकों के सामने केवल चार प्रदर्शनों के लिए लाइसेंस दिया गया। मास्को आर्ट थियेटर ने सेण्ट पीटर्सबर्ग के अपने दौरे के दौरान 19 मार्च 1902 को इसका पहला मंचन किया। थिएटर को चारों ओर से घुड़सवार सैनिकों ने घेर रखा था और हॉल के भीतर भी पुलिस तैनात थी। इस सारे विवाद से नाटक की लोकप्रियता को और अधिक मदद ही मिली। लेकिन यह विवाद यदि नहीं भी होता तो नाटक अपने सर्वथा नये कथ्य के चलते भी इस लोकप्रियता के योग्य था।

मंचन के बाद नाटक सेण्ट पीटर्सबर्ग के साहित्यिक हलकों में गरमागरम बहस का मुद्दा बन गया। चेखव ने विशिष्ट गोर्कियन शैली के अतिरिक्त इस बात के लिए नाटक की विशेष प्रशंसा की थी कि उसमें गोर्की ने निम्न-पूँजीवादी मानसिकता की, खास तौर पर ऐसे समय में आलोचना प्रस्तुत की थी जबकि समाज *"प्रतिरोध के लिए सर्वाधिक तैयार"* था। चेखव के अनुसार, गोर्की ऐसा करने वाले रूस और पूरी दुनिया के पहले व्यक्ति थे। एक नाटककार के रूप में गोर्की ने उन्नीसवीं शताब्दी की उस यथार्थवादी

परम्परा को आगे विस्तार दिया जिसके प्रतिनिधि वाहक **इब्सन, स्ट्रिण्डबर्ग, अलेक्सान्द्र ओस्त्रोव्स्की** और **चेखव** रहे थे। चेखव की ही तरह गोर्की ने भी सुनिर्मित-सुगठित नाटकों की जटिल और कृत्रिम 'प्लाटिंग' को खारिज किया और समकालीन सामाजिक जीवन के वास्तविक चरित्रों, स्थितियों, विचारों के द्वन्द्वों-संघातों के विन्यास से यथार्थवादी नाटकों की रचना की। सामाजिक रसातल के उपेक्षित निवासियों को रंगमंच की रोशनी में ला खड़ा करने के साथ ही उन्होंने नये स्वप्नद्रष्टा सर्वहारा चरित्रों की रचना की। नाटक का मुख्य पात्र इंजन ड्राइवर नील एक ऐसा ही नया चरित्र था। इस नये चरित्र की मौलिकता को चेखव ने भी अपने उपरोक्त पत्र में रेखांकित किया है। इस मायने में नील 'माँ' उपन्यास के नायक पावेल व्लासोव का पूर्ववर्ती प्रतीत होता है। गोर्की ने नील के चरित्र के सकारात्मक, ऊर्जस्वी, मानवीय पहलुओं को सफ़ेदपोश परजीवियों की नैतिक-आत्मिक गिरावट के बरक्स प्रभावशाली ढंग से खड़ा किया। लेकिन चेखव ने भी इस बात की ओर इंगित किया कि इस नाटक को अपने सर्वथा नये कथ्य के अनुरूप जिस नये फ़ॉर्म की ज़रूरत थी, वह इसमें पूरी तरह से उभर नहीं पाया था। पूर्ववर्ती नाट्य-रूपों की पारम्परिक रूढ़ि से अभी गोर्की पूरी तरह से मुक्त नहीं हो पाये थे। चेखव के ही रूपक का इस्तेमाल करें तो कहा जा सकता है कि नये और मौलिक लोगों के नये गीत के साथ संगत करने वाले साज़ अभी पुराने थे। लेकिन यह नाटक गोर्की की नाट्य रचना-यात्रा का अभी पहला ही मुकाम था। सर्वथा नये कथ्य का आकर्षण इसकी प्रमुख विशिष्टता था। अपने अगले नाटकों—'तलछट' और 'दुश्मन' तक आते-आते वे आलोचनात्मक यथार्थवादी नाटकों के स्थापित फ़ॉर्म के सीमान्तों का अतिक्रमण कर चुके थे। आगे चलकर गोर्की के नाटकों ने मंच की यथार्थवादी तकनीक को विकसित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। इस प्रक्रिया में मास्को आर्ट थियेटर की आलोचनात्मक यथार्थवादी शैली समाजवादी यथार्थवादी शैली की दिशा में आगे विकसित हुई जो न केवल *"एक कलात्मक अनुभूति से गुजरने के सत्य"* (स्तानिस्लाव्स्की) में प्रकट हुई, बल्कि जिसने उस पूरी अवधि का एक समग्र-समाकलित बिम्ब उपस्थित किया जिसमें आसन्न क्रान्तिकारी विस्फोटों के पूर्वसंकेत निहित थे।

'करवट' नाटक की उस समय के प्रसिद्ध मार्क्सवादी समालोचक **अनातोली दिविल्कोव्स्की** ने इसलिए सराहना की थी कि इसमें हासमान अतीत और मुक्त-जन्मा, आवेगमय भविष्य के द्वन्द्व को जीवन्त ढंग से प्रस्तुत किया गया था। इंजन-ड्राइवर नील भविष्य की शक्तियों का प्रतिनिधि था और दूसरे ग्रह का निवासी प्रतीत होते हुए भी वास्तविक जीवन का पात्र था। आगे चलकर, 1919 में **अनातोली लुनाचार्स्की** ने लिखा था : *"हम, युवा सामाजिक जनवादी, जो गोर्की की रचनाएँ बहुत ग़ौर से पढ़ते थे, 'करवट' नाटक में नील के चरित्र से अत्यधिक प्रभावित हुए थे।"*

— कात्यायनी

पात्र-परिचय

वसीली वसील्येविच बेस्सेमेनोव,	**उम्र अट्ठावन साल, रंगसाज़ों के संघ का अच्छा खाता-पीता मुखिया**
अकुलीना इवानोव्ना बेस्सेमेनोवा,	**वसीली की पत्नी, उम्र बावन साल।**
प्योत्र बेस्सेमेनोव,	**वसीली का बेटा। उम्र छब्बीस साल, विश्वविद्यालय से निकाला गया विद्यार्थी।**
तत्याना बेस्सेमेनोवा,	**वसीली की बेटी। उम्र अट्ठाईस साल, अध्यापिका।**
नील,	**वसीली द्वारा पाला-पोसा गया बेटा, उम्र सत्ताईस साल, इंजन-ड्राइवर।**
पेर्चीख़िन,	**वसीली का दूर का रिश्तेदार, उम्र पचास साल, चिड़ीमार।**
पोल्या,	**पेर्चीख़िन की बेटी, उम्र इक्कीस साल, दर्ज़िन जो बेस्सेमेनोव परिवार में काम करती है।**
येलेना निकोलायेव्ना क्रिव्सोवा,	**जेल-वार्डन की विधवा, उम्र चौबीस साल, बेस्सेमेनोव की किरायेदार।**
तेतेरेव,	**भजनमण्डली का गायक** } बेस्सेमेनोव के घर में रहते हैं।
शीश्किन,	**विद्यार्थी** }
त्स्वेतायेवा,	**उम्र पचीस साल, अध्यापिका, तत्याना की सहेली।**
स्तेपानीदा,	**बावर्चिन।**
बुढ़िया।	
लड़का,	**रंगसाज का चेला।**डॉक्टर।

घटनास्थल- कोई छोटा सा-प्रान्तीय नगर।



'करवट' के पात्रों के साथ मक्सिम गोर्की (1902)

मंच-सज्जा

एक समृद्ध कारोबारी के घर का कमरा। उस के दायें हिस्से को विभाजन-दीवारों से दो कमरों में विभाजित कर दिया गया है। इस तरह मंच का पिछला भाग कम चौड़ा रह जाता है और आगे की ओर एक छोटा-सा कमरा बन जाता है। लकड़ी की मेहराब के साथ रंग-बिरंगा परदा लटक रहा है। बड़े कमरे के पिछवाड़े की दीवार में एक दरवाज़ा है जो ड्योढ़ी में और घर के दूसरे हिस्से में जाने का रास्ता है, जहाँ तेतेरेव और शीश्किन के कमरे और रसोईघर है। दरवाज़े के बायीं ओर बर्तन रखने की एक भारी अलमारी है और कोने में एक सन्दूक़। दरवाज़े के दायीं ओर केस में बन्द पुराने ढंग की एक बड़ी घड़ी है। घड़ी का चाँद जैसा बड़ा-सा पेण्डुलम शीशे के पीछे धीरे-धीरे हिल रहा है और जब खामोशी होती है तो उसकी नीरस टिक-टिक सुनाई देती रहती है। बायीं ओर की दीवार में दो दरवाज़े हैं—एक बेस्सेमेनोव और उसकी पत्नी के कमरे का और दूसरा उनके बेटे प्योत्र के कमरे का। इन दरवाज़ों के बीच सफ़ेद टाइलों का बड़ा-सा छतवाला तन्दूर* है। तन्दूर के पास मोमजामे से ढका हुआ एक पुराना सोफ़ा रखा हुआ है। सोफ़े के सामने एक बड़ी मेज है। घर के लोग यहीं खाना खाते हैं और चाय पीते हैं। दीवारों के साथ-साथ, बिल्कुल बराबर-बराबर फ़ासले पर, सीधी टेक की सस्ती कुर्सियाँ रखी हुई हैं। मंच के बायीं ओर, लगभग मंच के सिरे पर, शीशे की छोटी-सी अलमारी है। इस अलमारी में खूबसूरत डिब्बे, ईस्टर के रंग-बिरंगे अण्डे, कांसे के शमादानों की एक जोड़ी, छोटे-बड़े चम्मच, चाँदी के कुछ जाम और छोटे गिलास रखे हैं। मेहराब द्वारा बड़े कमरे से अलग किये गये छोटे कमरे में दर्शकों के सामने दीवार के पास एक पियानो रखा है। पास ही एक मेज़ पर स्वर-लिपियाँ हैं। कमरे के एक कोने में रखे हुए बड़े गमले में फ़िलोडेंड्रोन का पौधा लगा है। दायीं ओर की दीवार में दो खिड़कियाँ हैं जिनके दासों पर फूलोंवाले गमले रखे हैं। खिड़कियों के पास एक सोफ़ा है और उसके नज़दीक, मंच के अगले सिरे की तरफ़ एक छोटी-सी मेज़ है।

* पुराने वक़्तों में घर गर्म रखने के लिए रूस में छतवाले तन्दूर बनाये जाते थे जिनके ऊपर सोने की जगह भी होती थी।—अनु.

पहला अंक

(सन्ध्या के लगभग पाँच बजे हैं। खिड़कियों में से पतझर का झुटपुटा झाँक रहा है। बड़े कमरे में अँधेरा-सा है। सोफ़े पर अधलेटी-सी तत्याना एक पुस्तक पढ़ रही है। पोल्या मेज़ के पास बैठी हुई सिलाई कर रही है।)

तत्याना (पढ़ते हुए) : "चाँद निकला। यह देखना बड़ा अजीब-सा लग रहा था कि इतना छोटा और ऐसा उदास-सा चाँद धरती पर इतनी प्यारी, रुपहली और नीली-नीली चाँदनी बरसा सकता है"... (पुस्तक को अपने घुटनों पर रख लेती है) अँधेरा हो गया है।

पोल्या : लैम्प जला दूँ?

तत्याना : नहीं, रहने दो। थक गयी हूँ पढ़ते-पढ़ते...

पोल्या : कितना बढ़िया लिखा गया है! कितनी सादगी... और कितनी उदासी है इसमें... दिल की गहराइयों को छू लेता है...

(ख़ामोशी)

मैं तो अन्त जानने के लिए मरी जा रही हूँ। दोनों की शादी हो जायेगी या नहीं?

तत्याना (खीझकर) : मुख्य बात यह नहीं है...

पोल्या : मैं तो कभी ऐसे आदमी को प्यार न करती... कभी न करती!

तत्याना : वह क्यों?

पोल्या : बड़ी ऊब पैदा करता है...जब देखो—शिकवा-शिकायत! क्योंकि उसे अपने पर विश्वास नहीं... मर्द को यह तो जानना चाहिए कि वह अपनी ज़िन्दगी में क्या करना चाहता है...

तत्याना (धीरे से) : क्या...क्या नील जानता है?

पोल्या (विश्वास से) : हाँ, जानता है!

तत्याना : क्या चाहता है वह?

पोल्या : मैं...मैं आपको यह नहीं बता सकती... उसके सीधे-सादे ढंग से तो नहीं... लेकिन इतना ज़रूर जानती हूँ कि वह बुरे लोगों—कमीनों और लालचियों के नाक में दम कर देगा! वह उनसे बड़ी नफरत करता है...

तत्याना : इसका फ़ैसला कैसे हो कि कौन बुरा है और कौन भला?

पोल्या : उसे यह मालूम है!...

(तत्याना चुप रहती है, पोल्या की तरफ़ देखती भी नहीं। पोल्या मुस्कराकर उसके घुटनों से किताब उठा लेती है)

बहुत बढ़िया लिखा गया है सब कुछ! और वह तो बहुत ही प्यारी है...एकदम निष्कपट, सीधी-सादी और सहृदय! किसी औरत की ऐसी प्यारी तस्वीर सामने आने पर मुझे अपना आप भी भला लगने लगता है...

तत्याना : कैसी भोली हो तुम, पोल्या... तुम पर हँसी आती है! इस सारे किस्से से मुझे खीझ महसूस हो रही है! ऐसी कोई लड़की कभी नहीं थी! न कभी कोई ऐसी हवेली, कोई नदी और न ही कभी कोई ऐसा चाँद था! यह सब मनगढ़न्त बातें हैं। ज़िन्दगी दरअसल जैसी है—हर दिन की ज़िन्दगी, तुम्हारी और मेरी ज़िन्दगी—ये किताबें कभी उसकी सच्ची तस्वीर पेश नहीं करतीं...

पोल्या : लिखा तो दिलचस्प चीज़ों के बारे में ही जाता है। मगर हमारी ज़िन्दगी में भला क्या दिलचस्प है?

तत्याना (उसकी बात न सुनते हुए, झल्लाकर) : मुझे अक्सर ऐसा लगता है कि वही लोग किताबें लिखते हैं जो मुझे फूटी आँखों नहीं देख सकते... वे तो मानो हमेशा मेरे साथ बहस करते रहते हैं... यह कहते प्रतीत होते हैं—जैसा तुम सोचती हो, उससे यह कहीं बेहतर, और यह बदतर है...

पोल्या : और मैं यह सोचती हूँ कि सभी लेखक अवश्य दयालु होते हैं... काश मैं किसी लेखक को एक नज़र देख पाती!...

तत्याना (मानो अपने आप से बातें करते हुए) : भद्दी और बोझल बातों को वैसे पेश नहीं करते जैसे मेरी आँखें उन्हें देखती हैं, बल्कि एक खास ढंग से, बढ़ा-चढ़ाकर, दुख के गहरे रंग में रंगकर। और अच्छी बातों को वह अपने दिमाग़ से गढ़ लेते हैं। किताबी प्यार की तरह कभी किसी ने किसी को प्यार करते देखा है! और यह कि ज़िन्दगी दुख-दर्द से भरी पड़ी है—सो भी सच नहीं। ज़िन्दगी गदले पानी की एक बड़ी नदी की तरह धीरे-धीरे और एक ही चाल से बहती जाती है। और जब हम नदी को बहते हुए देखते रहते हैं, तो आँखें थक जाती हैं, ऊब महसूस होने लगती है... दिमाग़ ठस हो जाता है और यह तक सोचने को मन नहीं होता कि नदी किसलिए बह रही है?

पोल्या (विचारों में खोयी-सी और अपने सामने देखती हुई) : काश, मैं लेखक को देख पाती! आप पढ़ रही थीं और मैं रह-रहकर सोच रही थी—वह कैसा होगा? जवान? बूढ़ा? काले बालोंवाला?...

तत्याना : कौन?

पोल्या : इस किताब का लेखक...

तत्याना : वह तो मर भी गया...

पोल्या : ओह... कितने अफ़सोस की बात है! क्या उसे मरे हुए बहुत अरसा हो गया? जवान था?

तत्याना : अधेड़ उम्र का था। उसे पीने की लत थी...

पोल्या : हाय, बेचारा!...

(खामोशी)

ये समझदार लोग भला पीते क्यों हैं? उसे ही ले लीजिए... आपके यहाँ रहने वाले को... वही, जो गिरजे में गाता है... समझदार आदमी है, मगर पीता है... भला क्यों?

तत्याना : इसलिए कि ज़िन्दगी ऊबभरी है...

प्योत्र (उनींदा-सा अपने कमरे से बाहर आता है) : कैसा घुप अँधेरा है। वहाँ, उधर, कौन बैठा है?

पोल्या : मैं... और तत्याना वसील्येव्ना...

प्योत्र : तुम लोग लैम्प क्यों नहीं जला लेती?

पोल्या : झुटपुटे का मजा ले रही हैं...

प्योत्र : बुज़ुर्गों के कमरे से मेरे कमरे में तेल की गंध आती रहती है... शायद इसीलिए आज सपने में मैंने अपने को किसी ऐसी नदी में तैरते देखा—जिसका पानी तेल की तरह चिपचिपा था... तैरना बहुत मुश्किल था और मेरी समझ में यह नहीं आ रहा था कि किधर तैरूँ... किनारा कहीं नज़र नहीं आ रहा था। लकड़ी के टुकड़े मेरे पास से गुज़रते। लेकिन जैसे ही मैं हाथ बढ़ाकर उन्हें पकड़ता, वे... वे चूर-चूर होकर बिखर जाते... गले-सड़े जो थे... कैसा बेतुका सपना था... (सीटी बजाता हुआ इधर-उधर घूमता है) चाय का वक्त हो गया है न?...

पोल्या (लैम्प जलाते हुए) : मैं अभी जाकर तैयार करने को कहती हूँ... (बाहर चली जाती है)

प्योत्र : न जाने क्यों, शामों को तो हमारा यह घर बहुत ही तंग और उदास-उदास हो जाता है... बाबा आदम के वक्त का यह काठ-कबाड़, ये सभी चीज़ें... कुछ इस तरह फूलकर बड़ी और भारी-भरकम हो जाती हैं... फैलकर हवा को कुछ ऐसे दबा देती हैं कि साँस लेना मुश्किल हो जाता है। (अलमारी को घूँसा मारता है) इसे देखो... इस दरियाई घोड़े को... अट्ठारह बरस से यहीं खड़ा है... अट्ठारह बरस से. .. कहते हैं कि ज़िन्दगी बहुत तेज़ी से आगे बढ़ रही है... मगर यह अलमारी तो पिछले अट्ठारह सालों में टस से मस नहीं हुई... छुटपन में न जाने कितनी बार इससे मेरा सिर फूटा था... और अब भी यह मेरे रास्ते में आती रहती है। कमबख़्त कहीं

की! अलमारी नहीं, यह तो मानो कोई प्रतीक है... जहन्नुम में चली जाये यह!

तत्याना : कैसी उबानेवाली बातें किया करते हो तुम, प्योत्र... तुम्हारा जीने का यह ढंग अच्छा नहीं है...

प्योत्र : क्या मतलब?

तत्याना : तुम कहीं आते-जाते नहीं... बस, ऊपर येलेना के यहाँ... हर शाम बिताते हो। हमारे बुज़ुर्गों को इससे बड़ी परेशानी होती है...

(प्योत्र कोई जवाब न देकर कमरे में टहलता और सीटी बजाता रहता है)

तुम नहीं जानते कि पिछले कुछ समय से मैं कितनी अधिक थकावट महसूस करने लगी हूँ... स्कूल में मैं शोर-शराबे और हल्ले-गुल्ले से थक जाती हूँ... और घर पर शान्ति तथा व्यवस्था से। हाँ, यह सही है कि जबसे येलेना यहाँ आयी है, ज़िन्दगी में कुछ रंगीनी आ गयी है। हाँ, मैं बहुत जल्दी थक जाती हूँ, प्योत्र! और जाड़े की छुट्टियाँ अभी बहुत दूर हैं... नवम्बर... दिसम्बर...

(घड़ी छः बजाती है)

बेस्सेमेनोव (अपने कमरे के दरवाज़े में से झाँकते हुए) : फिर सीटी बजायी जा रही है! तुमने वह अर्ज़ी तो अभी तक नहीं लिखी होगी?

प्योत्र : लिख ली है, लिख ली है...

बेस्सेमेनोव : आखिर तो इतनी मेहरबानी कर दी... च-च-च! (ग़ायब हो जाता है)

तत्याना : कैसी अर्ज़ी?

प्योत्र : व्यापारी सिज़ोव पर सत्रह रूबल पचास कोपेक की नालिश करने की अर्ज़ी। उसने अपने सायबान की छत रंगवायी थी...

अकुलीना इवानोव्ना (लैम्प लिये हुए आती है) : फिर बूँदाबाँदी होने लगी है। (अलमारी से चाय के बर्तन निकालकर मेज पर लगाती है) यहाँ भीतर भी ठण्ड है। तन्दूर भी गर्माया—मगर ठण्ड को क्या परवाह इसकी। मकान बहुत पुराना हो गया है...दरारों से हवा आती रहती है... ओह, कैसी ठण्ड है! बच्चो, तुम्हारे पिता तो आज फिर चिढ़े हुए हैं... कहते हैं, कमर में दर्द हो रहा है। तेज़ी से बुढ़ाते जा रहे हैं... और ऊपर से हर काम में असफलता, ऐसा बेढंगापन... बेहिसाब खर्च... चिन्ताएँ।

तत्याना (भाई से) : तुम कल येलेना के यहाँ गये थे?

प्योत्र : हाँ...

तत्याना : खूब मज़ा रहा?

प्योत्र : हर रोज़ जैसा... चाय पी, गाने गाये... बहस करते रहे...

तत्याना : कौन किससे?

प्योत्र : मैं—नील और शीश्किन से।

तत्याना : हमेशा की तरह...

प्योत्र : हाँ। नील ने बड़े जोश से ज़िन्दगी के अच्छे अन्दाज़ का राग अलापा... बहुत ही खीझ आती है मुझे उससे... बड़ा आया ज़िन्दगी में खुशी और प्यार का ठेकेदार... सिर फिर गया है उसका! उसकी बातें सुनकर तो ऐसे लगता है मानो हमारी वह अनजानी ज़िन्दगी कुछ ऐसी है जिसमें अभी कोई चाचा साम आकर हम पर अपनी रहमत के फूल बरसाने लगेगा... शीश्किन ने दूध के लाभों और तम्बाकू की हानियों पर एक लम्बा भाषण झाड़ा... उसने मुझ पर बुर्जुआ विचार रखने का आरोप लगाया।

तत्याना : वही पुरानी बातें...

प्योत्र : हाँ...

तत्याना : क्या तुम्हें... येलेना बहुत अच्छी लगती है?

प्योत्र : कुछ बुरी नहीं है... खूबसूरत है... खुशमिज़ाज है...

अकुलीना इवानोव्ना : बहुत चंचल है! बिल्कुल बेकार ज़िन्दगी है उसकी! हर शाम को मेहमान, चाय और मिठाईयाँ... नाच और गाना-बजाना... वाशबेसिन भी नहीं खरीद सकती! चिलमची में हाथ-मुँह धोती है, पानी फ़र्श पर गिरा देती है... इससे तख़्ते तो गलते हैं...

तत्याना : पिछली रात मैं क्लब के एक जलसे में गयी थी। वहाँ सोमोव भी था—हमारे स्कूल का संरक्षक और नगर-परिषद का सदस्य। मेरा अभिवादन करते हुए उसने ज़रा अपना सिर हिलाया... और बस। मगर जब जज रोमानोव की रखेल वहाँ आयी तो उस वक़्त उसकी दौड़-धूप देखने वाली थी। भागा हुआ उसकी तरफ़ गया, ऐसे झुककर अभिवादन किया मानो लाट साहब की बीवी हो और हाथ चूमा...

अकुलीना इवानोव्ना : कैसा बेहया है न? चाहिए तो यह था कि वह इस भली लड़की का हाथ थामकर बड़ी शान से सभी के सामने हाल में जाता...

तत्याना (अपने भाई से) : मैं कहती हूँ, तुम ज़रा ग़ौर करो! इन लोगों की नज़रों में एक अध्यापिका किसी रंगी-पुती और बदचलन औरत के मुक़ाबले में कम इज्ज़त की हकदार है...

प्योत्र : चलो हटाओ, ऐसी घटिया बातों की तरफ ध्यान देने में कोई तुक नहीं... तुम्हें अपने को इनसे ऊपर रखना चाहिए... वह बदचलन तो है, मगर चेहरा नहीं रंगती...

अकुलीना इवानोव्ना : तुम भला यह कैसे जानते हो? क्या तुमने उसके गाल चाटकर देखे हैं? बहन का अपमान हुआ और तुम उसकी हिमायत करते हो जिसके कारण ऐसा हुआ...

प्योत्र : अम्मां, रहने भी दें...

तत्याना : अम्मा के सामने तो कोई बात ही नहीं की जा सकती...

(दरवाज़े के पीछे, ड्योढ़ी में भारी क़दमों की आवाज़ सुनाई देती है)

अकुलीना इवानोव्ना : बस, बस! अपनी चपर-चपर बन्द करो। प्योत्र, तुम शान से इधर-उधर टहलने के बजाय अगर जाकर ज़रा समोवार भीतर उठा लाओ तो अच्छा रहे... स्तेपानीदा हर रोज शिकायत करती है कि समोवार बहुत भारी है...

स्तेपानीदा (समोवार भीतर लाकर मेज़ के पास फ़र्श पर रखती है, कमर सीधी करती है और हाँफती हुई मालकिन से कहती है) : बुरा मानें या भला, एक बार फिर आपसे कहे देती हूँ, इस शैतान को उठाकर लाना मेरे बस का रोग नहीं, टांगें काँपने लगती हैं...

अकुलीना इवानोव्ना : तो क्या चाहती हो कि इस काम के लिए एक ख़ास नौकर रखा जाये?

स्तेपानीदा : यह आप जानें! वह गवैया ही यह कर सकता है—उसका क्या बिगड़ जायेगा? प्योत्र वसील्येविच, समोवार ज़रा मेज़ पर रख दें, सच, मुझसे रखा नहीं जायेगा!

प्योत्र : लाओ... यह लो!

स्तेपानीदा : मेहरबानी। (बाहर जाती है)

अकुलीना इवानोव्ना : बात तो ठीक है। प्योत्र, तुम जरा गवैये से कह देना कि वह समोवार भीतर ले आया करे! अच्छा ख़्याल है...

तत्याना (उसाँस छोड़कर) : हे भगवान...

प्योत्र : समोवार के लिए ही क्यों, शायद पानी लाने, फ़र्श रगड़ने, चिमनियाँ साफ़ करने और शायद कपड़े धोने के लिए भी उसे कह देना चाहिए?

अकुलीना इवानोव्ना (खीझकर हाथ झटकते हुए) : क्यों बेकार की बातें कर रहे हो? ये सब काम उसकी मदद के बिना ही ढंग से हो जाते हैं... मगर समोवार उठाकर लाना...

प्योत्र : अम्मां! हर शाम आप यही टेढ़ा सवाल सामने लाती हैं कि समोवार उठाकर कौन लायेगा। यक़ीन मानिये जब तक आप छुटपुट काम करनेवाला कोई नौकर नहीं रखेंगी यह सिरदर्दी बनी रहेगी...

अकुलीना इवानोव्ना : हम क्या अचार डालेंगे ऐसे नौकर का? इस तरह के काम

तो खुद तुम्हारे पिता करते हैं...

प्योत्र : इसी को तो मैं कंजूस-मक्खीचूस होना कहता हूँ। बैंक में इतना रुपया जमा होने पर दाँत से कौड़ी-कौड़ी पकड़ना...

अकुलीना इवानोव्ना : शी-शी! अपनी ज़बान को लगाम दो! अगर तुम्हारे पिता ने सुन लिया तो मज़ा चखा देंगे तुम्हें बैंक के रुपये का! तुमने जमा किया है बैंक में रुपया?

प्योत्र : उफ़!

तत्याना (सोफे से उछलकर खड़ी होते हुए) : ओह प्योत्र, तुम ही चुप हो जाओ... कितना मुश्किल है यह बर्दाश्त करना...

प्योत्र (उसके पास जाकर) : अच्छा, तुम नहीं चिल्लाओ! पता भी नहीं चलता और आदमी ऐसी चख़-चख़ के फेर में पड़ जाता है...

अकुलीना इवानोव्ना : अहा, फिर से रोना-धोना शुरू हो गया! माँ के लिए एक शब्द कहना भी गुनाह है...

प्योत्र : हर दिन यही गाना!... सुन-सुनकर कान पक गये। आत्मा पर जैसे कालिख जमती जाती है, उसे ज़ंग लगता जाता है...

अकुलीना इवानोव्ना (अपने कमरे के दरवाजे की तरफ पुकारते हुए) : प्योत्र के पिता! आकर चाय पी लो ...

प्योत्र : यूनिवर्सिटी में लौटने का वक़्त आने पर मैं फिर से मास्को चला जाऊँगा। पहले की तरह सिर्फ़ हफ़्ते भर के लिए यहाँ आया करूँगा। यूनिवर्सिटी की ज़िन्दगी के तीन सालों में मैं घर, हर दिन की यहाँ की चख़-चख़ और कौड़ी-कौड़ी की बक-झक के बारे में बिल्कुल भूल गया था...माँ-बाप की छत्रछाया से दूर, अकेले रहने में बहुत मज़ा है...

तत्याना : लेकिन मैं बदकिस्मत कहीं नहीं जा सकती...

प्योत्र : मैं तो तुमसे कहता हूँ कि जाकर पढ़ाई करो...

तत्याना : ओह, क्या करूँगी मैं और पढ़कर? मैं पढ़ना नहीं, जीना चाहती हूँ, जीना... समझते क्यों नहीं?

अकुलीना इवानोव्ना (समोवार से चायदानी हटाते हुए हाथ जला लेती है) : उफ़! तेरा बेड़ा ग़र्क़ हो!

तत्याना (प्योत्र से) : और ठीक से यह कल्पना भी नहीं कर सकती कि जीना किसे कहते हैं? मैं जीना भी चाहूँ तो कैसे जिऊँ?

प्योत्र (सोच में डूबते हुए) : हाँ, जीना भी ढंग से चाहिए... सोच-समझकर...

बेस्सेमेनोव (अपने कमरे से बाहर आता है। **बेटे-बेटी पर नज़र डालकर मेज़ के पास बैठ जाता है)** : सबको बुला लिया?

अकुलीना इवानोव्ना : प्योत्र, सबको बुला लो...

(प्योत्र बाहर जाता है तत्याना मेज़ के पास जाती है)

बेस्सेमेनोव : हुँह! फिर वही टिकियोंवाली चीनी ख़रीदी है? कितनी बार मैं यह कह चुका हूँ...

तत्याना : पिता जी, इससे भला फ़र्क़ ही क्या पड़ता है?

बेस्सेमेनोव : मैं तुमसे नहीं, तुम्हारी माँ से बात कर रहा हूँ। तुम्हें किसी चीज़ से कोई फ़र्क़ नहीं पड़ता, यह मैं जानता हूँ...

अकुलीना इवानोव्ना : मैंने यह तो सिर्फ़ आध सेर ही ख़रीदी थी। चीनी का डला पड़ा हुआ है... हमें उसे तोड़ने का वक़्त नहीं मिला... बिगड़ो नहीं!

बेस्सेमेनोव : मैं बिगड़ नहीं रहा हूँ...सिर्फ़ यह कह रहा हूँ कि टिकियोंवाली चीनी बहुत भारी होती है और उसमें मिठास भी कम होती है, मतलब यह कि वह ज़्यादा ख़र्च होती है। तुम्हें हमेशा बड़े डलों की चीनी ख़रीदकर... उसे ख़ुद तोड़ना चाहिए। ऐसा करने से चूरा बच जाता है जो रसोई में काम आ सकता है। फिर यह चीनी हल्की और मीठी भी ज़्यादा होती है... **(तत्याना से)** तुम क्यों आहें भर रही हो, रोनी सूरत क्यों बनाये हो?

तत्याना : नहीं, नहीं... ऐसी तो कोई बात नहीं...

बेस्सेमेनोव : अगर बात नहीं तो आहें भी नहीं भरो। तुम्हें क्या अपने पिता की बातें कड़वी लगती हैं? अपने लिए नहीं, तुम नौजवानों के भले के लिए ही हम यह सब कहते हैं। हम तो अपनी ज़िन्दगी गुज़ार चुके, अब जीना तो तुम लोगों को है। जब तुम लोगों की तरफ़ देखते हो, तो समझ नहीं पाते कि इस दुनिया में आख़िर तुम्हारी गुज़र कैसे होगी? क्या इरादे हैं तुम लोगों के? हमारी ज़िन्दगी का रंग-ढंग, हमारा ढर्रा तुम्हें पसन्द नहीं, यह हम देख रहे हैं, महसूस करते हैं... मगर अपने लिए तुम लोगों ने कौन सा नया रास्ता खोज निकाला है? यही तो सवाल है। हाँ—यही...

तत्याना : पिता जी! ज़रा याद कीजिये, कितनी बार आप पहले भी यही बात मुझसे कह चुके हैं?

बेस्सेमेनोव : मगर मैं यही बात एक बार नहीं, बार-बार कहूँगा! क़ब्र में जाने तक कहता रहूँगा! क्योंकि मेरे मन को चैन नहीं। तुम दोनों ही मेरी इस बेचैनी की जड़ हो। अच्छी तरह सोचे-समझे बिना तुम दोनों को पढ़ा-लिखाकर मैंने बड़ी भूल की है... प्योत्र को यूनिवर्सिटी से निकाल दिया गया है और तुम इतनी उम्र होने पर भी कुँवारी बैठी हो...

तत्याना : मैं नौकरी कर रही हूँ... मैं...

बेस्सेमेनोव : यह मैं सुन चुका हूँ। मगर किसे ज़रूरत है तुम्हारी इस नौकरी की?

किसी को नहीं चाहिए तुम्हारे पचीस रूबल, खुद तुम्हें भी। शादी करो, ढंग से घर बसाकर रहो—मैं खुद दूँगा तुम्हें पचास रूबल हर महीने...

अकुलीना इवानोव्ना **(बूढ़े की बातचीत के दौरान घबराकर कुर्सी पर दायें-बायें होती रहती है, कई बार कुछ कहने की कोशिश करती है, मगर कह नहीं पाती। आखिर सस्नेह पूछती है)** : प्योत्र के पिता! क्या थोड़ा पनीर-केक खाना पसन्द करोगे? दोपहर के खाने के समय कुछ बचा रह गया है...

बेस्सेमेनोव (उसकी ओर मुड़कर पहले उसे गुस्से से घूरता है, फिर मुस्कराकर कहता है) : ले आओ, ले आओ पनीर-केक... ओहो!...

(अकुलीना इवानोव्ना अलमारी की तरफ़ बढ़ती है। बेस्सेमेनोव तत्याना से कहता है)

देखा तुमने! माँ तो कुत्तों से अपने बच्चों की रक्षा करनेवाली बत्तख़ की तरह मुझसे तुम लोगों को बचाती रहती है... डरती रहती है कि कहीं मैं कोई कड़ुवा शब्द कहकर तुम लोगों का दिल न दुखा दूँ... अरे चिड़ीमार! आ धमके इतने दिनों बाद!

पेर्चीखिन (दरवाज़े में दिखाई देता है। पोल्या चुपचाप उसके पीछे-पीछे अन्दर आती है) : इस घर का भला हो, घर के बूढ़े मालिक का भला हो, उसकी सुन्दर बीवी का भला हो, उनके अच्छे बच्चों का भला हो! उन पर सदा भगवान की कृपादृष्टि बनी रहे!

बेस्सेमेनोव : तो तुम आज फिर पी आये हो?

पेर्चीखिन : ग़म ग़लत करने के लिए!

बेस्सेमेनोव : किस बात का ग़म?

पेर्चीखिन (सभी का अभिवादन करते हुए अपनी बात कहता है) : मैना को बेचने का ग़म... क्या सुरीला गाती थी! तीन साल तक अपने पास रखा, मगर आज जाकर बेच आया! अपनी इसी कमीनी हरकत से दुखी होकर अपने को जाम में डुबा दिया। उसके जाने का बड़ा अफ़सोस है... उसका आदी हो गया था... उसे प्यार करता था...

(पोल्या मुस्कराती हुई सिर हिलाकर उसकी बात का समर्थन करती है)

बेस्सेमेनोव : अगर ऐसी बात थी तो उसे बेचा क्यों?

पेर्चीखिन (कुर्सियों का सहारा लेकर मेज़ के गिर्द घूमते हुए) : अच्छे दाम मिल गया है, इसलिए...

अकुलीना इवानोव्ना : तुम्हारे लिए तो पैसा हाथ का मैल ही है न? थोड़ा इधर-उधर उड़ा [illegible]...

पेर्चीखिन (बैठते हुए) : हाँ, यह सच है, मेरे हाथ में पैसा टिकता नहीं... यह सच है!

बेस्सेमेनोव : तब उसे बेचने की क्या ज़रूरत थी?...

पेर्चीखिन : बेचने की ज़रूरत थी। वह अन्धी होने लगी थी... जल्द ही मर जाती...

बेस्सेमेनोव (व्यंग्य से मुस्कराकर) : तब तो तुम पूरी तरह से बुद्धू नहीं हो...

पेर्चीखिन : क्या मैंने अक़्ल से काम लेते हुए ऐसा किया है? अजी नहीं, यह तो मेरे स्वभाव की नीचता है...

(प्योत्र और तेतेरेव प्रवेश करते हैं)

तत्याना : नील कहाँ है?

प्योत्र : शीश्किन के साथ रिहर्सल के लिए गया है।

बेस्सेमेनोव : नाटक कहाँ खेला जायेगा?

प्योत्र : घुड़दौड़ के मैदान में। फ़ौजियों के सामने।

पेर्चीखिन (तेतेरेव से) : भगवान के भोंपू—तुम्हें मेरा नमस्कार! कहो, चिड़ियाँ पकड़ने चलोगे?

तेतेरेव : चला जा सकता है। बोलो, कब?

पेर्चीखिन : चाहो, तो कल ही।

तेतेरेव : नहीं, कल नहीं हो सकता। कल मुझे एक मातमी जुलूस में भजन गाने के लिए जाना है...

पेर्चीखिन : तो दोपहर की प्रार्थना के पहले चलो?

तेतेरेव : हाँ, यह ठीक है। मुझे बुला लेना। अकुलीना इवानोव्ना! दोपहर के खाने में से कुछ बचा या नहीं? यही, कोई दलिया-वलिया या इसी क़िस्म की कोई दूसरी चीज़?...

अकुलीना इवानोव्ना : हाँ, भैया, कुछ बच तो गया था। पोल्या, ज़रा ले आओ!...

(पोल्या जाती है)

तेतेरेव : बहुत, बहुत धन्यवाद। जैसा कि आपको मालूम है, पहले एक जनाज़े और फिर शादी की वजह से मेरा दोपहर का खाना गोल हो गया...

अकुलीना इवानोव्ना : मुझे मालूम है, मालूम है...

(प्योत्र चाय का गिलास उठाकर मेहराब के पीछे वाले छोटे-से कमरे में जाता है। पिता की पैनी और तेतेरेव की शत्रुतापूर्ण दृष्टि उसका पीछा करती है। थोड़ी

देर तक चुप्पी रहती है। सब खाते-पीते रहते हैं)

बेस्सेमेनोव : इस महीने तो तुम्हारी खूब चाँदी है, तेरेन्ती ख़ीसान्फ़ोविच! हर रोज़ कोई न कोई चल बसता है।

तेतेरेव : हाँ, क़िस्मत खूब साथ दे रही है... कुछ बुरा नहीं।

बेस्सेमेनोव : और शादियों का धूम-धड़ाका भी ज़ोरों पर है...

तेतेरेव : हाँ, धड़ाधड़ शादियाँ हो रही हैं...

बेस्सेमेनोव : कुछ पैसे बचाकर तुम भी एक से दो हो जाओ।

तेतेरेव : मन नहीं चाहता...

(तत्याना अपने भाई के पास चली जाती है। दोनों धीमे-धीमे बातचीत करते हैं)

पेर्चीख़िन : बिल्कुल ठीक! यह ग़लती मत करना। शादी हमारे जैसों के बस की बात नहीं है। चिड़ियाँ पकड़ना कहीं ज़्यादा अच्छा होगा...

तेतेरेव : सोलह आने सही...

पेर्चीख़िन : भई वाह! क्या बढ़िया काम है चिड़ियाँ पकड़ना! जैसे ही पहली बर्फ़ गिरती है, धरती चमचम कर उठती है—ईस्टर में सजने-धजनेवाले पादरी की तरह!... हर चीज़ निखर आती है, चमक उठती है, सब तरफ़ प्यारी नीरवता छा जाती है... और फिर अगर धूप निकल आये, तब तो क्या कहने? मन नाच उठता है ख़ुशी से दीवाना होकर! वृक्षों पर पतझर के सुनहरे पत्तों का सोना अभी तक चमकता होता है और बर्फ़ से ढकी टहनियों पर चाँदी दमकती है... और ऐसी सुन्दर दुनिया में तभी एक आवाज़ सुनाई पड़ती है—फर-फर! फर-फर! धुले हुए आकाश के किसी कोने से लाल चिड़ियों का एक झुण्ड उड़ता हुआ सामने आता है और वे बैठ जाती हैं डालों पर और लगती हैं पोस्त के फूलों जैसी! चूँ-चूँ! चूँ-चूँ! प्यारी-प्यारी, मोटी-मोटी चिड़ियाँ जनरलों की तरह बड़ी शान से इधर-उधर फुदकती हैं, चहकती हैं, क्या अनुपम दृश्य होता है! मन करता है कि हम भी चिड़ियाँ बन जायें, उनके साथ बर्फ़ पर फुदकें। अहा!.. सचमुच!

बेस्सेमेनोव : ये लाल चिड़ियाँ बड़ी बुद्धू होती हैं।

पेर्चीख़िन : मैं ख़ुद भी बुद्धू हूँ...

तेतेरेव : वाह, तुमने ख़ूब बढ़िया तस्वीर खींची है...

अकुलीना इवानोव्ना (पेर्चीख़िन से) : तुम्हारा मन तो बच्चे जैसा है...

पेर्चीख़िन : चिड़ियाँ पकड़ना मुझे बहुत अच्छा लगता है! गानेवाली चिड़ियों से बढ़कर भी दुनिया में कोई प्यारी चीज़ हो सकती है?

बेस्सेमेनोव : मगर क्या यह नहीं जानते कि चिड़ियाँ पकड़ना पाप है?

पेर्चीख़िन : जानता हूँ। लेकिन अगर मैं इस काम को प्यार करता हूँ, तो? फिर इस काम के अलावा मैं और कुछ करना भी नहीं जानता। मेरे ख़्याल में प्यार से करने पर हर काम अच्छा हो जाता है...

बेस्सेमेनोव : तुम्हारा मतलब है—हर काम?

पेर्चीख़िन : हाँ, हर काम!

बेस्सेमेनोव : अगर किसी को परायी चीज़ें उठाकर जेब में रखना पसन्द हो, तो?

पेर्चीख़िन : यह तो काम नहीं, चोरी करना होगा।

बेस्सेमेनोव : हुँह... शायद ऐसा ही हो...

अकुलीना इवानोव्ना (जम्हाई लेते हुए) : ओ-हो-हो! बड़ी ऊब महसूस हो रही है... शामें हमेशा ही बड़ी ऊबभरी होती हैं... तेरेन्ती ख़ीसान्फ़ोविच, ज़रा अपनी गिटार ही उठा लाओ। कुछ गाना-बजाना ही हो जाये...

तेतेरेव (शान्ति से) : आदरणीया अकुलीना इवानोव्ना, आपके यहाँ रहने की बात तय करते वक़्त मैंने आपका मन बहलाने की ज़िम्मेदारी अपने ऊपर नहीं ली थी...

अकुलीना इवानोव्ना (बात न समझते हुए) : क्या कहा तुमने?

तेतेरेव : जो भी कहा, कहा ज़ोर से और साफ़-साफ़।

बेस्सेमेनोव (हैरान होकर, खीझ से) : तेरेन्ती, मैं तुम्हें देखता हूँ और हैरान होता हूँ। बुरा न मानना, तुम हो तो दो टके के आदमी... न किसी काम के, न काज के, मगर शान दिखाते हो रईसों जैसी। कहाँ से आयी है तुममें यह अकड़?

तेतेरेव (शान्ति से) : मैं तो इसे लेकर ही पैदा हुआ था...

बेस्सेमेनोव : तुममें यह घमण्ड है किस बात का, बताओ तो?

अकुलीना इवानोव्ना : योंही अपना दिखावा कर रहा है। ऐसे आदमी के पास घमण्ड करने को रखा ही क्या है?

तत्याना : माँ!

अकुलीना इवानोव्ना (चौंककर) : हाँ! क्या है?

(तत्याना तिरस्कार से सिर हिला देती है)

मैंने फिर कोई ऐसी बात कह दी जो मुझे न कहनी चाहिए थी?... अच्छा, अब ख़ामोश रहूँगी... तुम जानो तुम्हारा काम!

बेस्सेमेनोव (बुरा मानते हुए) : तत्याना की माँ, तुम मुँह से निकालने के पहले हर शब्द को तोल लिया करो। हम पढ़े-लिखे लोगों के बीच रहते हैं। ये अपनी पढ़ाई और ऊँची अक़्ल से हर चीज़ में मीन-मेख निकाल सकते हैं। हम तो ठहरे बूढ़े-खूसट और बेवकूफ़...

अकुलीना इवानोव्ना (शान्त करते हुए) : यह तो ठीक ही है!... ये लोग तो

बेशक... बहुत कुछ जानते हैं।

पेर्चीख़िन : भैया, सोलह आने सही कहा है तुमने। तुमने तो मज़ाक में कहा, मगर है यह सच...

बेस्सेमेनोव : मैंने यह मज़ाक में नहीं कहा...

पेर्चीख़िन : ज़रा रुको! मगर बूढ़े सचमुच बेवकूफ़ होते हैं...

बेस्सेमेनोव : ख़ासकर तुम्हें देखकर तो ऐसा ही लगता है।

पेर्चीख़िन : मैं किस गिनती में हूँ! मैं तो यह तक मानता हूँ कि अगर बूढ़े न होते तो बेवकूफ़ी का नाम-निशान ही मिट जाता... बूढ़े का सोचना और गीली लकड़ी का जलना दोनों बराबर हैं—लपट कम, धुआँ ज़्यादा...

तेतेरेव (मुस्कुराते हुए) : बिल्कुल ठीक...

(पोल्या पिता की ओर स्नेहपूर्वक देखकर उसका कन्धा थपथपाती है)

बेस्सेमेनाव (झल्लाकर) : हुँह! तो अपनी बकवास जारी रखो...

(प्योत्र और तत्याना बातचीत बन्द कर देते हैं और मुस्कराते हुए पेर्चीख़िन को देखते हैं)

पेर्चीख़िन (उत्साहित होकर) : मुसीबत यह है कि बूढ़े बहुत ज़िद्दी होते हैं! वे जानते हैं कि ग़लती कर रहे हैं, ये महसूस करते हैं कि उनके पल्ले कुछ नहीं पड़ रहा, मगर मानेंगे कभी नहीं। घमण्ड जो होता है! वे सोचते हैं—"हमने इतनी लम्बी ज़िन्दगी देखी है, धूप में बाल सफ़ेद नहीं किये—चालीस तो पतलून फाड़े हैं पहनकर, और अब हमारे दिमाग़ों को जंग लग गया! यह कैसे हो सकता है?" यह मानते हुए उनके दिल को ठेस लगती है। इसलिए वे अपनी ही रट लगाये जाते हैं— "हम बूढ़े हैं, हमने ज़िन्दगी देखी है, हमारी बात ही सही है।" मगर इससे हासिल क्या होता है? उनके दिमाग़ सठिया चुके हैं... लेकिन जवानों की अक़्ल होती है तेज़ और ताज़गी लिये हुए...

बेस्सेमेनोव (कड़ाई से) : ख़ैर, तुमने बहुत बकवास कर ली... तुम मुझे यह बताओ—अगर हम बेवकूफ़ हैं, तो हमें अक़्ल सिखानी चाहिए न?

पेर्चीखिन : इसमें क्या तुक है? चट्टान पर गोलियाँ चलाना तो उन्हें बरबाद करना है...

बेस्सेमेनोव : अच्छा, तो सुनो, बीच में मत टोकना! उम्र में मैं तुमसे बड़ा हूँ। तुम जिन्हें तेज और ताजा दिमागवाले मानते हो, वे हम बूढ़ों से कन्नी क्यों काटते हैं, कोनों में छिप-छिपकर मुँह क्यों बनाते हैं? हमसे बात करते हुए कतराते क्यों हैं?

मेरे इस सवाल पर ग़ौर करो... मैं भी अलग जाकर इस पर सोचूँगा... क्योंकि इतना बेवकूफ़ हूँ कि आप लोगों के साथ बैठने लायक़ नहीं हूँ... (ज़ोर से कुर्सी पीछे हटाता है। कमरे से जाते हुए दरवाज़े में रुककर कहता है) मेरी पढ़ी-लिखी औलाद...

(ख़ामोशी)

पेर्चीख़िन (प्योत्र और तत्याना से) : अरे बच्चो! क्यों बूढ़े का दिल दुखाया करते हो?

पोल्या (मुस्कराते हुए) : यह तो तुमने दुखाया है उसका दिल...

पेर्चीखिन : मैंने? पूरी ज़िन्दगी में एक बार भी कभी किसी का दिल नहीं दुखाया...

अकुलीना इवानोव्ना : हे भगवान! जाने हम सब को हो क्या गया है?... किसलिए बूढ़े का दिल दुखाया है? तुम लोग हर वक़्त मुँह फुलाये रहते हो, बड़बड़ाया करते हो... मगर वह बूढ़ा आदमी है। उसे चाहिए चैन... तुम्हें उसकी इज़्ज़त करनी चाहिए... आख़िर वह तुम्हारा बाप है... मैं जाती हूँ उसके पास। पोल्या, तुम चाय के बरतन धो डालो...

तत्याना (मेज़ के पास जाकर) : मैं पूछती हूँ कि पिता जी हमसे नाराज़ किसलिए हुए हैं?

अकुलीना इवानोव्ना (दरवाज़े में रुककर) : तुम और ज़्यादा अपने बाप से दूर भागा करो... चतुर लड़की!

(जब पोल्या बरतन धोती है तो तेतेरेव अपनी कुहनियाँ मेज़ पर टिकाकर उसे उदास नज़रों से देखता है। पेर्चीख़िन प्योत्र के पास जाकर मेज़ के निकट बैठ जाता है। तत्याना धीरे से अपने कमरे में जाती है)

पोल्या (तेतेरेव से) : आप मुझे इस तरह... ऐसे क्यों घूर रहे हैं?

तेतेरेव : योंही...

पेर्चीख़िन : क्या सोच रहे हो, प्योत्र?

प्योत्र : यहाँ से कहाँ चला जाऊँ...

पेर्चीख़िन : बहुत दिनों से मैं तुमसे यह पूछना चाहता था कि "ज़मीनदोज़ नाले-नालियों" का क्या मतलब है?

प्योत्र : तुम्हें इससे क्या लेना-देना है? तुम्हें इस तरह बताने के लिए कि तुम्हारी समझ में आ जाए, बहुत वक़्त लगेगा... और यह बड़ा ऊब का काम है...

पेर्चीख़िन : तुम ख़ुद तो यह जानते हो?

प्योत्र : हाँ जानता हूँ...

पेर्चीख़िन (सन्देह से उसके चेहरे को देखते हुए) : हुँह...

पोल्या : न जाने नील आज अभी तक क्यों नहीं आया...

तेतेरेव : आपकी आँखें कितनी प्यारी हैं!

पोल्या : यह तो आपने कल भी कहा था।

तेतेरेव : मैं कल फिर यही कहूँगा...

पोल्या : वह किसलिए?

तेतेरेव : यह मैं नहीं जानता... शायद आप सोचती हैं कि मैं आपसे प्रेम करने लगा हूँ?

पोल्या : हे भगवान! मैं ऐसा कुछ नहीं सोचती हूँ।

तेतेरेव : कुछ नहीं सोचतीं? अफ़सोस की बात है! आप ज़रा सोचिये...

पोल्या : किस बारे में?

तेतेरेव : चाहे इसी बारे में कि आख़िर क्यों मैं आपके पीछे पड़ा रहता हूँ। इस बात पर सोचकर मुझे जवाब दीजिए...

पोल्या : कैसे अजीब आदमी हैं आप!

तेतेरेव : यह मैं जानता हूँ... आप पहले भी यह कह चुकी हैं। मैं भी दोहराता हूँ—आप यहाँ से चली जायें! आपके लिए इस घर में रहना अच्छा नहीं... चली जाइये!

प्योत्र : क्या प्रेम-प्रदर्शन हो रहा है? शायद मुझे यहाँ से चलते-फिरते नज़र आना चाहिए?

तेतेरेव : परेशान होने की ज़रूरत नहीं! मैं बेजान चीज़ों में आपकी गिनती करता हूँ...

प्योत्र : बात कुछ बनी नहीं...

पोल्या (तेतेरेव से) : कैसे मुँहफट हैं आप!

(तेतेरेव वहाँ से हट जाता है। वह ध्यान से प्योत्र और पेर्चीख़िन की बातें सुनता है)

तत्याना (अपने कमरे से बाहर आती है। वह शॉल लपेटे हुए है, पियानो की कुर्सी पर बैठकर स्वर-लिपियों को उलटती-पलटती है) : नील अभी तक नहीं आया?

पोल्या : नहीं...

पेर्चीख़िन : बड़ी उदासी है... हाँ प्योत्र, मैं तुमसे एक और बात पूछना चाहता था। कुछ दिन पहले मैंने अखबार में पढ़ा था कि अंग्रेज़ों ने एक उड़नेवाला जहाज़ बनाया है। बिल्कुल जहाज़ जैसा। मगर उसमें बैठकर कोई बटन दबा दिया जाये तो फुर से वह पंछी की भाँति आकाश में जा पहुँचता है—बादलों के पास और जाने आदमी को कहाँ पहुँचा देता है... कहते हैं, कि बहुत-से अंग्रेज़ इसी तरह से ग़ायब हो गये हैं। क्या यह सच है, प्योत्र?

प्योत्र : सब बकवास है!

पेर्चीख़िन : मगर यह तो अख़बार में था...

प्योत्र : अख़बारों में ऐसी बहुत-सी बकवास छपती रहती हैं।

पेर्चीख़िन : सच?

(तत्याना कोई दर्दभरी धुन धीरे-धीरे बजाती है)

प्योत्र (चिढ़कर) : हाँ, बिल्कुल सच!

पेर्चीख़िन : भई, बिगड़ो नहीं। हम पुराने ढर्रे के लोगों को तुम जवान लोग न जाने क्यों इतनी नीची नज़र से देखते हो? बात करना भी पसन्द नहीं करते। यह अच्छी बात नहीं है!

प्योत्र : ख़ैर, आगे!...

पेर्चीख़िन : आगे यह कि अब मुझे यहाँ से नौ दो ग्यारह हो जाना चाहिए। मुझसे तंग आ गये लगते हो। पोल्या, क्या तुम जल्दी ही घर जा रही हो?

पोल्या : बाक़ी काम निबटाकर... **(कमरे से बाहर जाती है। तेतेरेव उसे देखता रहता है)**

पेर्चीख़िन : प्योत्र, तुम वे दिन भूल गये जब हम इकट्ठे चिड़ियाँ पकड़ा करते थे। उन दिनों तुम मुझे प्यार करते थे...

प्योत्र : मैं तो अब भी...

पेर्चीख़िन : वह तो देख रहा हूँ, महसूस कर रहा हूँ कैसे अब तुम मुझे प्यार करते हो!

प्योत्र : उन दिनों मुझे मीठी रोटी और मिठाई बहुत पसन्द थी। मगर अब मैं उन्हें छूता भी नहीं हूँ...

पेर्चीख़िन : समझ गया... कहो तेरेन्ती! चलते हो बियर पीने?

तेतेरेव : मूड नहीं है...

पेर्चीख़िन : तो मैं अकेला ही चल दिया। शराबख़ाने में ख़ूब मज़ा रहता है! वहाँ कोई अपनी शान नहीं दिखाता। यहाँ तो ऊब से दम निकल जाये। तुम लोगों के लिए यह कोई तारीफ़ की बात नहीं है। तुम न कुछ करते हो, न धरते हो... किसी चीज़ में तुम्हारी दिलचस्पी नहीं है... ताश की एकाध बाजी ही हो जाये? हम हैं भी चार आदमी।

(तेतेरेव पेर्चीखिन को देखकर मुस्कराता है)

नहीं खेलना चाहते? जैसी मर्ज़ी... अच्छा, तो विदा! **(तेतेरेव के पास जाकर शराब पीने के लिए चलने का संकेत करता है यानी गर्दन पर चुटकी मारता है)** चलते हो?

तेतेरेव : नहीं...

(पेर्चीखिन निराशा से हाथ झटककर बाहर जाता है। कुछ देर चुप्पी। पियानो पर तत्याना द्वारा बजायी जानेवाली धुन साफ़ सुनाई देने लगती है। प्योत्र सोफ़े पर लेटा हुआ ध्यान से यह धुन सुनता है और उसके साथ सीटी बजाता है। तेतेरेव कुर्सी से उठकर कमरे में चक्कर काटने लगता है। ड्योढ़ी से बालटी या समोवार की नली के गिरने की ज़ोरदार आवाज़ सुनाई देती है। स्तेपानीदा यह कहती सुनी जाती है—"किधर जा रही है कमबख़्त...")

तत्याना (पियानो बजाना जारी रखते हुए) : इतनी देर हो गयी, नील क्यों नहीं आता...

प्योत्र : कोई भी तो नहीं आता...

तत्याना : तुम येलेना का इन्तज़ार कर रहे हो?

प्योत्र : किसी का भी सही...

तेतेरेव : कोई नहीं आयेगा आप लोगों के पास...

तत्याना : आप हमेशा ऐसे जले-भुने ही रहते हैं...

तेतेरेव : कोई नहीं आयेगा आपके पास, क्योंकि आपसे किसी को मिलेगा ही क्या...

प्योत्र : और यह है महात्मा तेरेन्ती की आकाशवाणी...

तेतेरेव (ज़ोर देते हुए) : आप लोगों ने ध्यान दिया या नहीं कि उस शराबी, उस पुराने ज़माने के आदमी, उस चिड़ीमार के शरीर और आत्मा-दोनों में ज़िन्दगी की धड़कन है, जबकि आप-आप दोनो, जो अभी ज़िन्दगी की दहलीज़ पर खड़े हैं, अधमरे तो ज़रूर हो चुके हैं?

प्योत्र : और आप? अपने बारे में आपकी क्या राय है?

तत्याना (पियानो की कुर्सी से उठते हुए) : महानुभवो, रहने दीजिये इस बहस को! बार-बार वही बात! आप लोग पहले भी यह बहस कर चुके हैं...

प्योत्र : मुझे आपका यह अन्दाज़ पसन्द है, तेरेन्ती ख़्रीसान्फ़ोविच... आपकी भूमिका भी पसन्द है—हम सब के बारे में फ़ैसले सुनाने की आपकी भूमिका ... मगर मैं यह समझना चाहता हूँ कि आपने यह भूमिका क्यों अपना रखी है? आप तो हमेशा ऐसे बात करते हैं मानो तारीफ़ों के पुल बाँधनेवाले मरसिये पढ़ रहे हों...

तेतेरेव : ऐसे मरसिये नहीं होते...

प्योत्र : ख़ैर, यह कोई बात नहीं। मैं यह कहना चाहता हूँ कि आप हमें पसन्द नहीं करते...

तेतेरेव : बिल्कुल पसन्द नहीं करता...

प्योत्र : साफ़गोई के लिए शुक्रिया।

(पोल्या प्रवेश करती है)

तेतेरेव (व्यंग्यपूर्वक) : शुक्रिया तो शुक्रिया!

पोल्या : किस बात का शुक्रिया अदा किया जा रहा है?

तत्याना : गुस्ताख़ी का...

तेतेरेव : सचाई का...

पोल्या : मैं थियेटर जाना चाहती हूँ... कोई मेरा साथ देगा?

तेतेरेव : मैं...

प्योत्र : आज खेल कौनसा है?

पोल्या : 'दूसरी जवानी'*... चलिये, तत्याना वसील्येव्ना?

तत्याना : नहीं... इस जाड़े में तो मैं शायद ही थियेटर जाऊँ। गोलियों की ठाँय-ठाँय, शोर-गुल और आहों-सिसकियोंवाले नाटकों से मुझे झल्लाहट होती है।

(तेतेरेव पियानो के एक परदे पर ज़ोर से अपनी उँगली मारता है। उसमें से भारी और दर्दभरी आवाज़ निकलती है)

यह सब झूठा और बनावटी होता है! ज़िन्दगी शोर-गुल, चीख़-चिल्लाहट... आँसू और आहों के बिना... चुपके-चुपके... अनजाने ही लोगों को तोड़ती रहती है...

प्योत्र (उदासी से) : वहाँ प्यार की पीड़ा का नाटक किया जाता है, मगर कर्तव्य और भावना की चक्की के पाटों के बीच पिस रही इंसान की आत्मा की तरफ़ कोई भी ध्यान नहीं देता...

(तेतेरेव मुस्कराता हुआ पियानो के मन्द स्वरों को ज़ोर से बजाता जाता है)

---

* 19वीं शताब्दी के अन्तिम दशक का लोकप्रिय नाटक, जिसके नाटककार थे प. व. नेवेज़िन (1841-1919)।—सं.

पोल्या (झेंपभरी मुस्कान के साथ) : मैं तो थियेटर की दीवानी, बेहद दीवानी हूँ... उसे ही ले लो—उस डोन सेज़ार डे बज़ान* को, उस स्पेनी रईस को... वह तो बस कमाल ही है! असली नायक है!...

तेतेरेव : मैं उसके जैसा हूँ?

पोल्या : ओह, यह भी खूब रही! बिल्कुल नहीं, ज़रा भी नहीं!...

तेतेरेव (मुस्कराते हुए) : हाय...बड़े अफ़सोस की बात है!

तत्याना : अभिनेता जब मंच पर प्रेम-प्रदर्शन करता है तो मुझे झल्लाहट होती है, मेरे अन्दर आग जलने लगती है...हमारे जीवन में तो ऐसा कभी नहीं होता—कभी नहीं होता!...

पोल्या : ख़ैर, मैं तो जा रहीं हूँ... चल रहे हैं, तेरेन्ती ख़्रीसान्फ़ोविच?

तेतेरेव (पियानो बजाना बन्द करके) : नहीं। मैं आपके साथ नहीं जाऊँगा क्योंकि आप मुझमें स्पेनी रईस जैसा तो कुछ महसूस ही नहीं करतीं...

(पोल्या हँसती हुई बाहर जाती है)

प्योत्र (उसे जाते हुए देखकर) : यह स्पेनी रईस पर क्यों लट्टू है?

तेतेरेव : इसलिए कि वह उसमें एक स्वस्थ इंसान को अनुभव करती है।

तत्याना : उसे उसकी पोशाक बढ़िया लगती है...

तेतेरेव : उसकी खुशमिज़ाजी भी...खुशमिज़ाज लोग हमेशा भले होते हैं... नीच-कमीनों में भूले-भटके ही खुशमिज़ाज देखे जाते हैं।

प्योत्र : इस नज़रिये से तो आपको ही सबसे बुरा आदमी होना चाहिए...

तेतेरेव (फिर पियानो के मन्द स्वरों को छेड़ते हुए) : मैं तो सिर्फ़ पियक्कड़ हूँ। जानते हैं, हमारे रूस में इतने ज़्यादा शराबी क्यों हैं? क्योंकि शराबी की ज़िन्दगी आसान हो जाती है। हम रूसी शराबियों को प्यार करते हैं। नयी राह दिखानेवालों और दिलेरों से हम नफ़रत, मगर शराबियों से मुहब्बत करते हैं क्योंकि किसी बड़ी और अच्छी चीज़ के मुक़ाबले में मामूली और घटिया चीज़ को प्यार करना कहीं अधिक आसान होता है।

प्योत्र (इधर-उधर टहलते हुए) : हमारे रूस में... हमारे रूस में... कितना अजीब लगता है यह सुनना क्या रूस सचमुच हमारा है? मेरा है? आपका है? हम—ये कौन हैं? क्या हैं—हम?

तेतेरेव (गाते हुए) : "हम हैं आ... आज़ाद पंछी..."**

तत्याना : भगवान के लिए यह पियानो को ढपढपाना बन्द कर दीजिये... मातमी

* विक्टर ह्यूगो के नाटक 'री ब्लाज़ का नायक। -सं.

** पुश्किन की 'क़ैदी' कविता की एक पंक्ति। -सं.

घण्टियाँ-सी बजती लगती हैं।

तेतेरेव (पियानो बजाना जारी रखते हुए) : मूड का साथ दे रहा हूँ...

(तत्याना खीझकर ड्योढ़ी में चली जाती है)

प्योत्र (सोच में खोया-सा) : हाँ, आप... इस ढपढप को सचमुच बन्द कर दीजिये- तबीयत परेशान होने लगी है... मुझे लगता है कि जब कोई फ़्रासीसी या अंग्रेज़, "फ़्रांस" या "इंग्लैण्ड" कहता है तो उसका कुछ मतलब होता है... कोई ख़ास, ठोस मतलब... जो उसकी समझ में आता है... मगर जब मैं "रूस" कहता हूँ तो मुझे यह शब्द बेमानी-सा लगता है। मैं इसका कोई साफ़-साफ़ और सही मतलब नहीं समझ पाता।

(ख़ामोशी। तेतेरेव स्वर छेड़ता रहता है)

बहुत-से ऐसे शब्द हैं जिन्हे हम सिर्फ़ आदत के तौर पर बोलते रहते हैं और यह नहीं सोचते कि उनकी तह में क्या अर्थ छिपा है...मिसाल के तौर पर..ज़िन्दगी... मेरी ज़िन्दगी... इन दो शब्दों में क्या अर्थ छिपा हुआ है?... **(वह चुप होकर इधर-उधर टहलता है)**

(तेतेरेव स्वर छेड़ता रहता है। कमरा करुण संगीत से भर जाता है। वह ऐसी मुस्कान से प्योत्र को देखता है जो उसके चेहरे पर जमकर रह गयी है)

शैतान ही मुझे घसीट ले गया छात्र-आन्दोलन में! मैं यूनिवर्सिटी में पढ़ने गया था... यही कर भी रहा था... भगवान के लिए यह ढपढप बन्द कर दीजिये... मैंने रोमन क़ानून की पढ़ाई में कभी किसी शक्ति की बाधा अनुभव नहीं की...ईमान की बात है, कभी ऐसी बाधा अनुभव नहीं की! मगर मैंने साथियों कि भावना की शक्ति को अनुभव किया... और मैं उसके सामने झुक गया। मेरी ज़िन्दगी के दो साल बरबाद हो गये... हाँ! यह ज़ुल्म है! मुझ पर ज़ुल्म किया गया है। ठीक है न? सोचा था—पढ़ाई ख़त्म करूँगा, वकील बन जाऊँगा, काम करूँगा... पढ़ूँगा, ज़िन्दगी को देखूँ-समझूँगा... ढंग से ज़िन्दगी बिताऊँगा!...

तेतेरेव (व्यंग्य से उसकी बात आगे बढ़ाते हुए) : माँ-बाप के दिल को चैन दूँगा, धर्म और सरकार का भला करूँगा, समाज का एक विनम्र सेवक बनूँगा...

प्योत्र : समाज? उससे तो मुझे सख़्त नफ़रत है। वह हर व्यक्ति से अधिकाधिक की माँग करता है, लेकिन उसे ढंग से और बेरोक-टोक आगे नहीं बढ़ने देता... मेरे साथियों के रूप में समाज ने मुझसे पुकार-कर कहा—"हर इंसान को सबसे पहले

अच्छा नागरिक होना चाहिए!" मैं नागरिक बना—बुरा हो उनका!... मैं... ऐसा नहीं चाहता... समाज की माँगों के सामने झुकने को मैं मजबूर नहीं हूँ! मैं एक व्यक्ति हूँ! और व्यक्ति को आज़ाद होना चाहिए... मैं कहता हूँ कि अपनी यह ढपढप बन्द कर दीजिये...

तेतेरेव : मैं तो आपकी संगत कर रहा हूँ, कूपमण्डूक रईसज़ादे... जिसने आध घण्टे के लिए ईमानदार नागरिक बनने की भूल की। ठीक है न?

(ड्योढ़ी में शोर सुनाई देता है)

प्योत्र (खीझकर) : मुझ पर फब्तियाँ कसने की कोशिश नहीं करें!

(प्योत्र की तरफ़ चुनौती के ढंग से देखते हुए तेतेरेव पियानो बजाता जाता है। नील, येलेना, शीश्किन, त्स्वेतायेवा और इनके कुछ पीछे तत्याना आती है)

येलेना : ये मातमी घण्टियाँ किसलिए बजायी जा रही हैं? नमस्कार, राक्षसराज! नमस्कार, लगभग वकील साहब! आप लोग यहाँ क्या करते रहे हैं?

प्योत्र (भौं सिकोड़कर) : बकवास...

तेतेरेव : मैं वक़्त से पहले मर जानेवाले की मौत की घण्टियाँ बजा रहा हूँ।

नील (तेतेरेव से) : सुनो! मेरा एक काम कर दो! **(तेतेरेव के कान में कुछ फुसफुसाता है। तेतेरेव हामी भरता है)**

त्स्वेतायेवा : भई, आज तो कमाल की रिहर्सल हुई!

येलेना : वकील साहब! काश, आपने देखा होता कि लेफ़्टीनेन्ट बीकोव आज कैसे मुझ पर डोरे डालने की कोशिश करता रहा!

शीश्किन : बीकोव तो बिल्कुल गधा है...

प्योत्र : आपको यह वहम कैसे हो गया कि आप पर कौन और कैसे डोरे डालता है, मुझे इसमें दिलचस्पी है?

येलेना : अरे, आपका तो मूड बिगड़ा हुआ है?

त्स्वेतायेवा : प्योत्र वसील्येविच का तो हमेशा ही मूड बिगड़ा रहता है।

शीश्किन : यह तो आम बात है उसके मूड की...

येलेना : तत्याना, क्या तुम भी सदा की तरह उदास हो , पतझर की रात की तरह?

तत्याना : हाँ, सदा की तरह...

येलेना : लेकिन मैं तो बेहद खुश हूँ! बताइये तो, मैं क्यों हमेशा खुश रहती हूँ!

त्स्वेतायेवा : और मैं भी!

शीश्किन : मैं हमेशा तो नहीं, लेकिन...

तत्याना : हर वक़्त...

येलेना : यह तुमने चुटकी लेने की कोशिश की है न, तत्याना? तुम्हारे लिए यह अच्छा है! राक्षसराज! यह बताइये, मैं हमेशा इतनी खुश क्यों रहती हूँ?

तेतेरेव : ओ चंचलता की जीती-जागती मूरत!

येलेना : क्या कहा? ख़ैर, कोई बात नहीं! जब आप अगली बार आयेंगे मुझे अपना प्रेम जताने, तो मैं आपको आपके ये शब्द याद दिलाऊँगी!

नील : मुझे तो भूख लगी है... थोड़ी देर में ड्यूटी पर जाना होगा...

त्स्वेतायेवा : रात भर की ड्यूटी पर? बेचारा!

नील : रात ही नहीं, पूरे चौबीस घण्टे की ड्यूटी पर... रसोईघर में जाकर स्तेपानीदा को सलाम बोलता हूँ...

तत्याना : मैं उससे कह देती हूँ कि वह तुम्हें खाना खिला दे... **(नील के साथ बाहर जाती है)**

तेतेरेव (येलेना से) : इतना तो बताइये, सुन्दरी, क्या मुझे भी आपके प्रेम-पाश में बँधना होगा?

येलेना : हाँ, हाँ, बेशर्म आदमी! हाँ, रोनी सूरतवाले राक्षसराज! हाँ! हाँ!

तेतेरेव (येलेना से पीछे हटते हुए) : तो मैं बँध जाऊँगा प्रेम-पाश में... मेरे लिए यह मुश्किल काम नहीं है... कभी मैंने दो जवान लड़कियों और एक शादीशुदा औरत से एकसाथ ही प्रेम किया था...

येलेना (उसकी तरफ़ बढ़ती जाती है) : तो नतीजा क्या निकला?

तेतेरेव : कुछ भी नहीं...

येलेना (प्योत्र की ओर आँखों से संकेत करते हुए धीरे से) : क्या आज फिर तुम दोनों में नोक-झोंक हुई है?

(तेतेरेव हँसता है। वे धीरे-धीरे बातचीत करते हैं)

शीश्किन (प्योत्र से) : सुनो भाई, क्या तीन रोज़ के लिए एक रूबल उधार दे सकते हो? मेरे बूट फट गये हैं...

प्योत्र : यह लो...कुल सात रूबल हो गये तुम्हारे सिर...

शीश्किन : ठीक है...

त्स्वेतायेवा : प्योत्र वसील्येविच, आप हमारे नाटकों में हिस्सा क्यों नहीं लेते?

प्योत्र : मैं अभिनय नहीं कर सकता...

शीश्किन : हमें भी कहाँ आता अभिनय करना?

त्स्वेतायेवा : और कुछ नहीं, तो रिहर्सलों में ही आ जाया करें। ये फ़ौजी तो बहुत

प्यारे लोग हैं! एक का नाम है शीर्कोव। ऐसा दिलचस्प आदमी है कि बयान से बाहर! बड़ा प्यारा और बेहद मासूम। मुस्कराता है तो छुईमुई-सा, घबराया-सा... और है एकदम बुद्धू...

प्योत्र (येलेना को कनखियों से देखते हुए) : बुद्धुओं का दिलचस्प होना मेरी समझ के परे की बात है।

शीश्किन : मगर वहाँ सिर्फ़ शीर्कोव ही तो नहीं है...

प्योत्र : मानता हूँ कि वहाँ उनकी पूरी फौज है।

त्स्वेतायेवा : ऐसी बातें भला कोई कैसे कह सकता है? समझ नहीं पाती—यह क्या अन्दाज़ है आपका? क्या यही है रईसी की शान?

तेतेरेव (अचानक ऊँची आवाज़ में) : मैं दूसरों पर तरस खाना नहीं जानता...

येलेना : शी... शी!...

प्योत्र : जैसा कि आप लोग जानते हैं, मैं रईस नहीं, टुटपुँजिया हूँ...

शीश्किन : इसी से तो आम लोगों के प्रति तुम्हारे रवैया को समझना और भी मुश्किल हो जाता है...

तेतेरेव : मुझ पर तो कभी किसी ने तरस नहीं खाया...

येलेना (धीमे से) : मगर क्या आप नहीं जानते कि बुराई का बदला भलाई से देना चाहिए?

तेतेरेव : मेरे पास देने को कुछ है ही नहीं...

येलेना : ओह, धीरे बोलिये!

प्योत्र (येलेना और तेतेरेव की बात सुनते हुए) : लेकिन मेरी समझ में नहीं आता कि आप सब आम लोगों से हमदर्दी करने का यह ढोंग किसलिए करते हैं?

त्स्वेतायेवा : हम ढोंग नहीं करते... हमारे पास जो कुछ है, उन्हें उसमें हिस्सेदार बना लेते हैं...

शीश्किन : बात इतनी ही नहीं... हमें उनकी संगत अच्छी लगती है... बनावट के बिना सीधे-सादे लोग हैं...उनमें जंगल की ताज़ा हवा जैसी ताज़गी है। हम जैसे किताबी कीड़ों को ऐसी ताज़ा हवा की ज़रूरत रहती है...

प्योत्र (गुस्से को पीकर, अपनी बात पर ज़ोर देते हुए) : आप लोग हवाई क़िलों की दुनिया में रहना पसन्द करते हैं। फौजियों के पास भी आप कुछ छिपे इरादों से जाते हैं... सच्ची बात कहने के लिए माफ़ी चाहता हूँ, हँसानेवाले, बेकार इरादे लेकर फ़ौजियों में जाकर ताज़ा हवा ढूँढ़ना—माफ़ कीजिये, यह मेरी समझ...

त्स्वेतायेवा : सिर्फ़ फ़ौजियों में ही नहीं! आप जानते हैं कि हम तो रेलवे-डिपो में भी नाटक खेलते हैं...

प्योत्र : यह तो एक ही बात है। मैं यह कहना चाहता हूँ कि अपनी... दौड़-धूप, अपने हो-हल्ले को किसी ऊँचे ध्येय का नाम देकर आप लोग अपनी आँखों में धूल झोंकते हैं। आपको विश्वास है कि आप व्यक्ति के विकास और निखार में सहायक हो रहे हैं... यह खुद को झूठी तसल्ली देनेवाली बात है—आत्म-प्रवंचना है। कल कोई अफ़सर या फ़ोरमैन आयेगा, वह तुम्हारे इस "व्यक्ति" के तोबड़े पर ज़ोर का हाथ जमायेगा, और जो कुछ आपने उसकी खोपड़ी में भरा होगा—अगर आप सचमुच कुछ भर पाये होंगे—खट से निकलकर बाहर आ गिरेगा।

त्सवेतायेवा : ऐसी बातें सुनकर तो आदमी का दिल बैठ जाता है!

शीश्किन (दुखी होकर) : हाँ... कुछ अच्छी बातें नहीं हैं ये। पहली बार मैं इन्हें नहीं सुन रहा हूँ और मुझे ये हर बार पहले से ज़्यादा बुरी लगती है... प्योत्र, कभी न कभी तुमसे खुलकर ले-दे होगी... और आख़िरी बार...

प्योत्र (रुखाई और उदासीनता से) : तुमने मेरा दम खुश्क कर दिया! लेकिन बड़ी बेसब्री से इन्तज़ार में हूँ उस दिन की...

येलेना (ज़ोर देकर) : किसलिए आप अपने को ऐसा ज़ाहिर करते हैं? आख़िर यह ऐसा क्यों चाहता है कि हम सब इसे जंगली जानवर समझें?

प्योत्र : मेरे ख़्याल में दिखावा करने के लिए।

त्सवेतायेवा : यही बात है। निरालापन दिखाने के लिए! औरतों के सामने सभी मर्द अपने को अनूठा दिखाना चाहते हैं... कुछ निराशावादी बन बैठते हैं तो कुछ शैतान... मगर वास्तव में वे होते हैं काहिल...

तेतेरेव : वाह! क्या गागर में सागर भरा है, बड़ी स्पष्टता से... बहुत खूब!

त्स्वेतायेवा : आप तो शायद अपनी तारीफ़ सुनना चाह रहे हैं? मुँह धो रखिए! बहुत अच्छी तरह से जानती हूँ मैं आप मर्दों को!

तेतेरेव : हाँ, यह तो आप मुझसे ज़्यादा अच्छी तरह जानती हैं। लेकिन क्या आप यह भी जानती हैं कि बुराई का बदला भलाई से दिया जाना चाहिए? यानी बुराई और भलाई एक ही कीमत के दो सिक्के हैं?

त्स्वेतायेवा : लीजिये, पहेलियाँ बुझवाने लगे!

शीश्किन : ज़रा रुकिये, उसे टोकिये नहीं! यह एक दिलचस्प सवाल है। तेतेरेव की बातें मुझे हमेशा बहुत अच्छी लगती हैं! वह जरूर कभी कोई सचाई की कील हमारे दिमाग में ठोंक देता है... सच तो यही है कि हममें से अधिकतर लोगों के विचार मामूली और घिसे-पिटे हैं, पुराने सिक्कों की तरह घिसे-घिसाये...

प्योत्र : तुम्हारी दरियादिली की दाद देनी ही पड़ेगी... दूसरों में अपनी खूबियाँ देखा करते हो...

शीश्किन : रहने दो, रहने दो! सच्ची बात कहनी चाहिए, भैया! छोटी-छोटी बातों में भी ईमानदार होना चाहिए! मैं तो खुलकर यह मानता हूँ कि मैंनें आज तक कभी

कोई नयी, अनोखी बात नहीं कही! लेकिन ऐसा करने को दिल बहुत चाहता है, दोस्तो!

तेतेरेव : लो, कह भी दी!

शीश्किन (जल्दी से) : सच? झूठ बोल रहे हो? कौन सी बात?

तेतेरेव : हाँ, कही है भैया! सच कही है... लेकिन कौन सी बात, इसका खुद अनुमान लगाओ।

शीश्किन : यों ही अचानक मुँह से निकल गयी होगी...

तेतेरेव : कोशिश करके कोई अनोखी बात नहीं कह सकता। मैं आज़माकर देख चुका हूँ...

येलेना : हमारे संतापक, ज़रा सुनें तो आपको क्या कहना है भलाई और बुराई के बारे में!

शीश्किन : हाँ, हाँ, हो जायें दो-चार फ़लसफ़े की बातें भी!

तेतेरेव (एक विशेष मुद्रा बनाकर खड़ा हो जाता है) : सम्मानित दोपायो! जब आप यह कहते हैं कि बुराई का बदला भलाई से देना चाहिए, तो बड़ी भूल करते हैं। बुराई तो हम माँ के पेट से अपने साथ लेकर पैदा होते हैं—इसके लिए हमें कोई क़ीमत अदा नहीं करनी पड़ती। भलाई की आपने खुद कल्पना की है और इसे अपने में पैदा करने के लिए आपको क़ीमत भी बहुत चुकानी पड़ती है। इसलिए यह बहुत मूल्यवान और ऐसी दुर्लभ चीज़ है जिससे बढ़कर सुन्दर चीज़ इस दुनिया में और कोई नहीं। तो इससे नतीजा यह निकलता है कि बुराई का बदला भलाई से देने में न तो कोई तुक है, न ही कोई लाभ। मैं आपसे कहता हूँ—सिर्फ़ भलाई का बदला ही भलाई से दिया जाना चाहिये आपको कभी उससे ज़्यादा दूसरों को नहीं देना चाहिए जितना वे आपको देते हैं ताकि उन्हें सूदख़ोरी की लत न पड़ जाये। कारण कि लालच इंसान के ख़ून में है। एक बार हक़ से ज्यादा मिलने पर वह और भी ज़्यादा की माँग करेगा। आपको उसे उसके हक़ से कम भी नहीं देना चाहिए, क्योंकि अगर आप उसे एक बार कम दे देंगे—इंसान अपने दिल को लगी ठेस कभी नहीं भूलता—तो वह आपके दिवालिया होने का ढिंढोरा पीट देगा। आप उसकी नज़रों में गिर जायेंगे, अगली बार वह आपके साथ भलाई न करके आपको सिर्फ़ भीख़ देने की कोशिश करेगा। भाइयो! भलाई के बदले में उतनी ही भलाई करने को हमेशा तैयार रहें! वह इंसान सबसे ज़्यादा नफ़रत और तरस के लायक़ है, जो अपने जैसे आदमी के साथ बराबर की भलाई न करके उसे भीख देता है! लेकिन अगर कोई आपके साथ बुराई करता है तो आप उसका कई गुना बदला चुकायें! उसे उसकी बुराई का बदला देने में बेहद दरियादिली दिखायें। रोटी का एक टुकड़ा माँगने पर अगर वह आपको पत्थर देता है तो आप उसके सिर पर पहाड़ गिरा दें! **(तेतेरेव अपनी बात को मज़ाकिया ढंग से शुरू करता है, मगर ज्यों-ज्यों आगे बढ़ता है, गम्भीर होता जाता है और अपना भाषण बड़े जोशीले शब्दों में समाप्त करता है। अपनी बात कह चुकने के बाद वह धमधमाता हुआ एक ओर को हट जाता है)**

(सभी चुप बैठे रहते हैं। हर कोई बेचैनी अनुभव करता है। प्रत्येक उसके शब्दों में कुछ बोझल और सचाई को महसूस करता है)

येलेना (धीरे से) : लगता है... आप लोगों के हाथों बुरी तरह सताये गये हैं...

तेतेरेव (खीसें निपोरते हुए) : लेकिन इसी ने मुझे यह प्यारी उम्मीद बँधवाई है कि वह वक़्त दूर नहीं, जब वे मेरे हाथों या मेरी ख़ातिर सताये जायेंगे...

नील (एक हाथ में प्याला और दूसरे में रोटी का टुकड़ा लिये प्रवेश करता है। बोलते समय उसकी नज़र प्याले पर रहती है कि कहीं वह छलक न जाये)

(उसके पीछे-पीछे तत्याना आती है)

फ़लसफ़ा, जब देखो—फ़लसफ़ा। तिल का ताड़ बनाने और उस पर फ़लसफ़े का रंग चढ़ाने की तुम्हारी यह आदत बुरी है, तत्याना! कहीं पानी बरसा—फ़लसफ़ा, उंगली कट गयी—दूसरा फ़लसफ़ा, चूल्हे में से धुआँ निकला—तीसरा फ़लसफ़ा। जब मैं हर मामूली बात के लिए इस तरह का फ़लसफ़ा सुनता हूँ तो बरबस यह सोचने के लिए मजबूर हो जाता हूँ कि पढ़ाई-लिखाई से हर आदमी का भला नहीं होता...

तत्याना : तुम बहुत... लट्ठमार हो, नील!

नील (मेज पर बैठकर खाना शुरू करते हुए) : इसमें लट्ठमार होने की क्या बात है? ज़िन्दगी में ऊब महसूस होती है तो कुछ काम करो। काम करने वालों के पास ऊबने का वक़्त नहीं होता। घर में ज़िन्दगी दूभर है, तो गाँव में जाकर रहो, वहाँ बच्चों को पढ़ाओ... या फिर मास्को जाकर खुद पढ़ो...

येलेना : बिल्कुल ठीक कहा! ज़रा इसकी भी ख़बर ले लीजिये! (तेतेरेव की ओर संकेत करती है) इसकी भी!

नील (कनखियों से उसे देखते हुए) : यह एक और नमूना है। हेरकलीटस* का छोटा भाई...

तेतेरेव : अगर तकलीफ़ न हो तो स्विफ्ट** कहो।

नील : मुँह धो रखो!

---

* ईसा पूर्व की छठी शताब्दी के अन्त और पाँचवीं शताब्दी के पूर्व का यूनानी दार्शनिक।—सं.

** अंग्रेज लेखक, व्यंग्यकार और राजनीतिक कार्यकर्ता (1667-1745)।—सं.।

प्योत्र : हाँ, छोटा मुँह, बड़ी बात।

तेतेरेव : मगर मेरी बाछें खिल जातीं...

त्स्वेतायेवा : तारीफ़ के चटोरे हो!...

नील (प्याले से आँखें हटाये बिना) : कुछ नहीं... अरे हाँ... वह... पोल्या यहाँ आयी थी न?... मेरा मतलब वह कहाँ गयी है?

तत्याना : थियेटर। क्यों?

नील : कुछ नहीं... ऐसे ही पूछ रहा था...

तत्याना : तुम्हें उसकी ज़रूरत है?

नील : नहीं... ज़रूरत नहीं... मेरा मतलब इस वक़्त ज़रूरत नहीं... वैसे मुझे... हमेशा उसकी ज़रूरत रहती है। ओह, शैतान, यह मैं क्या बक रहा हूँ!...

(तत्याना को छोड़कर सब मुस्कराते हैं)

तत्याना (अपनी बात पर अड़ते हुए) : किसलिए? किसलिए ज़रूरत रहती है तुम्हें उसकी?

(नील उसके प्रश्न की तरफ़ ध्यान न देकर खाता रहता है)

येलेना (जल्दी से तत्याना से) : वह तुम्हें किसलिए डाँट-डपट रहा था? बताओ न?

त्सवेतायेवा : हाँ, बताओ, यह जानना दिलचस्प रहेगा!

शीश्किन : मुझे भी इसका डाँटने का ढंग पसन्द है...

प्योत्र : और मुझे—इसका खाने का ढंग...

नील : मैं कुछ भी तो बुरे ढंग से नहीं करता...

येलेना : तो बताओ न तत्याना, बताओ भी!

तत्याना : जी नहीं चाहता...

त्स्वेतायेवा : वह कभी कुछ नहीं चाहती!

तत्याना : तुम्हें यह कैसे मालूम है? शायद मैं... मर जाना चाहती हूँ, बुरी तरह चाहती हूँ?

त्स्वेतायेवा : उफ़, यह कैसी भयानक बात कही है तुमने!

येलेना : बाप रे बाप! मौत का ज़िक्र मुझे पसन्द नहीं!

नील : मेरे बिना कोई मौत के बारे में कह ही क्या सकता है?

तेतेरेव : यह है असली फ़लसफ़ी!

येलेना : तो महानुभावो, मेरे कमरे में चलिये! समोवार में तो शायद पानी उबल रहा होगा...

शीश्किन : सच, अब चाय मिले तो मज़ा आ जाये! साथ में कुछ नमकीन-मीठा भी... उम्मीद की जाये?

येलेना : बेशक!

शीश्किन (नील की तरफ़ संकेत करते हुए) : वरना इसकी तरफ़ देख-देखकर मुझे जलन हो रही थी, पापी जो हूँ!

नील : अब जलो नहीं—मैं सब कुछ हड़प चुका हूँ! मैं भी आप लोगों के साथ ऊपर चल रहा हूँ, अभी मेरे पास एक घण्टे से ज़्यादा वक़्त है...

तत्याना : काम पर जाने से पहले तुम झपकी ले लेते, तो ज़्यादा अच्छा होता...

नील : इसके बिना भी काम चलेगा...

येलेना : प्योत्र वसील्येविच! आप भी चल रहे हैं न?

प्योत्र : अगर इजाज़त हो...

येलेना : बड़ी ख़ुशी से! मुझे अपना हाथ दीजिये...

त्स्वेतायेवा : जोड़े बना लीजिये। नील वसील्येविच, आप मेरे साथ आ जाइये...

शीश्किन (तत्याना से) : तो आप मेरे साथ होंगी...

तेतेरेव : कहते हैं कि दुनिया में औरतें मर्दों से ज़्यादा है। मगर मैं तो इस देश के बहुत-से शहरों में रह चुका हूँ और कभी, कहीं भी मेरे लिए कोई औरत नहीं बची...

येलेना (हँसती और गाती हुई दरवाज़े की तरफ़ बढ़ती है) : Allons, enfants de la patri...i...i...e!*

शीश्किन (प्योत्र को धकेलता है) : देश के सपूत, ज़रा तेज़ी से क़दम बढ़ाओ!...

(वे शोर मचाते, गाते और हँसते हुए बाहर जाते हैं। कुछ क्षण तक कमरा खाली रहता है। उसके बाद बेस्सेमेनोव के कमरे का दरवाज़ा खुलता है और अकुलीना इवानोव्ना बाहर आती है। जम्हाई लेते हुए वह लैम्प बुझाती है। बुज़ुर्ग के कमरे से नीरस ढंग से प्रार्थना करने की धीमी आवाज़ सुनाई देती है। अँधेरे में कुर्सियों से ठोकर खाती हुई अकुलीना इवानोव्ना अपने कमरे की तरफ़ जाती है)

(परदा गिरता है)

---

* विश्वविख्यात क्रान्तिकारी गीत की पहली पंक्ति : "आगे बढ़ो, देश के सपूत तुम!" (फ्राँसीसी)

दूसरा अंक

मंच-सज्जा पहले जैसी ही है

(पतझर की दोपहर। बेस्सेमेनोव मेज़ के पास बैठा है

। तत्याना धीरे-धीरे, दबे पाँव कमरे में टहल रही है। प्योत्र दोनों कमरों के बीचवाले मेहराबदार दरवाज़े में खड़ा हुआ खिड़की से बाहर झाँक रहा है।)

बेस्सेमेनोव : घण्टे भर से मैं तुम लोगों के साथ मत्थापच्ची कर रहा हूँ... सुनते हो, मेरे प्यारे बच्चो। लेकिन लगता है कि मेरे पास ऐसे शब्द नहीं जो तुम्हारे दिलों में घर कर सकें... एक मेरी तरफ़ पीठ किये हुए मेरी बातें सुन रहा है और दूसरी मुंडेर पर फुदकनेवाले कौवे की तरह इधर-उधर आ-जा रही है।

तत्याना : मैं बैठ जाती हूँ... **(बैठ जाती है)**

प्योत्र (अपने पिता की तरफ़ मुड़ते हुए) : आप साफ़-साफ़ बात क्यों नहीं कहते कि आप हमसे चाहते क्या हैं?

बेस्सेमेनोव : मैं यह समझना चाहता हूँ कि आख़िर तुम किस क़िस्म के लोग हो... मैं यह जानना चाहता हूँ कि प्योत्र, तुम किस ढंग के आदमी हो?

प्योत्र : थोड़ा इन्तज़ार कीजिये! वक़्त आने पर आप सब जान जायेंगे, सब कुछ देख लेंगे... अभी तो मुझे अपनी पढ़ाई ख़त्म कर लेने दीजिये...

बेस्सेमेनोव : हुंह... पढ़ाई... तो पढ़ो! मगर तुम पढ़ो भी... तुम तो सिर्फ़ अपनी शान दिखाया करते हो, हर चीज़ पर नाक-भौंह सिकोड़ना सीख गये हो, मगर समझदारी से काम लेना नहीं सीखा... उन्होंने तुम्हें यूनिवर्सिटी से निकाल दिया। तुम सोचते हो कि तुम्हारे साथ ज़्यादती हुई है? यह तुम्हारी भूल है। विद्यार्थी विद्यार्थी है—यह बताना उसका काम नहीं कि क्या और कैसे होना चाहिए। बीस साल का हर छोकरा क़ानून-क़ायदे का ठेकेदार बन बैठे तो चारों तरफ़ धांधली मच जाये... भले लोगों के लिए कहीं सिर छिपाने की जगह न बचे। तुम पहले अपनी पढ़ाई ख़त्म कर लो, अपने काम के उस्ताद बन जाओ ओर फिर भले-बुरे का फ़ैसला करने बैठना... उस वक़्त तक हर कोई तुम्हारी मीन-मेख़ के जवाब में यह कहने का हक़ रखता है—चुप रहो! मैं यह सब कुछ तुम्हारे बुरे के लिए नहीं, भले के लिए, सच्चे दिल से कह रहा हूँ—क्योंकि तुम मेरे बेटे हो, मेरे अपने हो, मेरा ख़ून हो। नील से मैं यह सब नहीं कहता हूँ... बेशक उसके लिए भी मैंने अपना ख़ून-पसीना एक किया है, वह मेरा पाला हुआ बेटा है... फिर भी वह पराया ख़ून है। जैसे-जैसे वह बड़ा होता जाता है, वैसे-वैसे और ज़्यादा पराया होता जाता है। मैं देख रहा हूँ कि वह कोई लफ़ंगा, निकम्मा आदमी बनेगा... अभिनेता या ऐसा ही कुछ और... शायद समाजवादी ही बन जाये... मेरी बला से वह कुछ भी बने—वह है भी इसी के लायक़!

अकुलीना इवानोव्ना (दरवाज़े में से झाँककर अनुरोधपूर्ण और सहमी-सी आवाज़ में पूछती है) : प्योत्र के पिता, खाने का वक़्त हो गया है न?

बेस्सेमेनोव (कड़ाई से) : चलती बनो यहाँ से! बेमौक़े अपनी टांग मत अड़ाया करो...

(अकुलीना इवानोव्ना दरवाज़ा बन्द कर देती है। तत्याना तिरस्कार से अपने पिता की ओर देखती है और कुर्सी से उठकर फिर इधर-उधर टहलना शुरू कर देती है)

देखा तुमने? देखा, अपनी इस माँ को? हर वक़्त बेचैन और तुम पर अपनी छत्रछाया बनाये रहती है... उसे यही डर खाता रहता है कि मैं कहीं तुम्हें कुछ बुरा-भला न कह दूँ, तुम्हारे दिलों को ठेस न लगा दूँ... मैं किसी का दिल दुखाना नहीं चाहता... लेकिन तुम लोगों ने मेरे दिल को ठेस लगायी है—बहुत बुरी तरह मेरा दिल दुखाया है तुमने!... मैं अपने ही घर में पंजों के बल, सहम-सहमकर चलता हूँ मानो फ़र्श पर शीशे के टुकड़े बिखरा दिये गये हों... मेरे पुराने दोस्तों ने अब मेरे यहाँ आना छोड़ दिया है। "तुम्हारे बच्चे बहुत पढ़े-लिखे हैं," वे कहते हैं, "हम हैं सीधे-सादे लोग, वे हमारी खिल्ली उड़ायेंगे।" बहुत बार तुमने उनका मज़ाक़ उड़ाया भी और तब मैं शर्म से पानी-पानी होकर रह गया था। मेरे सभी दोस्तों ने मुझसे ऐसे नाता तोड़ लिया मानो पढ़े-लिखे बच्चे प्लेग की बीमारी हो। तुम अपने बाप की ओर रत्ती भर ध्यान नहीं देते... कभी कोई मीठा शब्द नहीं बोलते, उसके सामने कभी अपना दिल नहीं खोलते, कभी यह नहीं बताते कि तुम्हारे क्या इरादे हैं, तुम लोग क्या करना चाहते हो। मैं तुम्हारे लिए बिल्कुल पराया हूँ... मगर मैं तुम्हें प्यार करता हूँ... हाँ-हाँ! प्यार करता हूँ। तुम समझते हो कि किसी को प्यार करने का क्या मतलब होता है? उन्होंने तुम्हें यूनिवर्सिटी से निकाल दिया—इसके लिए मेरा दिल दुखता है। तत्याना अकारण कुँवारी ही बूढ़ी हुई जा रही है, मेरे दिल को इससे ठेस लगती है... मैं नहीं जानता कि लोगों को कैसे मुँह दिखाऊँ... तत्याना में कौन सी कमी है?... दूसरी लड़कियों में कौन से लाल लगे रहते हैं जो वे शादियाँ कर लेती हैं? मैं तुम्हें एक इंसान देखना चाहता हूँ, प्योत्र, विद्यार्थी नहीं... फ़िलीप नाज़ारोव के बेटे को देखो—पढ़ाई ख़त्म करके शादी कर चुका है, घर में बहू लाया है और बहुत-सा दहेज

भी, दो हज़ार सालाना पगार पाता है और अब... अब जल्द ही नगर-परिषद का सदस्य चुना जाने वाला है...

प्योत्र : थोड़ा सब्र कीजिये... मैं भी शादी कर लूँगा...

बेस्सेमेनोव : वह मैं जानता हूँ। इसमें मुझे कोई शक नहीं है। तुम तो कल ही शादी करने को तैयार हो... मगर किससे? एक दिलफेंक औरत से, सो भी विधवा से! छि!

प्योत्र (तुनककर) : आप उसके बारे में ऐसा कहने का हक़... नहीं रखते!

बेस्सेमेनोव : ऐसा कहने का? क्या कहने का हक़ नहीं रखता? विधवा या दिलफेंक औरत?

तत्याना : पिता जी! मेहरबानी करके, पिता जी, हटाइये इस क़िस्से को!... प्योत्र... या तो तुम कमरे से बाहर चले जाओ!... या फिर चुप रहो! आख़िर में तो चुप हूँ! सुनिये... मेरी समझ में कुछ नहीं आता... पिताजी! ... जब आप अपनी बात कहते हैं तो मुझे लगता है कि आप ठीक कहते हैं! आप ठीक कहते हैं—इसमें मुझे ज़रा भी शक नहीं... यक़ीन कीजिये, मैं... दिल से ऐसा महसूस करती हूँ! मगर आपकी सच्चाई हमारी नज़र में... मेरी और प्योत्र की नज़र में... परायी है... आप यह बात क्यों नहीं समझते? हमारी अपनी सच्चाई है... ज़रा रुकिये, बिगड़िये नहीं, पिता जी! एक आपकी और एक हमारी सच्चाई है...

बेस्सेमेनोव (उछलकर) : झूठ! सरासर झूठ! सिर्फ़ एक ही सच्चाई है। मेरी सच्चाई! वह कैसी है तुम्हारी सच्चाई? कहाँ है वह? दिखाओ, साबित करो!

प्योत्र : चीख़िये-चिल्लाइये नहीं, पिता जी! मैं भी यह कह सकता हूँ... कि आपकी बात सही है। मगर आपकी सच्चाई का दायरा हमारे लिए बहुत तंग है। हम इससे बाहर आ चुके हैं... जिस तरह हमारे बचपन के कपड़े आज हमारे लिए छोटे हो चुके हैं। आपकी सच्चाई के दायरे में हमें घुटन महसूस होती है, वह हमें दबाता है... आपकी ज़िन्दगी का रास्ता, उसका रंग-ढंग हमारे काम नहीं आ सकता...

बेस्सेमेनोव : हाँ, हाँ! तुम... तुम! अरे हाँ, तुम पढ़-लिख गये... और मैं जाहिल हूँ! तुम...

तत्याना : नहीं, यह बात नहीं है, पिता जी! ऐसी बात नहीं है...

बेस्सेमेनोव : यही, बिल्कुल यही बात है! तुम्हारे यहाँ मेहमान आते हैं... तुम सब मिलकर सारा घर सिर पर उठा लेते हो... सोना हराम कर देते हो... तुम मेरे सामने ही उसके किरायेदारन से आँखें लड़ाया करते हो... तुम हमेशा मुँह फुलाये रहती हो, मैं... और तुम्हारी माँ, हम दोनों एक कोने में पड़े रहते हैं...

अकुलीना इवानोव्ना (तेज़ी से कमरे में प्रवेश करती है और गिड़गिड़ाती हुई ऊँचे-ऊँचे कहती है) : ओह, मेरे प्यारो! क्या मैं... प्योत्र के पिता, मेरे प्यारे, क्या

मैं कभी शिकायत करती हूँ? कोने में ही क्या... मैं तो बाड़े में भी पड़ी रह सकती हूँ, अगर तुम लोग आपस में न उलझो! एक दूसरे को काटने को न दौड़ो, मेरे प्यारो!...

बेस्सेमेनोव (एक हाथ से उसे अपनी तरफ़ खींचते और दूसरे से धकेलते हुए) : निकल जा यहाँ से, बुढ़िया! इन्हें तेरी ज़रूरत नहीं है! इन्हें हम दोनों की ही ज़रूरत नहीं है। ये बहुत अक़्लमन्द है!... हम इनके लिए पराये...

तत्याना (आह भरकर) : क्या मुसीबत है! उफ़ क्या... मुसीबत है!

प्योत्र (फक चेहरे और निराशा से) : पिता जी... समझिये कि यह बड़ी बेतुकी बात है! एकदम बेतुकी है! आप बिला वजह और अचानक ही फट पड़े...

बेस्सेमेनोव : अचानक ही? तुम भूलते हो!... अचानक नहीं... बरसों से यह नासूर मेरे भीतर ही भीतर पक रहा था।

अकुलीना इवानोव्ना : इनकी बात ही मान लो, प्योत्र! इनसे बहस नहीं करो!... तत्याना... अपने पिता पर रहम करो!

बेस्सेमेनोव : बेतुकी बात? तुम उल्लू हो! बेतुकी नहीं, ख़तरनाक बात है! अचानक ही... बाप और बच्चे—अचानक दोनों की दो सचाइयाँ... दरिन्दे हो तुम लोग, दरिन्दे!

तत्याना : यहाँ से चले जाओ, प्योत्र। गुस्से को थूक दीजिये, पिता जी... मैं आपकी मिन्नत करती हूँ...

बेस्सेमेनोव : पत्थरदिल दरिन्दे! इन्हें यहाँ घुटन महसूस होती है... किस बात का घमण्ड है तुम्हें? कौन से बड़े तीर मारे हैं तुमने? हम तो जिये हैं! हमने कुछ किया है... मकान बनाये हैं... तुम्हारे लिए... पाप किये हैं... शायद बहुत पाप किये हैं... तुम्हारी ख़ातिर!

प्योत्र (चिल्लाते हुए) : क्या मैंने आपसे... ऐसे करने को कहा था?

अकुलीना इवानोव्ना : प्योत्र! भगवान के लिए...

तत्याना : यहाँ से चले जाओ, प्योत्र! मैं यह सब कुछ सहन नहीं कर सकती! मैं जाती हूँ... **(बेजान-सी कुर्सी पर जा गिरती है)**

बेस्सेमेनोव : अहा! सचाई से दूर भागने लगे हो... जैसे शैतान धूप की गन्ध से दूर भागता है... आख़िर तुम्हारी आत्मा धिक्कारने लगी!

नील (दरवाज़े को चौपट खोलता है और दरवाज़े में ही खड़ा रह जाता है। वह अभी काम से लौटा है। उसका चेहरा गन्दा है, उस पर गर्द-मिट्टी और कालिख लगी हुई है। उसके हाथ भी गन्दे हैं। वह कीचड़ से सने घुटनों तक के बूट और मिट्टी तथा तेल से चीकट जाकेट पहने है जिस पर पेटी बँधी है। वह हाथ आगे बढ़ाते हुए कहता है) : ताँगे का किराया चुकाने के लिए मुझे जल्दी

से बीस कोपेक दीजिये!

(उसके अचानक ही यहाँ आ जाने और शान्तभाव से कोपेक माँगने पर सभी चिल्लाना बन्द कर देते हैं और कुछ सेकेंड तक चुपचाप उसे घूरते रहते हैं)
(अपने आने से पैदा हुए प्रभाव से वह सारी स्थिति का अनुमान लगा लेता है और तिरस्कारपूर्ण मुस्कान के साथ कहता है) :

तो! फिर नोक-झोंक हो रही है?

बेस्सेमेनोव (भद्दे ढंग से चिल्लाते हुए) : अबे ओ, बदतमीज! कुछ समझते हो, कहाँ हो तुम?

नील : क्यों? कहाँ हूँ मैं?

बेस्सेमेनोव : टोपी पहने हुए! पहले इसे उतारो!

अकुलीना इवानोव्ना : सचमुच, यह सब क्या है? मैले-कुचैले चिथड़े पहने हुए खाने के कमरे में घुस आये हो... हद हो गयी!

नील : जल्दी से कुछ पैसे तो दीजिये!

प्योत्र (पैसे देते हुए फुसफुसाता है) : झटपट यहाँ लौट आना...

नील (मुस्कराकर) : मदद की ज़रूरत है? छठी का दूध याद आ रहा है, क्यों? अभी आता हूँ!

बेस्सेमेनोव : यह एक और हज़रत है!... कभी मन लगाकर कोई काम नहीं करता—जिस चीज़ की सनक सवार होती है, वही करता है... दिमाग़ में उल्टी-सीधी, ऊल-जलूल बातें भरी हुई हैं... कोई भी ऐसी चीज़ नहीं, जिसकी इज़्ज़त करता हो...

अकुलीना इवानोव्ना (पति के अन्दाज़ में ही) : बिल्कुल इज़्ज़त नहीं करता... लफ़ंगा है, लफ़ंगा! तत्याना, जाओ... झटपट रसोईघर में जाओ... स्तेपानीदा से कहो कि मेज़ पर खाना लगा दे...

(तत्याना बाहर जाती है)

बेस्सेमेनोव (कटु मुस्कान के साथ) : और प्योत्र को कहाँ भेजोगी? च-च-च... अरी ओ, मूर्ख बुढ़िया! मूर्ख हो तुम... इतना भी नहीं समझतीं कि मैं कोइ दरिन्दा नहीं हूँ! मैं सच्चे दिल से... इनकी ख़ातिर परेशान होता हुआ... दिल के दर्द से चीख़ता-चिल्लाता हूँ... गुस्से से नहीं। तुम हर वक़्त इन्हें मुझसे दूर क्यों भगाती रहती हो?

अकुलीना इवानोव्ना : प्योत्र के पिता, मैं यह जानती हूँ, मेरे प्यारे... सब कुछ जानती हूँ... मगर इनके लिए दिल रोता है! हम-तुम तो अब बूढ़े हो गये... किसको

ज़रूरत है अब हमारी? हे भगवान! हम हैं ही किस लायक़? मगर इनके सामने तो पहाड़-सी ज़िन्दगी है! न जाने कितने झटके, कितने सदमे सहने होंगे इन्हें पराये लोगों की बदौलत...

प्योत्र : पिता जी, आप तो सचमुच व्यर्थ ही इतने परेशान होते रहते हैं... आपने अपने दिमाग़ में योंही ऐसी बात बिठा ली है...

बेस्सेमेनोव : मैं डरता हूँ! ज़माना ऐसा है... बुरा ज़माना है! हर चीज़ टूट-फूट रही है, सभी कुछ ढह रहा है... ज़िन्दगी में उथल-पुथल मची हुई है!... मुझे तुम्हारी फ़िक्र है... कहीं कुछ ऐसा-वैसा हो गया... तो हमारे बुढ़ापे का सहारा, हमारी लाठी कौन होगा? तुम्हीं तो हमारा सहारा हो... इस नील को देखते हो, क्या रंग-ढंग हैं उसके? और वह... तेतेरेव... वह भी उसी थैली का चट्टा-बट्टा है। तुम इन दोनों से दूर रहा करो! वे... हमसे नफ़रत करते हैं! सावधान रहना!

प्योत्र : हटाइये भी! मुझे कुछ नहीं होगा... थोड़ा और इन्तजार करने के बाद मैं यूनिवर्सिटी को खत लिखकर माफी माँग लूँगा...

अकुलीना इवानोव्ना : जल्दी ही कर डालो, प्योत्र! पिता के दिल को चैन दो...

बेस्सेमेनोव : जब तुम ऐसी समझदारी की बातें करते हो... इतने गम्भीर हो जाते हो... तो मुझे तुम पर भरोसा होने लगता है... मुझे यह यक़ीन होने लगता है कि तुम्हारी ज़िन्दगी मुझसे कुछ बुरी नहीं गुजरेगी... मगर फिर कभी-कभी मेरा यह विश्वास...

प्योत्र : लाइये, अब इस किस्से को खत्म कर दें... बस, काफी है... ज़रा ख़्याल कीजिये कि कितनी बार ऐसे ही भद्दे तमाशे होते हैं हमारे यहाँ!

अकुलीना इवानोव्ना : भगवान तुम दोनों का भला करे!

बेस्सेमेनोव : और यह तत्याना... उसे तो पढ़ाने का यह झंझट खत्म कर देना चाहिए... क्या मिलता उसे इससे? सिरदर्दी और थकान ही न!

प्योत्र : हाँ, उसे आराम की बेहद ज़रूरत है...

अकुलीना इवानोव्ना : ओह, बहुत ज़रूरत है!

नील (वह नीली कमीज़ पहने है, मगर हाथ-मुँह अभी नहीं धोया है) : खाना तो जल्द ही खायेंगे न?

(नील को देखकर प्योत्र जल्दी से ड्योढ़ी में चला जाता है)

बेस्सेमेनोव : पहले अपने उस तोबड़े को तो धो लेते, फिर खाने की पूछते।

नील : मेरा तोबड़ा कोई बहुत बड़ा नहीं है, चुटकी बजाते में धुल जायेगा। मगर भूख के मारे मेरा दम निकला जा रहा है! ठण्ड और बारिश, तूफानी हवा और फिर पुराना, छकड़े जैसा इंजन... इस रात तो बुरी तरह थक-टूट गया हूँ! काश, अफसर

को ऐसे मौसम में उसी इंजन पर बिठाकर थोड़ी सैर करा देता...

बेस्सेमेनोव : और बकबक कर लो! देख रहा हूँ कि कुछ अरसे से तुम अपने अफसरों को खूब कोसने लगे हो... जरा सम्भल जाओ, कहीं आटे-दाल का भाव न मालूम हो जाये!

नील : अफसरों को कुछ नहीं होगा...

अकुलीना इवानोव्ना : पिता अफसरों की नहीं, तुम्हारी बात कर रहे हैं।

नील : ओह, मेरी बात...

बेस्सेमेनोव : हाँ, तुम्हारी बात!

नील : ओ-हो!...

बेस्सेमेनोव : अपनी यह "ओ-हो" बन्द करो। जो मैं कहता हूँ, उसे सुनो...

नील : सुन रहा हूँ...

बेस्सेमेनोव : तुम्हारा दिमाग़ आसमान पर पहुँचता जा रहा है...

नील : बहुत अरसे से?

बेस्सेमेनोव : तुम मुझसे ऐसी जबान में बात करने की हिम्मत नहीं करो!

नील : मेरे पास तो एक ही जबान है... **(ज़बान बाहर निकालता है)** मैं सबके साथ इसी से बात करता हूँ...

अकुलीना इवानोव्ना **(हैरानी से हाथ आगे बढ़ाते हुए)** : ओह, बेशर्म कहीं के! ज़रा सोचो तो, किसे दिखा रहे हो अपनी यह ज़बान!

बेस्सेमेनोव : ठहरो, बुढ़िया, बीच में मत टोको!

(अकुलीना इवानोव्ना तिरस्कार से सिर हिलाती हुई बाहर चली जाती है)

तुम अक्ल के ठेकेदार! मैं तुमसे बात करना चाहता हूँ...

नील : खाने के बाद?

बेस्सेमेनोव : नहीं, अभी!

नील : खाने के बाद बेहतर रहेगा बात करना! मेरे पेट में सचमुच चूहे कूद रहे हैं, मैं बेहद थका और ठिठुरा हुआ हूँ... मेहरबानी कीजिये, कुछ देर को बातचीत रहने दीजिये! और फिर आप मुझसे कहेंगे भी क्या? आप झगड़ा करना चाहेंगे... और आपसे झगड़ना मुझे पसन्द नहीं... बेहतर यही है कि... आप मेरे मुँह पर साफ़-साफ़ कह दें कि मैं अब आपकी आँख में खटकने लगा हूँ... और यह कि अब मुझे अपनी राह...

बेस्सेमेनोव : जहन्नुम में जाओ तुम! **(वह अपने कमरे में जाता है और ज़ोर से दरवाज़ा बन्द कर लेता है)**

नील **(बड़बड़ाते हुए)** : तुम्हारे साथ रहने के बजाय जहन्नुम में रहना कहीं बेहतर है... **(गुनगुनाता हुआ इधर-उधर टहलता है)**

(तत्याना आती है)

एक झड़प और हो गयी?

तत्याना : तुम तो अनुमान भी नहीं लगा सकते कि...

नील : अरे! खूब अनुमान लगा सकता हूँ... अन्तहीन कामदी 'न घर के, न घाट के' का एक और मनोरंजक दृश्य।

तत्याना : तुम मजे से ऐसी बातें कर सकते हो! तुम्हें अपना दामन बचाने का ढंग आता है...

नील : मैं इस तरह की बक-झक को अपने से दूर रखना जानता हूँ। जल्द ही सदा-सदा के लिए और पूरी तरह इससे अपना पिण्ड छुड़ा लूँगा... मैं डिपो में मेकेनिक हो जाऊँगा... हर रात मालगाड़ी चला-चलाकर जी तंग आ गया है! कोई कहीं मुसाफ़िर गाड़ी, कोई एक्सप्रेस गाड़ी होती, तब भी कोई बात थी। पूरी रफ़्तार से हवा को चीरती, फर्राटे भरती, खटा-खट, खटा-खट! मगर यह मालगाड़ी चींटी की तरह रेंगती है और झोंकिये को छोड़कर कोई साथी नहीं होता... ऊब से दम निकला है!... मुझे लोगों के बीच मज़ा आता है...

तत्याना : फिर भी तुम हम लोगों से दूर भागते रहते हो...

नील : हाँ... सचाई के लिए माफ़ी चाहता हूँ, मगर कोई भी यहाँ से भागना चाहेगा! मुझे ज़िन्दगी से प्यार है, मैं शोर-गुल, काम और सीधे-सादे, हँसमुख लोगों को पसन्द करता हूँ! तुम लोग क्या ज़िन्दगी को जीते हो? तुम ज़िन्दगी के एक किनारे पर खड़े हो और न जाने क्यों, आहें भरते और शिकवा-शिकायत करते रहते हो... किसके ख़िलाफ़, क्यों और किसलिए? समझ में नहीं आता।

तत्याना : तुम नहीं समझते?

नील : हाँ, नहीं समझता। जब कोई आदमी एक ही करवट लेटे-लेटे थक जाता है तो वह करवट बदल लेता है, मगर जब ज़िन्दगी उसके लिए भार बन जाती है तो वह सिर्फ़ शिकवा-शिकायत करता है... तुम करवट बदलने की कोशिश करो!

तत्याना : किसी फ़लसफ़ी ने कहा है सिर्फ़ बेवकूफ़ को ही ज़िन्दगी आसान लगती है!

नील : लगता है कि फ़लसफ़ी बेवकूफ़ियों के मैदान के बड़े खिलाड़ी होते हैं। मैं बहुत अक़्लमन्द होने का दम नहीं भरता हूँ... मगर मुझे यहाँ की ज़िन्दगी बहुत ऊबभरी और नीरस लगती है। मेरे ख़्याल में तुम लोगों की रात-दिन की, चौबीसों घण्टों की हाय-तोबा की वजह से ही ऐसा है। हाय-हाय करने से मिलता भी क्या है? कौन मदद को आयेगा? कोई भी नहीं... कोई नहीं आयेगा...और उससे कुछ

बने-बनायेगा भी नहीं...

तत्याना : नील, तुम्हारा दिल इतना पत्थर क्यों हो गया है?

नील : तुम इसे पत्थरदिल होना कहती हो?

तत्याना : पत्थरदिल ही नहीं, ज़ालिम भी... शायद तुम्हें यह छूत तेतेरेव से लगी है जो सभी से नफ़रत करता है।

नील : नहीं, सभी से नहीं... **(हँसता है)** क्या तुम्हें तेतेरेव एक कुल्हाड़ी जैसा नहीं लगता?

तत्याना : कुल्हाड़ी जैसा? क्या मतलब तुम्हारा?

नील : एक मामूली, लकड़ी के दस्ते वाली कुल्हाड़ी जैसा?...

तत्याना : हटाओ, मज़ाक़ नहीं करो! रहने दो... तुमसे बात करके मन खिल उठता है... तुम्हारी बातों में हमेशा ताज़गी होती है, मगर तुम... तुम बेपरवाह हो...

नील : किस चीज़ के बारे में?

तत्याना : लोगों के बारे में... मिसाल के तौर पर मेरे बारे में...

नील : हुँह... शायद हर किसी के बारे में तो बेपरवाह नहीं हूँ...

तत्याना : मेरे मामले में तो बेपरवाह हो...

नील : तुम्हारे मामले में? हाँ...

(दोनों चुप हो जाते हैं। नील अपने जूतों को घूरता है। तत्याना आशाभरी दृष्टि से उसे देखती है)

देखो न, मैं... तुम... यानी मैं तुम्हारी...

(तत्याना उसकी तरफ़ खिसकती है, मगर नील का इस चीज़ की ओर ध्यान नहीं जाता)

मैं तुम्हारी बड़ी इज्जत करता हूँ और... और मैं तुम्हें चाहता भी हूँ। मगर मुझे तुम्हारे स्कूल की अध्यापिका होने में कोई तुक नज़र नहीं आती। तुम्हें वह काम पसन्द नहीं, तुम्हें उससे थकान होती है, तुम झल्ला उठती हो। और पढ़ाना—यह बहुत बड़ा काम है! बच्चे हमारा भविष्य हैं, वही कल बड़े होंगे... तुम्हें उनके महत्व को समझना, उन्हें प्यार करना चाहिए। किसी काम को अच्छे ढंग से करने के लिए उसे प्यार करना ज़रूरी है। मुझे ही ले लो—मुझे लुहार की निहाई पर काम करने में बड़ा मज़ा आता है। दहकता हुआ लाल-लाल गोला सामने होता है—उस पर हथौड़े बरसाते हुए दिल खुशी से नाचने लगता है। ढेरों चिंगारियाँ फूटती हैं, वे मेरी आँखों की तरफ़ लपकती हैं, मुझे अन्धा कर देना चाहती हैं, लोहे का गोला क़ाबू से बाहर होने लगता है, उसमें

मानो ज़िन्दगी की धड़कन और लोच महसूस होती है... मैं ज़ोरदार चोटों से उसे मनमानी शक्ल दे देता हूँ...

तत्याना : इसके लिए आदमी को बहुत ताक़तवर होना चाहिए।

नील : चुस्त-चतुर भी...

तत्याना : सुनो नील... क्या तुम्हें कभी दया नहीं आती?...

नील : किस पर?

येलेना (प्रवेश करते हुए) : आप लोगों ने अभी खाना तो नहीं खाया, न? बहुत अच्छी बात है। तो मेरे साथ चलिये! कैसा बढ़िया केक बनाया मैंने! वकील साहब कहाँ हैं? बहुत गज़ब का केक है!

नील (येलेना के पास जाकर) : मैं तो चल रहा हूँ! ओह, मैं ही हड़प जाऊँगा आपके उस पूरे केक को! भूख के मारे मेरी जान निकली जा रही है और ये लोग जान-बूझकर मुझे खाने को कुछ भी नहीं दे रहे! न जाने, क्यों मुझसे बिगड़े हुए हैं...

येलेना : शायद ज़बान की वजह से... आओ चलें, तत्याना!

तत्याना : मैं ज़रा माँ से कह आऊँ... **(बाहर जाती है)**

नील : आपको यह कैसे मालूम हुआ कि आज मैंने बुड्ढे को अपनी ज़बान दिखायी थी?

येलेना : क्या? मुझे तो कुछ भी मालूम नहीं! क्या हुआ था?

नील : तो मैं नहीं बताऊँगा... आप अपने केक के बारे में बतायें, यही ज़्यादा अच्छा होगा।

येलेना : मैं खुद मालूम कर लूँगी! रही केक की बात... तो मुझे केक बनाना सिखाया एक क़ैदी ने। उसे खून करने के लिए सज़ा दी गयी। मेरे पति ने उसे रसोईघर में मेरी मदद करने की इजाजत दे दी थी। बेचारा दुबला-पतला, बड़ा मरियल-सा था...

नील : कौन? आपका पति?

येलेना : जनाब! मेरे पति का क़द तो छः फुट पाँच इंच था...

नील : बस, इतना छोटा-सा था?

येलेना : खामोश! बड़े तेज हैं! और उसकी मूँछें—ये थीं **(उँगलियों से संकेत करती है)**, दोनों तरफ छः-छः इंच...

नील : पहली बार सुन रहा हूँ कि किसी आदमी की खूबियों को इंचों में नापा जाये।

येलेना : हाय! मूँछों के अलावा उसमें और कोई खूबी तो थी ही नहीं!

नील : बड़े अफसोस की बात है! केक की चर्चा जारी रखिये...

येलेना : वह क़ैदी बावर्ची था... और उसने अपनी बीवी की हत्या कर डाली थी।

मगर मुझे वह बेहद पसन्द था। उसने अपनी बीवी का खून तो कुछ ऐसे ही कर दिया.

नील : ऐसे ही... समझता हूँ!

येलेना : जाइये यहाँ से! मैं आपसे बात नहीं करना चाहती!,

(तत्याना दरवाज़े में दिखाई देती है और इन्हें देखती है। प्योत्र दूसरे दरवाज़े से प्रवेश करता है)

हलो, वकील साहब! मेरे यहाँ चलिये... केक खाने के लिए!...

प्योत्र : ख़ुशी से चलने को तैयार हूँ!

नील : आज इसके पापा ने गुस्ताख़ी के लिए इसकी खूब ख़बर ली है...

प्योत्र : ओह, हटाओ भी...

नील : मुझे हैरानी हो रही है कि इजाज़त के बिना वह आपके यहाँ जाने की हिम्मत ही कैसे कर रहा है?

प्योत्र (अपने माता-पिता के कमरे के दरवाज़े की तरफ़ घबराहट से देखते हुए) : चलना है, तो चलिये!

तत्याना : आप लोग जायें, मैं अभी आ रही हूँ...

(नील, प्योत्र और येलेना बाहर जाते हैं। तत्याना अपने कमरे की ओर जाती है। इसी वक़्त बुजुर्गों के कमरे से अकुलीना इवानोव्ना की आवाज़ सुनाई देती है)

अकुलीना इवानोव्ना : तत्याना!

तत्याना (रुकती है और कन्धे झटककर अपनी बेचैनी प्रकट करती है) : क्या है, अम्मां?

अकुलीना इवानोव्ना (दरवाज़े में से) : इधर आओ! **(लगभग कानाफूसी करते हुए)** क्या प्योत्र फिर ऊपर गया है?

तत्याना : हाँ... और मैं भी जा रही हूँ...

अकुलीना इवानोव्ना : हाय, फूट गयी तक़दीर, फूट गयी! वह पेत्या को अपने जाल में जरूर फँसा लेगी! मैं यह महसूस करती हूँ!... उसे समझाओ, तत्याना। उसे बताओ कि वह उसके लायक़ नहीं है... तीन हज़ार रूबल और ख़सम की पेंशन के अलावा उसके पास एक कौड़ी भी नहीं है... मैं यह अच्छी तरह जानती हूँ!

तत्याना : अम्मां, इस पचड़े में नहीं पड़िये। येलेना प्योत्र में ज़रा भी दिलचस्पी नहीं लेती है...

अकुलीना इवानोव्ना : ऐसा वह जान-बूझकर करती है! मैं कहती हूँ जानबूझ कर वह उसके दिल की आग को तेज़ करना चाहती है... वह उसमें दिलचस्पी न लेने का ढोंग करती है... मगर यों हर वक़्त उस पर ऐसे आँखें जमाये रहती है, जैसे बिल्ली चूहे पर...

तत्याना : ओह! मेरी बला से! मुझे क्या लेना-देना है? अगर चाहती हैं तो खुद उससे बात कर लें... इस मामले में मुझे नहीं घसीटिये! क्या आप इतना भी नहीं समझतीं कि मैं थक गयी हूँ?

अकुलीना इवानोव्ना : मैंने यह तो नहीं कहा कि तुम अभी जाकर उससे बात करो... तुम लेट जाओ, थोड़ा आराम कर लो...

तत्याना (लगभग चीखते हुए) : मेरे आराम करने की जगह ही कहाँ है! मैं हमेशा के लिए थक गयी हूँ... समझती हैं? ज़िन्दगी भर के लिए... आपसे थक गयी हूँ... सभी चीज़ों से तंग आ गयी हूँ! **(जल्दी से ड्योढ़ी में चली जाती है)**

(अकुलीना इवानोव्ना एक क़दम बढ़ाती है, मानो उसे रोकना चाहती हो। लेकिन फिर हाथ झटककर अपनी निराशा प्रकट करते हुए हतप्रभ-सी खड़ी रह जाती है)

बेस्सेमेनोव (दरवाजे में से झाँकते हुए) : फिर उलझीं?

अकुलीना इवानोव्ना (चौंककर) : नहीं, कोई ऐसी बात नहीं... योंही...

बेस्सेमेनोव : योंही क्या? उसने तुम्हारे सामने ज़बान चलाने की हिम्मत की है?

अकुलीना इवानोव्ना (जल्दी से) : नहीं, तो, प्योत्र के पिता! तुमको यह वहम कैसे हो गया? मैंने तो सिर्फ़ इतना कहा था कि... खाना खाने का वक़्त हो गया है! उसने कहा कि मैं खाना नहीं चाहती! मैंने कहा, क्यों नहीं चाहती? और उसने कहा...

बेस्सेमेनोव : तुम बिल्कुल झूठ बोल रही हो, तत्याना की माँ!

अकुलीना इवानोव्ना : नहीं, सच कह रही हूँ!

बेस्सेमेनोव : इनकी ख़ातिर तुम मेरे सामने कितना झूठ बोलती हो! ज़रा मुझसे नज़रें तो मिलाओ... नहीं मिला सकतीं? च-च-च!

(अकुलीना इवानोव्ना अपने पति के सामने सिर झुकाये खड़ी रहती है और वह भी चुपचाप खड़ा हुआ अपनी दाढ़ी पर हाथ फेरता रहता है। फिर आह भरकर कहता है)

इन्हें पढ़ा-लिखाकर हमने बहुत बड़ी ग़लती की है...

अकुलीना इवानोव्ना (धीमे से) : यह बात नहीं है, प्योत्र के पिता! अब तो अनपढ़ और सीधे-सादे लोग भी इनसे कुछ अच्छे नहीं हैं...

बेस्सेमेनोव : बच्चों को अपने से ज़्यादा कभी कुछ नहीं देना चाहिए... सबसे ज़्यादा दुख की बात तो यह है कि मुझे इनमें किसी तरह की कोई खास बात नज़र नहीं आती... कोई अनोखापन... इंसान में कुछ तो ऐसा होना चाहिए, जो दूसरों से अलग हो, जिससे उसकी पहचान हो सके... मगर इनकी अपनी कोई हस्ती ही नहीं! नील को ले लो... वह मुँहफट है... वह आवारा है। मगर—उसकी अपनी हस्ती है! वह ख़तरनाक है... मगर समझ में तो आता है... **(निःश्वास छोड़ता है)** जब मैं जवान था तो गिरजाघर के संगीत पर जान देता था... मुझे जंगलों में जाकर खुमियाँ इकट्ठी करना बहुत पसन्द था... लेकिन प्योत्र की क्या किसी भी चीज़ में दिलचस्पी है?

अकुलीना इवानोव्ना **(डरते हुए आह भरकर)** : वह फिर ऊपर गया है, उसी के पास।

बेस्सेमेनोव : देखा!... ज़रा ठहरो! मैं अभी उसको... मज़ा चखाता हूँ!

(तेतेरेव प्रवेश करता है। उसकी आँखों में नींद की खुमारी है और वह पहले से कहीं अधिक दुखी दिखाई देता है। उसके एक हाथ में वोदका की बोतल और दूसरे में गिलास है)

फिर इसी फेर में पड़ गये, तेरेन्ती ख्रीसान्फोविच?

तेतेरेव : कल की प्रार्थना समाप्त होने के बाद से...

बेस्सेमेनोव : किस कारण?

तेतेरेव : कारण तो कोई नहीं। खाना कब मिलेगा?

अकुलीना इवानोव्ना : अभी मेज लगा देती हूँ... **(मेज लगाना शुरू करती है)**

बेस्सेमेनोव : तुम खासे समझदार आदमी हो, तेरेन्ती... लेकिन शराब तुम्हें तबाह किये दे रही है!...

तेतेरेव : तुम झूठ बोल रहे हो, मेरे सम्मानित कूपमण्डूक! शराब नहीं, मुझे मेरी फालतू ताकत तबाह कर रही है... ज़रूरत से ज्यादा ताकत... वह कर रही है मुझे तबाह...

बेस्सेमेनोव : फालतू ताकत जैसी कोई चीज़ नहीं होती...

तेतेरेव : तुम फिर ग़लत कह रहे हो! आज के ज़माने में ताक़त की जरूरत नहीं है। जरूरत है चालबाजी और चालाकी की... साँप जैसी लोच होनी चाहिए... **(आस्तीन ऊपर चढ़ाकर घूँसा दिखाता है)** इसे देखो—अगर मैं घूँसा मारूँ तो मेज का भुरकस निकल जाये। मगर ऐसे मजबूत हाथों से कुछ भी तो नहीं किया जा सकता इस ज़िन्दगी में। मैं इनसे लकड़ियाँ चीर सकता हूँ, मगर मिसाल के तौर पर लिखने की कोशिश बेकार होगी... मैं क्या करूँ अपनी इस ताकत का? मुझे लगता

है कि इसका एक ही इस्तेमाल हो सकता है—मेले-ठेले में जाऊँ और करतब दिखाऊँ—वजन उठाऊँ, लोहे की जंजीरें तोड़ूँ और ऐसे ही कुछ दूसरे कमाल करूँ। लेकिन कभी मैं विद्यार्थी था... विद्यार्थी भी होनहार... इसी के लिए, मुझे धार्मिक पाठशाला से निकाल दिया गया... अब मैं... अब मैं यह नहीं चाहता कि तमाशा बनूँ, कि तुम जैसे लोग चैन से मेरे करतब देखते हुए खुश हों। मैं यही चाहता हूँ कि मुझे देखकर सभी बेचैन और परेशान हो जायें...

बेस्सेमेनोव : तुम बहुत बुरे दिल के आदमी हो...

तेतेरेव : मुझ जैसे लम्बे-तड़ंगे जानवर दिल के बुरे नहीं होते। जानवरों की विद्या की तुम्हें जानकारी नहीं है। कुदरत बहुत चालाक है। अगर लम्बा-तड़ंगा होने के साथ-साथ मैं क्रोधी भी होता तो तुम मेरे पंजे से निकलकर भाग ही कहाँ पाते?

बेस्सेमेनोव : मुझे कहीं भागने की ज़रूरत ही नहीं है... मैं तो अपने घर में हूँ।

अकुलीना इवानोव्ना : तुम चुप हो जाओ, प्योत्र के पिता।

तेतेरेव : बिल्कुल ठीक! तुम अपने घर में हो। तमाम दुनिया ही तुम्हारा घर है। तुम इसके मालिक हो। यही वजह है कि इसमें मेरे लिए कोई जगह नहीं है, कूपमण्डूक!

बेस्सेमेनोव : जिस ढंग से तुम जी रहे हो, इसमें क्या तुक है?... कोई तुक नहीं। अगर तुम चाहते तो...

तेतेरेव : मैं चाहता ही नहीं हूँ, क्योंकि मैं हर चीज़ से नफरत करता हूँ। तुम जैसों के लिए काम करने के बजाय मैं शराब में डूब जाना और इस तरह मिट जाना कहीं बेहतर समझता हूँ। क्या तुम, कूपमण्डूक, मुझे होश-हवास में, ढंग के कपड़े पहने और गुलामों जैसे अन्दाज़ में चापलूसी की बातें करते हुए देखने की कल्पना कर सकते हो? नहीं, ऐसी कल्पना नहीं कर सकते...

(पोल्या कमरे में आती है, तेतेरेव को देखकर लौटना चाहती है। उसे देखकर तेतेरेव की बाछें खिल जाती हैं और वह सिर झुकाकर उसकी तरफ अपना हाथ बढ़ाता है)

नमस्ते पोल्या, डरिये नहीं... मैं अब एक भी शब्द ज़बान से नहीं निकालूँगा... क्योंकि सब कुछ जानता हूँ!

पोल्या **(घबराकर)** : क्या जानते हैं?... आप कुछ भी नहीं जान सकते...

अकुलीना इवानोव्ना : अरे, तुम आ गयीं! जाओ, जाकर स्तेपानीदा से कहो कि शोरबा ले आये...

बेस्सेमेनोव : कब का वक़्त हो चुका... **(तेतेरेव से)** मुझे तुम्हारा विचार प्रकट करने का ढंग बहुत पसन्द है... खास तौर पर अपने बारे में तो तुम कमाल ही करते

हो। देखने में तो बड़े भयानक लगते हो! मगर जैसे ही तुम अपने ख़्याल जाहिर करना शुरू करते हो, तुम्हारी कमजोरियाँ सामने आने लगती हैं... **(वह मज़ा लेते हुए धीरे-धीरे हँसता है)**

तेतेरेव : तुम भी मुझे पसन्द हो, क्योंकि तुम कुछ अक़्लमन्द हो और कुछ बेवकूफ भी, कुछ भले और कुछ बुरे भी, ईमानदार और बेईमान भी, बहादुर और बुजदिल भी... मतलब यह कि नमूने के कूपमण्डूक हो! नीचता के तो तुम पूरे अवतार हो... यह वह ताक़त है जिसके सामने बड़े-बड़े बहादुरों के छक्के छूट जाते हैं जो हमेशा ज़िन्दा रहती है और हमेशा जीतती है... तो आओ, शोरबे के पहले पियें, मेरे सम्मानित छछून्दर!

बेस्सेमेनोव : शोरबा आने पर पी लेंगे। हाँ, यह तो बताओ कि तुम लोगों को काटने को क्यों दौड़ा करते हो?... किसी कारण के बिना दूसरों के दिल क्यों दुखाते हो?... तुम्हें नम्रता से, ढंग से अपनी बात कहनी चाहिए ताकि लोगों को सुनकर खुशी हो... अगर तुम दूसरों के दिलों पर शब्दों की छुरियाँ चलाओगे तो कोई तुम्हारी बात नहीं सुनेगा और जो सुनेगा—बेवकूफ होगा!

नील (प्रवेश करते हुए) : पोल्या आ गयी?

तेतेरेव (थोड़ा हँसकर) : आ गयी...

अकुलीना इवानोव्ना : तुम्हें क्या ज़रूरत पड़ गयी उसकी?

नील (अकुलीना इवानोव्ना के प्रश्न की ओर ध्यान न देकर, तेतेरेव से) : फिर से चालू हो गये? पिछले कुछ दिनों से मामला खूब ज़ोरों पर है...

तेतेरेव : लोगों का खून पीने से वोदका पीना कहीं अच्छा है... खास तौर पर जबकि लोगों का खून पतला, सफेद और बेमजा हो गया है... अच्छे और लाल खून की बड़ी कमी हो गयी है—सारा चूसा जा चुका है...

(स्तेपानीदा शोरबे का पतीला और पोल्या प्लेट में मांस लिये हुए आती है)

नील (पोल्या के पास जाकर) : कहो, क्या हाल है? तुम्हारा जवाब तैयार है?

पोल्या (बहुत धीमे से) : यहाँ, सबके सामने तो नहीं...

नील : क्यों नहीं? किसका डर है भला?

बेस्सेमेनोव : किसे?

नील : मुझे... और इसे...

अकुलीना इवानोव्ना : क्या मामला है?

बेस्सेमेनोव : कुछ समझ में नहीं आ रहा...

तेतेरेव (थोड़ा हँसकर) : मगर मैं सब समझता हूँ... **(वोद्का गिलास में ढालकर पीने लगता है)**

बेस्सेमेनोव : क्या मामला है? क्या बात है, पोल्या?

पोल्या : **(घबराकर, धीरे से)** : कुछ भी नहीं...

नील (मेज के पास बैठते हुए) : एक रहस्य है... एक बहुत बड़ा राज!

बेस्सेमेनोव : अगर राज है तो किसी कोने में जाकर खुसुर-फुसुर करो, सबके सामने नहीं... यह तो दूसरों का ऐसे मजाक उड़ाना हुआ कि... आदमी अपना घर छोड़कर भाग जाए! इशारेबाजियाँ, खुसुर-फुसुर, तरह-तरह की तिकड़में... और हम बैठे हुए उल्लुओं की तरह मुँह ताकते रहें... नील, आखिर तुम मुझे समझते क्या हो?

अकुलीना इवानोव्ना : सचमुच, नील, यह तो बहुत...

नील (शान्त भाव से) : आप मेरे मुँहबोले बाप हैं... लेकिन गुस्से में आने और तमाशा करने की कोई वजह नहीं है... कोई खास बात तो हुई नहीं...

पोल्या (कुर्सी से उठते हुए) : नील वसील्येविच... नील ने... पिछली रात... मुझसे... मुझसे पूछा था...

बेस्सेमेनोव : क्या पूछा था तुमसे नील ने?... बोलो भी?

नील (शान्त भाव से) : उसे डराने-धमकाने की कोशिश नहीं कीजिये... मैंने पूछा था कि क्या वह मुझसे शादी करने को राजी है?...

(बेस्सेमेनोव का वह हाथ, जिसमें चम्मच है, उठा का उठा रह जाता है। वह आश्चर्य से नील और पोल्या को घूरता है। अकुलीना इवानोव्ना पर भी जैसे गाज गिर जाती है। तेतेरेव पलक झपकाता हुआ शून्य में देखता है। घुटने पर रखा हुआ उसका हाथ सहसा काँपता है। पोल्या सिर झुकाये खड़ी रहती है)

(बात जारी रखते हुए) : और इसने कहा था कि आज मुझे जवाब देगी... बस इतनी-सी बात है...

तेतेरेव (अपना हाथ हिलाकर) : सचमुच बहुत मामूली-सी बात है... किस्सा ख़त्म...

बेस्सेमेनोव : तो यह बात है... बेशक, बहुत मामूली-सी बात है! **(खीझकर)** और नये अन्दाज की... जमाने की हवा के मुताबिक! लेकिन खैर!

अकुलीना इवानोव्ना : भगवान का डर-भय नहीं है तुम्हें! ज़रा भी डर नहीं रह गया! बिल्कुल सिरफिरे हो तुम! कम से कम हमसे बात तो कर ली होती...

नील (दुखी होते हुए) : जाने किस कुत्ते ने काटा था मुझे, जो मैं इनसे यह कह बैठा!

बेस्सेमेनोव : तत्याना की माँ, हटाओ इस बात को!... हमें क्या मतलब है इस मामले से! खाना खाओ और चुप रहो। मैं भी खामोश रहूँगा...

तेतेरेव (नशे में आते हुए) : मगर मैं बोलूँगा... वैसे, फिलहाल तो मैं भी चुप

रहूँगा...

बेस्सेमेनोव : हाँ... सभी के लिए चुप रहना बेहतर होगा। फिर भी... नील, मैं इतना कहे बिना नहीं रह सकता कि तुमने मेरे एहसानों का बदला खूब चुकाया है... तुम हमेशा छिपे-छिपे ही ऐसी हरकतें किया करते हो...

नील : आपके एहसानों का बदला मैंने अपना खून-पसीना एक करके चुकाया है और आगे भी चुकाता रहूँगा। लेकिन मैं आपके इशारों पर नाचने को तैयार नहीं हूँ। आप मेरी शादी उस बेवकूफ सेदोवा से सिर्फ इसलिए करना चाहते थे कि वह अपने साथ दस हजार रूबल का दहेज लायेगी। मगर मुझे उस लड़की का क्या अचार डालना है? पोल्या को मैं प्यार करता हूँ... बहुत अरसे से उसे प्यार करता हूँ। इस बात को मैंने कभी किसी से नहीं छिपाया। मेरी ज़िन्दगी तो खुली किताब है और हमेशा ऐसी ही रहेगी। आप किसी भी चीज़ के लिए न तो मेरी लानत-मलामत कर सकते हैं और न बुरा मान सकते हैं।

बेस्सेमेनोव (संयम से) : तो यह बात है, यह बात है! बहुत अच्छी बात है... हाँ, हाँ करो शादी। हम तुम्हारे आड़े नहीं आयेंगे। किस पूँजी के बल पर जीने का इरादा रखते हो? अगर यह कोई राज न हो तो इतना बता दो।

नील : हम दोनों काम करेंगे। मैं डिपो में जाकर काम करने वाला हूँ... और इसे... इसे भी कोई काम मिल जायेगा... पहले की तरह हर महीने अब भी आपको मुझसे तीस रूबल मिलते रहेंगे।

बेस्सेमेनोव : देखेंगे। ज़बान हिलाने में क्या जाता है?...

नील : हुण्डी लिखवा लीजिये...

तेतेरेव : कूपमण्डूक! इससे हुण्डी लिखवा लो! लिखवा लो हुण्डी!

बेस्सेमेनोव : तुम्हें इस मामले में टाँग अड़ाने को किसने कहा है...

अकुलीना इवानोव्ना : बड़ा आया है... सलाह देनेवाला!

तेतेरेव : नहीं, हुण्डी लिखवा लो! मगर तुम ऐसा नहीं करोगे, क्योंकि तुम्हारी आत्मा धिक्कारती है, ऐसा कहने की हिम्मत नहीं कर सकोगे... तुम खुद ही इसे लिखकर दे दो, नील! लिख दो कि मैं, नील, बक़लमखुद हर महीने इतनी रक़म देने का वादा करता हूँ...

बेस्सेमेनोव : मैं हुण्डी लिखवा भी सकता हूँ... मुझे इसका हक़ भी है। यह दस बरस का था जब से मैंने इसे खिलाया-पिलाया और ओढ़ाया-पहनाया है... इसे पाल-पोसकर बड़ा किया है—सत्ताईस बरस का... हाँ...

नील : क्या यह ज़्यादा अच्छा नहीं होगा कि हम अपना हिसाब इसी वक़्त नहीं, बाद में करें?

बेस्सेमेनोव : बाद में भी किया जा सकता है। (अचानक गुस्से में आकर) मगर

एक बात याद रखना, नील! आज से हम-तुम एक दूसरे के दुश्मन हैं! आज का यह अपमान मैं कभी नहीं भूलूँगा, कभी नहीं! इतना जान लो!

नील : कौनसा अपमान? किस तरह मैंने आपका अपमान किया है? आपने यह तो सोचा नहीं होगा कि मैं आपसे शादी करूँगा?

बेस्सेमेनोव (बहुत गुस्से में होने के कारण नील की बात नहीं सुनता) : याद रखना! तुमने उसकी टोपी उछाली है, उसे अँगूठा दिखाया है, जिसने तुम्हें पाल-पोसकर बड़ा किया है... उसे एक किनारे रखकर तुम चोरी-चोरी फैसले करते हो... पूछा तक भी नहीं... और तुम! तुम भीगी बिल्ली, बेचारी बेज़बान! ऐसे सिर झुकाये हो? बोलती क्यों नहीं? तुम्हारे पास कुछ नहीं कहने को? जानती हो, नाकों चने चबवा सकता हूँ...

नील (उछलकर खड़ा हो जाता है) : कुछ भी नाकों चने नहीं चबवा सकते आप इसको! चीख़ना-चिल्लाना बन्द कीजिये! मैं भी इस घर का मालिक हूँ। मैं दस बरस से अपने गाढ़े पसीने की कमाई आपको दे रहा हूँ। इन सब चीज़ों में (फ़र्श पर धम से पाँव पटकता है और हाथ से सभी ओर संकेत करता है) मेरा कुछ कम पैसा नहीं लगा है! जो मेहनत करता है, वही मालिक होता है...

(नील के बोलते समय पोल्या उठकर बाहर चली जाती है। दरवाज़े में प्योत्र और तत्याना सामने आते हैं। प्योत्र कमरे में झाँककर ग़ायब हो जाता है। तत्याना दरवाज़े का सहारा लेकर वहीं खड़ी रहती है)

बेस्सेमेनोव (आँखें फाड़ फाड़कर नील को घूरते हुए) : क्य...।? तुम मालिक हो? तुम?

अकुलीना इवानोव्ना : प्योत्र के पिता, चलिये यहाँ से! चलिये यहाँ से! (नील को मुक्का दिखाते हुए) ज़रा देखना तुम, नील के बच्चे! (आँसू भरकर) ज़रा देखना... तुम्हें भी मज़ा मिल जायेगा!

नील (दृढ़ता से) : हाँ, मालिक वही होता है जो मेहनत करता है... यह मत भूलियेगा!

अकुलीना इवानोव्ना (पति को अपने पीछे खींचते हुए) : चलो यहाँ से, प्योत्र के पिता! अब चलो भी! भूल जाओ इन्हें!... कुछ नहीं बोलो, चीख़ो नहीं! कौन हमारी बात सुनता है?

बेस्सेमेनोव (अपनी पत्नी की बात मानते हुए) : अच्छी बात है! बनो... मालिक! हम भी देखेंगे... कौन है मालिक! हम भी देखेंगे! (बेस्सेमेनोव और उसकी पत्नी अपने कमरे में जाते हैं)

(नील बचैनी से इधर-उधर घूमता है। कहीं दूर गली में बाजे की आवाज़ सुनाई देती है)

नील : आख़िर मैंने घुटाला कर ही दिया! मैं भी कैसा उल्लू हूँ—जाने किस शैतान ने मुझे उससे पूछने को उकसाया... लाख कोशिश करूँ, मेरे पेट में कभी कोई बात पचती ही नहीं... मुँह से निकल ही जाती है! ओह, लानत है मुझ पर...

तेतेरेव : सब ठीक है! बहुत दिलचस्प रहा। मैंने तो बड़े मजे से यह सब देखा-सुना। सचमुच बहुत अच्छा था, बहुत अच्छा था! कुछ फिक्र मत करो, मेरे नौजवान... तुम बहादुरी दिखाना खूब जानते हो, और आजकल के ज़माने में बहादुरों की बड़ी ज़रूरत है... बहुत ही ज़रूरत है! हमारे ज़माने में लोगों को दो हिस्सों में बाँटा जाना चाहिए—एक तो हैं बहादुर—यानी बेवकूफ़ और दूसरे हैं मक्कार—यानी समझदार...

नील : मैंने पोल्या को इस घिनौने तमाशे में क्यों घसीट लिया? डर गयी होगी बेचारी... नहीं, वह डर जाने वाली नहीं है! शायद नाराज़ हो गई होगी...

(पोल्या का नाम सुनकर दरवाज़े में खड़ी हुई तत्याना हिलती-डुलती है। बाजे की आवाज़ बन्द हो जाती है)

तेतेरेव : लोगों को बड़ी आसानी से बेवकूफ़ों और कमीनों में बाँटा जा सकता है। दुनिया कमीनों से भरी पड़ी है। इनके दिमाग़ जानवरों के दिमागों की तरह हैं। ये लातों के भूत हैं, सिर्फ ताकत की सचाई के सामने ही झुकना जानते हैं... वह ताक़त नहीं जो मुझमें है, वह ताकत नहीं जो मेरी छाती और मेरे मजबूत बाजू में है बल्कि मक्कारी की ताकत के सामने... मक्कारी ही दरिन्दे की अक्ल होती है।

नील (तेतेरेव की बात न सुनते हुए) : अब हमें जल्दी ही शादी करनी होगी. .. हम ऐसा ही करेंगे... उसने अभी तक मुझे जवाब नहीं दिया, मगर मैं जानता हूँ कि मेरी उस प्यारी बुलबुल का... उसका क्या जवाब होगा... कितनी घृणा करता हूँ मैं इस आदमी से... इस घर से... यहाँ की गली-सड़ी ज़िन्दगी से! यहाँ सभी... बड़े बेढंगे लोग हैं! इनमें से कोई यह अनुभव नहीं करता कि इन्होंने खुद अपनी ज़िन्दगी को बरबाद कर रखा है, छोटी-छोटी बातों से इसका हुलिया बिगाड़ दिया है... इसे एक जेलखाना बना रखा है, एक मुसीबत, एक अभिशाप में बदल डाला है... कैसे ये इसे बिगाड़ने में कामयाब हो जाते हैं? यह मेरी समझ में नहीं आता! लेकिन वे लोग मुझे फूटी आँखों नहीं सुहाते जो ज़िन्दगी का रंग-रूप बिगाड़ते हैं...

(तत्याना एक क़दम बढ़ाती है, रुक जाती है। फिर दबे पाँव कोने में पड़े हुए

सन्दूक की तरफ जाकर उस पर बैठ जाती है। वह झुकी हुई है, छोटी-सी और दयनीय हो गयी है)

तेतेरेव : सिर्फ बेवकूफ ही ज़िन्दगी को रंगीन बनाने की बात सोचते हैं। और ऐसे सिरफिरों की गिनती बहुत नहीं है। वे कुछ ऐसा खोज लेने के फेर में रहते हैं जिसकी उन्हें ज़रूरत नहीं होती, सिर्फ उन्हें ही ज़रूरत नहीं होती... वे तमाम दुनिया को खुश देखने के ख्याली घोड़े दौड़ाया करते हैं, ऐसी ही ऊट-पटाँग बातों में उलझे रहते हैं। वे दुनिया के सार को जानने-समझने के फेर में पड़े रहते हैं। मतलब यह कि बेवकूफियाँ करते हैं...

नील (विचारों में खोया-सा) : हाँ, बेवकूफियाँ! मैं इस फन का उस्ताद हूँ... वह मुझसे अधिक समझदार है... वह भी ज़िन्दगी को प्यार करती है, मगर होशियारी और समझदारी से... जानते हो, हम दोनों की बहुत अच्छी निभेगी! हम दोनों ही दिलेर हैं... अगर हमें किसी चीज़ की धुन सवार हो जाती है, तो हम उसे हासिल करके ही दम लेते हैं!... हाँ, हम उसे हासिल करके ही दम लेते हैं... वह तो जैसे हुमकते बच्चे जैसी है... **(हँसता है)** खूब गुजरेगी हम दोनों की!

तेतेरेव : बेवकूफ ही ज़िन्दगी भर यह सोचता रह सकता है कि शीशा पारदर्शी क्यों है, मगर कमीना उसी शीशे की बोतल बना लेता है...

(बाहर फिर से बाजा बजने लगता है। इस बार बहुत समीप, लगभग खिड़की के नीचे)

नील : तुम हमेशा बोतलों के बारे में ही सोचा करते हो!

तेतेरेव : नहीं, इस वक़्त बेवकूफों के बारे में सोच रहा हूँ। बेवकूफ ही यह जानने के चक्कर में रहता है कि आग जलने से पहले कहाँ होती है और बुझने के बाद कहाँ जाती है। मगर कमीना-मक्कार उसके पास बैठकर उसकी गर्मी का मज़ा लेता रहता है।

नील (सोच में डूबते हुए) : हाँ, गर्मी का मज़ा लेता रहता है...

तेतेरेव : सच तो यह है कि वे दोनों ही बेवकूफ हैं। मगर एक की बेवकूफी में खूबसूरती और बहादुरी होती है और दूसरे की बेवकूफी ठस और घटिया। बेशक दोनों के रास्ते अलग, मगर मंजिल एक होती है। दोनों ही क़ब्र की तरफ जाते हैं, क़ब्र की तरफ मेरे दोस्त... **(वह हँसता है)**

(तत्याना धीरे से सिर हिलाती है)

नील (तेतेरेव से) : तुम्हें क्या हुआ है?

तेतेरेव : हँस रहा हूँ... ज़िन्दा रह जानेवाले बेवकूफ अपने मुर्दा भाई को देखकर यह पूछते हैं कि वह कहाँ चला गया? मगर कमीने चट से उसके माल को डकार जाते हैं, मजे से खाते-पीते, मौज करते हुए सुखी ज़िन्दगी बिताते हैं... (हँसता है)

नील : खूब चढ़ा रखी है तुमने... अपने कमरे में क्यों नहीं चले जाते?

तेतेरेव : बताओ—वह है कहाँ

नील : बहुत बनो नहीं! कहो, तो मैं पहुँचा दूँ?

तेतेरेव : तुम मुझे नहीं पहुँचा सकते, मेरे भाई। न मैं मुजरिम हूँ, न किसी को मुजरिम मानता हूँ। मैं अपनी जगह खुद ही हूँ। मैं जुर्म का जीता-जागता सबूत हूँ! ज़िन्दगी तबाह हो चुकी है! तंग लिबास की तरह सिली हुई है यह... माप के मुताबिक नहीं। टुटपुंजियों ने काट-काटकर इसे और भी छोटा कर डाला है। अब इसमें दम घुटता है... और मैं हूँ इस बात का जीता-जागता सबूत कि इस दुनिया में आदमी के ज़िन्दा रहने की न कोई जगह है, न कोई वजह है और न कोई मकसद है...

नील : अब चलो, चलो भी!

तेतेरेव : तुम मुझे छोड़ दो! तुम सोचते हो कि मैं गिर पड़ूँगा? मैं तो कभी का गिर चुका हूँ बेवकूफ!... कभी का! वैसे मैंने सोचा था कि मैं फिर से अपने पैरों पर खड़ा हो जाऊँगा कि तुम पास से गुजरे और तुमने अनजाने ही, जान-बूझकर नहीं, मुझे फिर चारों खाने चित कर दिया! खैर, कोई बात नहीं, तुम बढ़ते जाओ! बढ़ते जाओ, मैं शिकायत नहीं कर रहा हूँ... तुम मजबूत हो, तुम्हें हर जगह, हर तरह से जाने का हक हासिल है... मैं तो गिर चुका हूँ, तुम्हें आगे बढ़ते देखकर तुम्हारी तारीफ करता हूँ—बढ़ते जाओ!

नील : यह तुम क्या बकबक कर रहे हो? तुम्हारी बातें हैं तो दिलचस्प, मगर इनका कोई सिर-पैर मेरी समझ में नहीं आ रहा...

तेतेरेव : और समझो भी नहीं! इसकी ज़रूरत नहीं! कुछ चीजों को न समझना ही अच्छा होता है, क्योंकि उन्हें समझने में कोई तुक नहीं होती। तुम अपने रास्ते चलते जाओ, चलते जाओ!

नील : अच्छी बात है, मैं चल दिया। **(कोने में बिल्कुल सिकुड़ी हुई तत्याना को देखे बिना ड्योढ़ी की तरफ चला जाता है)**

तेतेरेव (नील की ओर सिर झुकाकर) : तुम्हारे लिए दुआ करता हूँ, लुटेरे! अनजाने ही तुमने मेरी ज़िन्दगी की आख़िरी किरण भी लूट ली... खैर, वह भी भाड़ में जाये! **(वह मेज की तरफ जाता है, जहाँ उसने अपनी बोतल रख दी थी, और जाते हुए अचानक तत्याना को देखता है)** यह कौन है?

तत्याना (धीमे से) : मैं...

(बाजे की आवाज़ सहसा बन्द हो जाती है)

तेतेरेव : आप? हुँह... और मैंने सोचा, मुझे ऐसा लगा...

तत्याना : नहीं, यह मैं हूँ...

तेतेरेव : समझा... मगर... आप क्यों? आप यहाँ किसलिए हैं?

तत्याना (धीमे, किन्तु साफ और स्पष्ट ढंग से) : इसलिए कि मेरे ज़िन्दा रहने की न कोई जगह है, न कोई वजह है और न कोई मकसद...

(तेतेरेव धीरे-धीरे और चुपचाप उसके पास जाता है)

मैं नहीं जानती कि मैं क्यों इतनी थकी हुई हूँ, क्यों इतनी ऊब अनुभव करती हूँ?... लेकिन भयानकता की हद तक ऊब महसूस करती हूँ! मैं सिर्फ अट्ठाईस बरस की हूँ... मुझे शर्म आती है, मैं आपको विश्वास दिलाती हूँ कि मुझे अपने को इतनी कमजोर, इतनी तुच्छ महसूस करते हुए बेहद शर्म आती है... मेरी आत्मा बिल्कुल खोखली हो गयी है... उसमें सब कुछ सूख गया है, जलकर राख हो गया है... मैं यह अनुभव करती हूँ और मुझे इससे दुख होता है... मुझे यह पता तक न चला कि यह सब हुआ कैसे? किस तरह खोखलेपन ने मेरी आत्मा में अपनी जड़ जमा ली?... मगर मैं यह सब कुछ आपसे क्यों कह रही हूँ?

तेतेरेव : मैं कुछ भी नहीं समझ पा रहा हूँ... बहुत पिये हुए हूँ... मेरे पल्ले कुछ भी नहीं पड़ रहा...

तत्याना : जैसे मैं चाहती हूँ, वैसे कोई भी मुझसे बात नहीं करता... मैं कितना चाहती थी... मुझे आशा थी... कि वह मुझसे बात करेगा... मैं बहुत अरसे तक चुपचाप इन्तजार करती रही। इसी बीच यह ज़िन्दगी... ये झगड़े, हर दिन की चख-चख, ये छोटी और कमीनी बातें, घटियापन और घुटन—ये सभी चीज़ें आख़िर मुझे ले डूबीं... धीरे-धीरे, अनजाने ही इन्होंने मुझे कुचल डाला... अब मुझमें ज़िन्दा रहने की ताक़त नहीं रही... अब तो मेरी निराशा-हताशा भी बेजान हो गयी है... मैं डर गयी हूँ... अभी... अचानक ही... मैं बेहद डर गयी हूँ...

तेतेरेव (अपना सिर हिलाकर दरवाज़े की तरफ बढ़ जाता है और उसे खोलने के बाद बड़ी मुश्किल से भारी आवाज़ में कहता है) : इस घर पर गाज गिरे!... लानत है इस घर पर...

(तत्याना धीरे से अपने कमरे में चली जाती है। कुछ देर के लिए रंगमंच खाली और उस पर सन्नाटा रहता है। पोल्या दबे क़दमों से कमरे में आती है और उसके पीछे-पीछे नील आता है। दोनों चुपचाप खिड़की के पास जाते हैं और

वहाँ नील उसका हाथ पकड़कर धीमे स्वर में कहता है)

नील : आज जो भी हुआ, उसके लिए मुझे क्षमा करो... मैंने बेवकूफी और बेढंगेपन का सबूत [illegible]... मैं जब कुछ कहना चाहता हूँ, तो मुझसे चुप नहीं रहा जाता!

पोल्या (लगभग फुसफुसाते हुए) : कोई बात नहीं... अब किसी चीज़ से कोई फर्क नहीं पड़ता! मुझे उनकी परवाह ही क्या है? मेरे लिए सब बराबर है...

नील : मैं जानता हूँ कि तुम मुझे प्यार करती हो... मैं यह देख रहा हूँ.. मैं तुमसे पूछ नहीं रहा हूँ। तुम भी अजीब लड़की हो! कल मुझसे यह कहा : "मैं तुम्हें कल जवाब दूँगी, मुझे सोचना-समझना है।" हो न अजीब! सोचने-समझने की बात ही कौन-सी है—तुम तो प्यार करती हो न?

पोल्या : हाँ, हाँ, करती हूँ... एक अरसे से!...

(तत्याना दबे पाँव अपने कमरे से बाहर आती है और परदे के पीछे छिपकर इनकी बातें सुनती है)

नील : खूब निभेगी हम दोनों की! तुम इतनी अच्छी साथी हो... तुम ग़रीबी से नहीं डरतीं... मुसीबतों की कलाई मरोड़ना जानती हो...

पोल्या (सरलता से) : तुम साथ हो तो फिर डर किस बात का? यों तो मैं खुद भी किसी से नहीं डरती। मुझे ज्यादा बोलना अच्छा नहीं लगता...

नील : अपनी आन पर मर मिटनेवाली भी... मजबूत भी जिसे झुकाया नहीं जा सकता... मैं बहुत खुश हूँ... मैं जानता था कि यह ऐसे ही होगा, फिर भी मैं कितना खुश हूँ, कह नहीं सकता...

पोल्या : मैं भी यह सब पहले से जानती थी...

नील : सच? तुम भी जानती थीं? यह अच्छी बात है... कितना मजा है जीने में!... सच मज़ा है, न?

पोल्या : हाँ, मज़ा है... मेरे प्यारे, मेरे प्रियतम...

नील : कितने प्यारे शब्द कहे हैं ये तुमने... कितने अच्छे!

पोल्या : तुम तारीफ नहीं करो... अब हमें चलना चाहिए... चलना चाहिए... कहीं कोई आ न जाये...

नील : हमारी बला से!

पोल्या : नहीं, चलना चाहिए... एक बार फिर प्यार करो!

(नील पोल्या का चुम्बन लेता है। इसके बाद वह उसकी बाँहों से निकलकर तत्याना के पास से, किन्तु उसे देखे बिना भीतर भाग जाती है। उसके पीछे-पीछे मुस्कराता हुआ आनेवाला नील तत्याना को देख लेता है, हैरान होता है और गुस्से में आकर वहीं ठहर जाता है। तत्याना बुझी-बुझी आँखों से चुपचाप उसे देखती है। उसके होंठों पर व्यंग्यपूर्ण मुस्कान है)

नील (घृणा से) : जासूसी हो रही है? ताक-झाँक की जा रही है? शर्म करो!... (वह जल्दी से बाहर चला जाता है)

(तत्याना बुत बनी खड़ी रह जाती है। बाहर जाते वक़्त नील ड्योढ़ी का दरवाज़ा खुला छोड़ देता है। कमरे में बेस्सेमेनोव की कर्कश आवाज़ सुनाई देती है : "स्तेपानीदा! यहाँ कोयले किसने गिराये हैं? क्या दीदे फूटे गये हैं? जल्दी से उठाओ इन्हें!")

(परदा गिरता है)

तीसरा अंक

मंच-सज्जा पहले जैसी ही है

(सुबह का वक़्त। स्तेपानीदा फर्नीचर की झाड़-पोंछ कर रही है।)

अकुलीना इवानोव्ना (चाय के बर्तन धोती हुई कहती है) : आज कम चर्बीवाला मांस आ गया है। तुम ऐसा करो कि कल के भुने हुए मांस की जो चिकनाई बच गयी हो, उसे शोरबे में डाल देना... इससे शोरबा चर्बीवाला नज़र आने लगेगा... सुन रही हो?

स्तेपानीदा : सुन रही हूँ...

अकुलीना इवानोव्ना: मांस भूनते वक़्त घी की नदी ही नहीं बहा देना... अभी बुधवार को ही तो मैंने ढाई सेर ख़रीदा था और कल जो नज़र डाली, तो देखा कि मुश्किल से आध सेर बाक़ी था...

स्तेपानीदा : इसका मतलब है कि ख़र्च हो गया...

अकुलीना इवानोव्ना : मुझे यह बताने की ज़रूरत नहीं... तुमने डिब्बा भर तो अपने बालों की नज़र कर दिया होगा...

स्तेपानीदा : नहीं, मालकिन, मैं तो अपने बालों में लैम्प का तेल लगाती हूँ। यक़ीन न हो तो सूँघकर देख लें?

अकुलीना इवानोव्ना : बस, बस, देख लिया सूँघकर।

(ख़ामोशी)

आज सुबह तत्याना ने तुम्हें कहाँ भेजा था?

स्तेपानीदा : दवाइयों की दुकान पर... अमोनिया स्पिरिट लाने के लिए... बोली : "बीस कोपेक का ख़रीद लाओ..."

अकुलीना इवानोव्ना : लगता है फिर से सिर में दर्द हो रहा है... (आह भरती है) वह हमेशा बीमार रहती है...

स्तेपानीदा : आप उसकी शादी कर दीजिये... तब उसकी सब बीमारियाँ दूर हो जायेंगी।

अकुलीना इवानोव्ना : आजकल बेटी का ब्याह करना कोई हँसी-मज़ाक़ नहीं है... पढ़ी-लिखी हो तो और भी टेढ़ा मामला हो जाता है...

स्तेपानीदा : बहुत-सा दहेज दे दीजिये और तब पढ़ी-लिखी से भी कोई खुशी ब्याह कर लेगा...

(अपने कमरे से प्योत्र यहा झाँककर ग़ायब हो जाता है)

अकुलीना इवानोव्ना : मेरी क़िस्मत में तो वह ख़ुशी का दिन देखना नहीं लिखा... तत्याना शादी करना ही नहीं चाहती...

स्तेपानीदा (व्यंग्य से) : हाँ, हाँ, वह क्यों चाहेगी... अभी उसकी उम्र ही क्या ?

अकुलीना इवानोव्ना : ओह-हो-हो... पिछली रात उस ऊपर वाली के यहाँ न-कौन आया था?

स्तेपानीदा : वह मास्टर... वह... लाल बालोंवाला।

अकुलीना इवानोव्ना : वह, जिसकी बीवी उसे छोड़कर भाग गयी है?...

स्तेपानीदा : हाँ, हाँ, वही! और एक वह था... वह, दफ़्तर का बाबू... रियल-सा, पीले-पीले चेहरे-वाला...

अकुलीना इवानोव्ना : हाँ, जानती हूँ। वह, जिसने पीमेनोव सौदागर की नजीजी से शादी की है... उसे तो तपेदिक़ है...

स्तेपानीदा : अरे, सच... लगता तो ऐसा ही है...

अकुलीना इवानोव्ना : हमरा गवैया भी वहा था?

स्तेपानीदा : वह भी था और प्योत्र वसील्येविच भी... वह गवैया तो रात के गभग दो बजे तक गला फाड़ता रहा... साँड़ की तरह दहाड़ता रहा...

अकुलीना इवानोव्ना : प्योत्र कब लौटा था?

स्तेपानीदा : जब मैंने दरवाज़ा खोला तो भोर हो चुका था...

अकुलीना इवानोव्ना : हे भगवान...

प्योत्र (प्रवेश करते हुए) : स्तेपानीदा, जल्दी से अपना काम ख़त्म करो और लती बनो...

स्तेपानीदा : अभी... मैं भी इसे जल्दी से ख़त्म करना चाहती हूँ...

प्योत्र : चाहती हो, तो ज़बान कम चलाओ और हाथ ज़्यादा हिलाओ...

(स्तेपानीदा नाक फरफराती हुई बाहर चली जाती है)

म्मां! मैंने कितनी बार आपसे कहा है कि आप इससे बातें नहीं किया करें... ाख़िर आप यह समझतीं क्यों नहीं कि बावर्चिन के साथ अपने घरेलू मामलों की र्चा करना बहुत बुरी बात है! और फिर उससे तरह-तरह की बातें पूछना। यह

अच्छा नहीं!

अकुलीना इवानोव्ना (बुरा मानते हुए) : मैं किससे बात करूँ और किससे नहीं, इसके लिए भी मुझे तुम्हारी इजाज़त लेनी होगी? जब तुम मुझसे और अपने बाप से बात करने में अपनी हतक समझते हो तो नौकरानी से तो दो शब्द बोलने दो...

प्योत्र : मगर आप इतना क्यों नहीं समझतीं कि वह आपसे बहुत नीचे दर्जे की है? निन्दा-चुग़ली के सिवा आप उससे और कुछ तो सुनेन से रहीं!

अकुलीना इवानोव्ना : और तुमसे मुझे क्या सुनने को मिला है? छः महीने हो गये तुम्हें घर आये हुए, मगर कभी एक घण्टा भी अपनी माँ के पास बैठे हो?... मास्को के बारे में या किसी दूसरी चीज़ के बारे में कभी एक शब्द भी तो तुमने नहीं कहा...

प्योत्र : मगर सुनिये तो...

अकुलीना इवानोव्ना : और जब कभी बात करते भी हो तो सिर्फ़ दिल दुखाते हो... "वह ऐसे नहीं," "यह वैसे नहीं..." अपनी माँ को इस तरह पाठ पढ़ाते हो, इस तरह डाँटते-डपटते और उसकी ऐसे खिल्ली उड़ाते हो, जैसे वह कोई स्कूल में पढ़नेवाली छोकरी हो...

(प्योत्र हाथ झटककर ड्योढ़ी में चला जाता है। अकुलीना इवानोव्ना पीछे से कहती है)

देखो तो, कितनी बातें की हैं माँ के साथ!..

(वह सिसकती है और अपने पेशबन्द के छोर से आँखें पोछती है)

पेर्चीखिन (एक पुरानी रूईदार जाकेट पहने हुए प्रवेश करता है। जाकेट जगह-जगह से फटी हुई है और उसमें से गन्दी रूई बाहर झाँक रही है। पेटी की जगह कमर पर रस्सी बँधी है। पैरों में छाल के चप्पल हैं। और सिर पर समूर की टोपी है) : ये टसुए किसलिए बहा रही हो? क्या प्योत्र कोई खरी-खोटी सुना गया? वह मेरे पास से अबाबील की तरह फुर से निकल गया... सलाम-दुआ भी नहीं की। मेरी पोल्या यहाँ है?

अकुलीना इवानोव्ना (आह भरकर) : रसोईघर में है। पत्तागोभी काट रही है।

पेर्चीख़िन : पंछियों का तरीक़ा बहुत बढ़िया है : बच्चों के पंख निकले और यह जा, वह जा... माँ-बाप न कोई नसीहत देते हैं, न उपदेश... मेरे लिए दो घूँट चाय बच रही है क्या?

अकुलीना इवानोव्ना : शायद तुम अपनी ज़िन्दगी में भी पंछियों के इसी रंग-ढंग पर अमल करते हो?

पेर्चीख़िन : बिल्कुल, ऐसा ही करता हूँ! और सचमुच बहुत अच्छा है यह! मेरे हाथ-पल्ले कुछ भी नहीं, और न मैं किसी के आड़े आता हूँ... मानो धरती पर नहीं, हवा में जीता हूँ।

अकुलीना इवानोव्ना (उपेक्षा से) : और कोई भी तुम्हारी दो कौड़ी की इज़्ज़त नहीं करता। यह लो चाय... मगर यह ठण्डी और हल्की है...

पेर्चीख़िन (गिलास को रोशनी के पास ले जाकर) : हाँ, तेज़ तो नहीं, लेकिन शुक्रिया कि गिलास खाली नहीं... अगर तेज़ होती तो शायद यही सिर पर सवार हो बैठती... रही इज़्ज़त की बात, तो इज़्ज़त न करने की मेहरबानी कीजिये... मैं ख़ुद भी किसी की इज़्ज़त नहीं करता...

अकुलीना इवानोव्ना : किसे ज़रूरत है तुम्हारी इस इज़्ज़त की? किसी को नहीं...

पेर्चीख़िन : यह बहुत ख़ुशी की बात है!.. मैं देखता हूँ कि जो लोग धरती से अपनी रोटी पाते हैं, वे एक दूसरे के मुँह से निवाला निकालते हैं। मगर मेरी ख़ुराक तो आसमान से आती है... स्वर्ग की चिड़ियाँ लाती हैं... इसलिए मेरे मामले में कोई लूट-खसोट नहीं!

अकुलीना इवानोव्ना : क्या शादी जल्दी ही होने जा रही है?

पेर्चीख़िन : किसकी? मेरी? वह कोयल जो मेरी बीवी बन सकती थी, अभी तक हमारे जंगलों में नहीं आई। आवारा कहीं की!... लगता है कि बहुत देर कर रही है... उसके आने तक मैं ज़िन्दा नहीं रह पाऊँगा—चल बसूँगा...

अकुलीना इवानोव्ना : यह बकवास बन्द करो। साफ़-साफ़ बताओ, कब शादी कर रहे हो?

पेर्चीख़िन : किसकी?

अकुलीना इवानोव्ना : बेटी की! बन तो ऐसे रहे हो, जैसे कुछ जानते ही नहीं... अरे, वाह!

पेर्चीख़िन : बेटी की? जब भी वह चाहे... मगर कोई दूल्हा भी तो हो...

अकुलीना इवानोव्ना : क्या बहुत दिनों से उनमें यह आँख-मिचौनी चल रही थी?

पेर्चीख़िन : कैसी आँख-मिचौनी? किनमें?

अकुलीना इवानोव्ना : तुम बनो नहीं, मसखरे कहीं के! कम से कम तुम्हें तो उसने सब कुछ बताया होगा...

पेर्चीख़िन : किस बारे में?

अकुलीना इवानोव्ना : शादी के बारे में...

पेर्चीख़िन : किसकी शादी के बारे में?

अकुलीना इवानोव्ना : बेड़ा ग़र्क़ तुम्हारा! कुछ तो शर्म करो ऐसे ढोंग करते हुए!

पेर्चीख़िन : सुनो! तुम बिगड़ो नहीं... साफ़-साफ़ बताओ कि क़िस्सा क्या है?

अकुलीना इवानोव्ना : तुमसे तो बात करने को मन नहीं होता...

पेर्चीख़िन : लेकिन बात तो तुम कर रही हो... वह भी कितनी देर से और बेकार...

अकुलीना इवानोव्ना (ईर्ष्या और रूखेपन से) : नील से पोल्या की शादी कब कर रहे हो?

पेर्चीख़िन (हैरानी से उछलते हुए) : क्या? नील से? हो-हो!

अकुलीना इवानोव्ना : क्या सचमुच उसने तुम्हें कुछ नहीं बताया? कैसा ज़माना आ गया है!... अपने बाप तक से नहीं कहा...

पेर्चीख़िन (प्रसन्न होकर) : यह तुम क्या कह रही हो? मज़ाक़ कर रही हो न? नील? ओह, अच्छे-ख़ासे लंगूर हैं दोनों? सच? अरी, वाह री, पोल्या, तुमने तो पोल्का नाच का सा रंग बाँध दिया! पोल्का का ही नहीं, उससे बढ़कर क्वाड्रिल नाच का... तुम मेरा उल्लू तो नहीं बना रही हो? शैतान के चरखे न हों तो! खूब कमाल किया! मैं तो यह सोचे बैठा था कि नील तत्याना से शादी करेगा... क़सम खाने को तैयार हूँ! लग तो ऐसा ही रहा था...

अकुलीना इवानोव्ना (बिगड़ते हुए) : जैसे कि हम तत्याना की उससे शादी कर देते! ऐसे निकम्मे से...

पेर्चीख़िन : नील निकम्मा? यह तुम क्या कहती हो! मेरी तो अगर दस बेटियाँ होतीं तो मैं आँखें मूँदकर सभी उसे सौंप देता! नील निकम्मा?... वह तो अकेला ही सौ आदमियों का पेट भर सकता है। वह नील तो? हो-हो!

अकुलीना इवानोव्ना (व्यंग्यपूर्वक) : देखती हूँ कि नील का ससुर तो खूब बढ़िया होगा! बहुत ही बाँका!

पेर्चीख़िन : ससुर? हो-हो! यह ससुर न तो नील और न किसी दूसरे के लिए बोझ बनना चाहता है! समझीं! मेरी टाँगें तो ख़ुशी के मारे नाचने को मचल रही हैं... अब मैं एक परिन्दे की तरह आज़ाद हूँ। अब तो खूब मज़े से बीतेगी मेरी ज़िन्दगी! किसी को मेरी झलक भी नहीं मिलेगी...बस, जंगल में जाकर डेरा डाल लूँगा और—लो, गायब हो गया पेर्चीख़िन! यह पोल्या भी खूब लड़की है! कभी मैं सोचा करता था—मेरी इस बेटी का क्या होगा? यह ख़्याल आने पर मेरी आत्मा मुझे धिक्कारने लगती थी... उसे इस दुनिया में तो लाया, लेकिन इसके सिवा और कुछ नहीं कर सका!.. मगर अब...अब तो जिधर चाहूँगा, उधर ही चला जाऊँगा! जन्नत की चिड़िया की तलाश में सारी दुनिया की खाक छान मारूँगा!

अकुलीना इवानोव्ना : चले कैसे जाओगे! ख़ुशक़िस्मती से भी कोई दूर भागता है...

पेर्चीख़िन : ख़ुशक़िस्मती? मेरी ख़ुशक़िस्मती यही है कि यहाँ से चलता बनूँ... और पोल्या तो सुखी रहेगी... ज़रूर सुखी रहेगी! नील के साथ? क्या इसमें भी कोई शक हो सकता है? कैसा तगड़ा, हँसमुख और सीधा-सादा है वह!... मेरा तो दिमाग़ भी ख़ुशी से नाच रहा है... दिल में चिड़ियाँ चहचहा रही हैं! ओह, कितना ख़ुशक़िस्मत हूँ मैं! **(नाचते हुए)** पोल्या ने नील को फाँस लिया, बहुत ही बढ़िया काम किया... वाह, री, वाह। तूने बढ़िया काम किया!

बेस्सेमेनोव (प्रवेश करता है। वह कोट पहने है और हाथ में टोपी लिये हुये है) : फिर नशे में हो!

पेर्चीख़िन : ख़ुशी के नशे में हूँ! सुना तुमने? पोल्या के बारे में **(ख़ुशी से हँसता है)** वह नील से शादी करने जा रही है! क्यों, कैसी रही? मज़ा आ गया न?

बेस्सेमेनोव (कठोरता और रूखेपन से) : हमें इससे कोई मतलब नहीं... हम तो उससे अपनी कौड़ी-कौड़ी वसूल कर लेंगे...

पेर्चीख़िन : और मैं तो यही सोचता था कि नील तत्याना से शादी करेगा...

बेस्सेमेनोव : क्या?

पेर्चीख़िन : क़सम खाकर कहता हूँ! क्योंकि साफ़ नज़र आ रहा था कि तत्याना उसे चाहती है... और कैसे वह उसे देखती थी... कुछ ऐसे, जानते हो न यह आँखों की निशानेबाज़ी कैसे होती है...और फिर अचानक ही...

बेस्सेमेनोव (गुस्से से, मगर शान्त रहते हुए) : मैं तुमसे यह कहना चाहता हूँ, प्यारे...बेशक तुम हो पाजी, लेकिन तुम्हें इतना तो समझना चाहिए कि किसी लड़की के बारे में ऐसी घटिया बातें कहना अच्छा नहीं। यह तो रही पहली बात! **(आवाज़ ऊँची करते हुए)** अब आगे सुनो। तुम्हारी बेटी किसे और कैसे ताकती-झाँकती थी, कौन उसे और कैसे घूरता था और वह किस क़िस्म की लड़की है, मैं इसका ज़िक्र नहीं करूँगा, सिर्फ़ इतना ही कहूँगा—अगर वह नील से शादी करती है, तो वह इससे ज़्यादा और किसी के लायक़ नहीं। क्योंकि उन दोनों की एक कौड़ी क़ीमत नहीं। बेशक मैंने उन दोनों पर बहुत एहसान किये हैं, मगर अब मैं उन पर थूकता हूँ! यह हुई दूसरी बात! और अब आगे सुनो—चाहे तुम मेरे दूर के रिश्तेदार हो, मगर ज़रा अपनी सूरत तो देखो—क्या लगते हो? बिल्कुल उठाईगीरे! ऐसे हुलिये में तुम्हें किसने एक साफ़-सुथरे घर में आने की इजाज़त दी... इन चिथड़ों में, इन गँवारू चप्पलों में, ऐसी बाँकी सजधज में?

पेर्चीख़िन : यह तुम्हें हो क्या गया है, वसीली वसीलयेविच? यह तुम कह क्या रहे हो? क्या मैं पहली बार ऐसे हुलिये में यहा आया हूँ...

बेस्सेमेनोव : कितनी बार तुम यहा आये हो, मैंने इसकी गिनती नहीं की और न ऐसा करने का मेरा इरादा है। मगर एक बात जानता हूँ—अगर तुम ऐसा हुलिया बनाकर यहा आते हो तो इसका यह मतलब है कि तुम इस घर के मालिक की ज़रा भी इज़्ज़त नहीं करते। मैं फिर कहता हूँ—तुम हो क्या? भिखमंगे, एक उठाईगीरे, आवारा... सुना तुमने यह हुई तीसरी बात! और अब दफ़ा हो जाओ यहा से!

पेर्चीख़िन (भौचक्का-सा) : वसीली वसील्येविच! किसलिए? क्या किया है मैंने?..

बेस्सेमेनोव : दफ़ा हो जाओ! बकवास बन्द करो...

पेर्चीख़िन : तुम होश में आओ! मैंने तुम्हारा कुछ भी तो नहीं बिगाड़ा...

बेस्सेमेनोव : क्या कहा है मैंने?! निकल जाओ... नहीं तो...

पेर्चीख़िन (बाहर जाते हुए तिरस्कार और खेद से) : शर्म करो, बुड्ढे! तरस आ रहा है मुझे तुम पर! तो विदा!

(बेस्सेमेनोव कन्धों को सीधे करके चुपचाप भारी और दृढ़ क़दमों से कमरे में टहलता है। उसके चेहरे पर कठोरता और खिन्नता है। अकुलीना इवानोव्ना चाय के बर्तन धोते हुए सहमी नज़रों से पति को देखती जाती है। उसके हाथ काँप रहे हैं और वह कुछ बुदबुदाती जा रही है।)

बेस्सेमेनोव : यह तुम क्या बुदबुदा रही हो? क्या कोई जादू-टोना कर रही हो?...

अकुलीना इवानोव्ना : भगवान का नाम ले रही हूँ, प्योत्र के पिता... भगवान का...

बेस्सेमेनोव : लगता है कि... इस बार मैं मुखिया न हो सकूँगा। ऐसा ही लगता है... बुरा हो इन कमीनों का!

अकुलीना इवानोव्ना : यह तुम क्या कह रहे हो? हाय राम... यह मैं क्या सुन रही हूँ!... भला क्यों? हो सकता है कि...

बेस्सेमेनोव : क्या—हो सकता है? वह मिस्तरियों के संघ का चौधरी... वह फ़्योदोर दोसेकिन... वह मुखिया की कुर्सी पर नज़र लगाये बैठा है... कल का छोकरा! लौंडा!

अकुलीना इवानोव्ना : हो सकता है कि वह चुना ही न जाये... अभी से मन छोटा न करो...

बेस्सेमेनोव : वे उसे ही चुनेंगे... आसार बिल्कुल ऐसे ही हैं...आज जब मैं वहा पहुँचा तो वह बैठा अपना गाना गा रहा था, दून की हाक रहा था। कह रहा था : "बहुत बुरा वक़्त आ गया है, हवा का रुख़ हमारे ख़िलाफ़ है, हमें मिल-जुलकर हर क़दम उठाना होगा, कारीगरों, दस्तकारों को मिलकर हर क़दम उठाना होगा, हर मुश्किल का सामना करना होगा... तो फ़ैक्टरियाँ बनती जा रही हैं, हम कारीगरों के लिए अपनी एक-एक ईंट की मस्जिद बनाना ठीक नहीं।" मैंने कहा : "इस सबके लिए यहूदी ज़िम्मेदार हैं! उन्हें लगाम लगानी चाहिए! हमें उनके ख़िलाफ़ गवर्नर से शिकायत करनी चाहिए—वे हम रूसियों को कहीं भी आगे नहीं बढ़ने देते। हमें गवर्नर से कहना चाहिए कि वे उन्हें शहर से चलता कर दें।"

(तत्याना धीरे से दरवाज़ा खोलती है और फिर दबे पाँवों लड़खड़ाती हुई अपने कमरे में चली जाती है)

उसने अपनी शैतान जैसी मुसकान के साथ पूछा : "मगर हम उन रूसियों का क्या करें जो यहूदियों से भी गये-बीते हैं?" और बड़ी सावधानी से शब्द चुनते हुए मुझे अपना निशाना बनाने लगा... मैंने ऐसे ज़ाहिर किया मानो कुछ न समझता होऊँ, मगर यह महसूस कर रहा था कि उसका इशारा किसकी तरफ़ है। कमीना कहीं का! कुछ देर उसकी बातें सुनकर मैं दूसरी तरफ़ को टल गया... कोई बात नहीं बच्चू, मैंने सोचा—अगर तुम्हारा भुरता बनाकर न छोड़ूँ, तब कहना... तभी चूल्हे बनानेवाला मिख़ाईल क्र्यूकोव मेरे पास आकर बोला : "लगता है कि मुखिया तो दोसेकिन को ही होना चाहिए..." इतना कहकर उसने घबराते हुए मुँह फेर लिया। मुझसे आँखें मिलाने की हिम्मत न हुई उसे... मेरा मन हुआ कि उसे कहूँ : "अरे ओ, हरामी छोटे मुँह बड़ी बात करते हो, कुत्ते की दुम..."

येलेना (प्रवेश करती है) : नमस्ते, वसीली वसील्येविच! नमस्ते, अकुलीना इवानोव्ना...

बेस्सेमेनोव (रूखेपन से) : ओह... आप?.. कहिये... क्या बात है?

येलेना : किराया लायी हूँ...

बेस्सेमेनोव (कुछ नरम होकर) : नेकी और पूछ-पूछ... कितने पैसे हैं? पच्चीस रूबल... गलियारे की खिड़की के शीशों के चालीस कोपेक और आपकी नौकरानी ने कबाड़खाने की जो चूल तोड़ दी थी, उसके लिए भी कुछ देना होगा... शायद बीस कोपेक...

येलेना (व्यंग्यपूर्वक हँसते हुए) : हिसाब के मामले में आप... बहुत पक्के हैं, मगर मेरे पास रेज़गारी नहीं है...यह तीन रूबल का नोट लीजिए...

अकुलीना इवानोव्ना : आपने कोयले का एक बोरा भी तो लिया था... मेरा मतलब, आपकी नौकरानी ने।

बेस्सेमेनोव : उसके कितने पैसे हैं?

अकुलीना इवानोव्ना : पैंतीस कोपेक...

बेस्सेमेनोव : तो कुल मिलाकर हो गये पचानवे कोपेक... बाक़ी यह लीजिये—दो

रूवल पाँच कोपेक... रही हिसाब में पक्का होने की बात, तो आप सोलह आने सही हैं, देवी जी। सारी दुनिया ही हिसाब से चल रही है। इस दुनिया के पहले दिन से ही सूरज ठीक वक़्त पर निकलता है और ठीक वक़्त पर छिपता है... आसमान का हिसाब-किताब इतना बढ़िया है तो धरती पर भी ऐसा होना चाहिए... अब आप अपने को ही ले लीजिए—हमेशा वक़्त पर किराया अदा कर देती हैं...

येलेना : मुझे किसी के क़र्ज़ तले रहना पसन्द नहीं...

बेस्सेमेनोव : यह बहुत अच्छी बात है! इसीलिए सब आप पर भरोसा करेंगे...

येलेना : अच्छा तो, मैं चल दी! नमस्ते...

बेस्सेमेनोव : नमस्ते। **(उसे जाते हुए देखता है और फिर कहता है)** कमबख़्त है तो बड़ी प्यारी! फिर भी मैं बहुत खुशी से उसे अपने घर से निकाल बाहर करना चाहूँगा...

अकुलीना इवानोव्ना : यह तो बहुत अच्छा हो, प्योत्र के पिता....

बेस्सेमेनोव : मगर यह भी ध्यान में रखो... जब तक वह यहाँ है, हम इस पर नज़र रख सकते हैं। अगर वह कहीं दूसरी जगह चली जाती है तो प्योत्र वहाँ उसके पास चक्कर काटने लगेगा। हमारी नज़र से दूर होने पर तो वह और भी आसानी से उसे फाँस लेगी... फिर तुम्हें यह भी न भूलना चाहिए कि वह हमेशा ठीक वक़्त पर किराया अदा कर देती है... टूट-फूट के लिए पैसे देने में भी कभी चूं नहीं करती... हाँ, प्योत्र को लेकर ज़रूर डर लगता है... बहुत ज़्यादा डर लगता है...

अकुलीना इवानोव्ना : मुमकिन है कि वह उससे शादी करने का इरादा न रखता हो। बस, योंही ज़रा...

बेस्सेमेनोव : अगर हमें यह मालूम हो जाता, तो बात ही ख़त्म हो जाती, हमारे मन पर बड़ा बोझ न रहता। हम मज़े की नींद सो सकते... चकलों में मारे-मारे फिरने के बजाय वह घर पर ही जी खुश कर ले, यह कहीं ज़्यादा अच्छा है...

(तत्याना के कमरे से खरखरी-सी कराह सुनाई देती है)

अकुलीना इवानोव्ना (धीमे से) : यह आवाज़ सुनी?

बेस्सेमेनोव (धीमे से) : यह क्या है?

अकुलीना इवानोव्ना (खुसुर-फुसुर करती है और बेचैनी से इधर-उधर देखती रहती है, मानो कुछ सुन रही हो) : यह आवाज़ शायद ड्योढ़ी से आयी है...

बेस्सेमेनोव (ऊँची आवाज़ में) : शायद बिल्ली होगी...

अकुलीना इवानोव्ना (झिझकते हुए) : प्योत्र के पिता! मैं तुमसे... कुछ कहना चाहती थी...

बेस्सेमेनोव : तो कहो भी...

अकुलीना इवानोव्ना : क्या पेर्चीख़िन के साथ आज तुम कुछ ज़्यादा ही बुरी तरह पेश नहीं आये? वह तो किसी का कुछ बुरा नहीं करता...

बेस्सेमेनोव : बुरा नहीं करता तो बुरा भी नहीं मानेगा... अगर बुरा मान जाएगा तो भी हमारा कुछ नहीं जायेगा... उसकी दोस्ती से हमारी शान थोड़े ही बढ़ती है...

(कराहने की आवाज़ फिर से और पहले से अधिक ऊँची सुनाई देती है)

यह कौन कराह रहा है तत्याना की माँ?..

अकुलीना इवानोव्ना (घबराकर) : मैं नहीं जानती... कौन हो सकता है?... कौन?...

बेस्सेमेनोव (प्योत्र के कमरे की तरफ़ दौड़ते हुए) : यहाँ कोई है? प्योत्र

अकुलीना इवानोव्ना (बेहद डरी हुई सी उसके पीछे भागती है) : प्योत्र! प्योत्र... प्योत्र...

तत्याना (खरखरी आवाज़ से पुकारती है) : मुझे बचाइये... अम्माँ... मुझे बचाइये... बचाइये...

(बेस्सेमेनोव और अकुलीना इवानोव्ना प्योत्र के कमरे से तत्याना के कमरे की तरफ़ भागते हैं। दोनों चुप हैं। दरवाज़े पर वे मानो झिझकते हुए घड़ी भर को रुकते हैं। फिर दोनों एकसाथ दरवाज़े की तरफ़ लपकते हैं। उन्हें तत्याना की चीखें सुनाई देती हैं)

ओह, मेरा... कलेजा जला जा रहा है! बेहद दर्द हो रहा है... पानी! पानी दीजिये!... मुझे बचाइये!..

अकुलीना इवानोव्ना (भागकर कमरे से बाहर आती है और ड्योढ़ी मे खड़ी होकर चिल्लाने लगती है) : भले लोगो, मदद करो! मदद! प्योत्र...

(तत्याना के कमरे से बेस्सेमेनोव की घबरायी-सी आवाज़ सुनाई देती है—"क्या बात है बिटिया?.. क्या हुआ?.. क्या हो गया तुम्हें... बिटिया?")

तत्याना : पानी... मेरी जान निकल रही है... सब कुछ जला जा रहा है... हे भगवान!

अकुलीना इवानोव्ना : जल्दी से आइये... जल्दी से... भले लोगो...

बेस्सेमेनोव (कमरे के भीतर से) : भागकर जाओ... डाक्टर को बुला लाओ..

प्योत्र (भागकर आते हुए) : क्या हुआ? क्या हो गया?

अकुलीना इवानोव्ना (उसकी आस्तीन पकड़कर हाँफते हुए) : तत्याना... वह

मर रही है...

प्योत्र (अपने को छुड़ाते हुए) : मुझे छोड़िये... छोड़ दीजिये...

तेतेरेव (कोट पहनते हुए अन्दर आता है) : क्या हुआ? क्या आग लग गयी?

बेस्सेमेनोव : डाक्टर!.. जल्दी से डाक्टर को बुला लाओ, प्योत्र... उसे पच्चीस रुबल दे देना!..

प्योत्र (तत्याना के कमरे से दौड़ता हुआ बाहर आता है और तेतेरेव से कहता है) : डाक्टर! जल्दी से डाक्टर को लेकर आइये... कहिये–ज़हर पी लिया है... औरत ने... जवान लड़की ने... अमोनिया स्पिरिट... जल्दी जाइये! जल्दी से!

(तेतेरेव ड्योढ़ी की तरफ़ दौड़ता है)

स्तेपानीदा (भागकर भीतर आती है) : हे भगवान... हे भगवान...

तत्याना : प्योत्र... मैं जली जा रही हूँ! मैं मर रही हूँ!... मैं जीना चाहती हूँ! जीना... पानी दीजिये!

प्योत्र : कितनी अमोनिया स्पिरिट पी है तुमने? कब पी है? बोलो...

बेस्सेमेनोव : मेरी बिटिया... मेरी प्यारी गुड़िया...

अकुलीना इवानोव्ना : हाय, यह तुमने क्या कर लिया, अपनी जान पर यह आफ़त क्यों ले आई, मेरी लाड़ली बिटिया!

प्योत्र : अम्माँ, आप यहा से चली जाइये... स्तेपानीदा, इन्हें बाहर ले जाओ... मैं कहता हूँ, चली जाइये...

(येलेना भागती हुई तत्याना के कमरे में जाती है)

माँ को बाहर ले जाइये...

(एक बुढ़िया आती है, दरवाज़े में खड़ी रहकर कमरे में झाँकती और कुछ बड़बड़ाती है)

येलेना (अकुलीना इवानोव्ना को कमरे से बाहर ले जाती हुई बुदबुदाती है) : घबराने की कोई बात नहीं... ख़तरे का मामला नहीं है...

अकुलीना इवानोव्ना : मेरी लाड़ली! मेरी प्यारी बिटिया... किस चीज़ से मैंने तुम्हारा दिल दुखाया है? किस बात से नाराज़ कर दिया मैंने तुम्हें?

येलेना : चिन्ता की कोई बात नहीं है... सिर्फ़ डाक्टर के आने की देर है... सब ठीक हो जायेगा... ओह, कैसी मुसीबत आ गयी!

बुढ़िया (अकुलीना इवानोव्ना की दूसरी बाँह थामते हुए) : ऐसे घबराइये नहीं! इससे भी कहीं बुरी बातें हो जाती हैं... ओह, बेचारी... वह सौदागर है न, सितानोव... उसके कोचवान पर घोड़े ने ऐसी दुलत्ती चलाई कि आँतें ही बाहर निकल आयीं...

अकुलीना इवानोव्ना : मेरी प्यारी बिटिया...तुम्हारे बिना मैं कैसे जीती रहूंगी? मेरी इकलौती बिटिया...

(उसे बाहर ले जाया जाता है। तत्याना के कमरे में उसकी चीख़ों के साथ उसके बाप की खरखरी आवाज़ और बीच-बीच में प्योत्र के असम्बद्ध और घबराये हुए शब्द सुनाई देते रहते हैं। कोई बर्तन खनकता है, कुर्सी उलट जाती है, पलंग के स्प्रिंगों की आवाज़ सुनाई देती है, तकिया धीरे से फ़र्श पर गिरता है। घबरायी, मुँह बाये और आँखें फाड़े स्तेपानीदा बार-बार भागी हुई आती है, अलमारी से तश्तरियाँ और प्याले निकालती है और हर बार कोई न कोई चीज़ तोड़ देती है। ड्योढ़ी के दरवाज़े में बहुत-से लोगों के चेहरे दिखाई देते हैं, मगर कोई भी भीतर आने की हिम्मत नहीं करता। किसी रंगसाज़ का शार्गिद छोकरा दरवाज़े में से फुदककर तत्याना के कमरे में झाँकता है, उसी वक़्त लौट आता है और फुसफुसाकर ऊँचे-ऊँचे कहता है–"वह मर रही है!" अहाते में बाजे पर कोई धुन बजने लगती है, लेकिन अगले ही क्षण बन्द हो जाती है। ड्योढ़ी से धीमी-धीमी भनभनाहट सुनाई देती है–"मार ही डाला? बाप ने... उसने ख़बरदार कर दिया था–सम्भल जाओ, लड़की!.. सिर पर चोट की... किस चीज़ से, मालूम है? झूठ क्यों बोल रहे हो–उसने खुद ही अपना गला काट लिया है..." कोई औरत पूछती है–"शादीशुदा थी?" कोई हमदर्दी से "च-च" करता है)

बुढ़िया (बेस्सेमेनोव के कमरे से बाहर आती है, मेज़ के पास से गुज़रती हुई एक मीठी रोटी उठाकर अपनी शाल में छिपा लेती है और दरवाज़े के पास आकर कहती है) : शोर नहीं करें! वह आख़िरी साँसें गिन रही है!..

पुरुष की आवाज़ : उसका नाम क्या है?

बुढ़िया : लिज़ावेता...

नारी की आवाज़ : किसलिए उसने ऐसा किया?..

बुढ़िया : बहुत दिन पहले धार्मिक पर्व के वक़्त उसने उससे कहा था–"लिज़ावेता..."

(भीड़ में हलचल होती है। डाक्टर और तेतेरेव प्रवेश करते हैं। डाक्टर अपना कोट और टोप उतारे बिना सीधे तत्याना के कमरे में चला जाता है। तेतेरेव कमरे में झाँककर माथे पर बल डाले हुए एक तरफ़ को हट जाता है। तत्याना के कमरे

से कराहें और कुछ आवाज़ें सुनाई देती रहती हैं। बेस्सेमेनोव के कमरे से अकुलीना इवानोव्ना का बिलखना और चिल्लाना सुनाई देता है—"मुझे जाने दो! मुझे उसके पास जाने दो!" ड्योढ़ी में जमा भीड़ के दबे-घुटे शोर में से कुछ ऐसा सुनाई देता है—"यह गम्भीर आदमी है... यह भजन-मण्डली का गायक... सच?... हाँ, वही है।")

तेतेरेव (ड्योढ़ी की तरफ़ जाते हुए) : तुम सब यहाँ क्या कर रहे हो? चलो, भागो यहा से! सुना?

बुढ़िया (दरवाज़े के पास आकर) : जाओ, जाओ, भले लोगो... तुम्हारा कुछ मतलब नहीं है यहाँ...

तेतेरेव : तुम खुद कौन हो? क्या चाहिए तुम्हें?..

बुढ़िया : भैया, मैं कुंजड़न हूँ... हरे प्याज़, खीरे...

तेतेरेव : तुम्हे क्या चाहिए?

बुढ़िया : भैया, मैं सेम्यागिना के यहाँ जा रही थी... वह मेरी रिश्तेदार है...

तेतेरेव : तो? मैं पूछता हूँ, तुम्हें यहाँ क्या लेना-देना है?

बुढ़िया : मैं पास से जा रही थी... शोर सुनाई दिया... सोचा, कहीं आग लग गयी है...

तेतेरेव : फिर?

बुढ़िया : भीतर चली आयी... देखूँ कि क्या मुसीबत आ गयी है...

तेतेरेव : चलो यहाँ से... तुम सब लोग यहा से चलते-फिरते नज़र आओ! चलो, भागो ड्योढ़ी से!..

स्तेपानीदा (भागती हुई आकर तेतेरेव से कहती है) : पानी की एक बालटी ले आओ... जल्दी से!

(एक सफ़ेद दाढ़ी वाला बूढ़ा कमरे में झाँकता है। उसके चेहरे पर रूमाल बँधा हुआ है, वह तेतेरेव को आँख से इशारा करके कहता है—"महानुभाव! इसने तुम्हारी मेज से एक मीठी रोटी उड़ा ली है..." तेतेरेव ड्योढ़ी में जाकर लोगों को धकेलता हुआ बाहर निकालता है। शोर और गड़बड़। कोई छोकरा चिल्लाता है—"ऊई-ऊई!" कोई हँसता है, कोई बुरा मानते हुए कहता है—"भई, धक्के मत दो!")

तेतेरेव (दिखाई न देता हुआ) : दफ़ा हो जाओ! भागो!

प्योत्र (दरवाज़े में से सिर निकालकर) : शोर नहीं करो... (कमरे की तरफ मुँह करके) जाइये, पिता जी, अम्माँ के पास जाइये! जाइये भी! (ड्योढ़ी में चिल्लाकर कहता है) किसी को भी भीतर मत आने दीजिये!...

(बेस्सेमेनोव लड़खड़ाता हुआ तत्याना के कमरे से बाहर आता है। मेज के पास पहुँचकर धम से कुर्सी पर बैठ जाता है और कुछ क्षण तक बहकी-बहकी नज़र से अपने सामने ताकता रहता है। इसके बाद उठकर अपने कमरे की तरफ जाता है, जहाँ से अकुलीना इवानोव्ना और येलेना की आवाज़ें सुनाई दे रही हैं)

अकुलीना इवानोव्ना : क्या मैं उसे प्यार नहीं करती थी! क्या मैं उसे अपने दिल का टुकड़ा नहीं मानती थी?

येलेना : कृपया धीरज से काम लीजिये... मेरी प्यारी...

अकुलीना इवानोव्ना : प्योत्र के पिता! प्योत्र के पिता! ओह, मेरे प्यारे...

(दरवाज़ा बन्द होने से पूरी बात सुनाई नहीं देती। बड़ा कमरा अब खाली है। उसमें दोनों तरफ से शोर सुनाई देता है। बेस्सेमेनोव के कमरे से आवाज़ें और तत्याना के कमरे से धीमी-धीमी बातचीत, तत्याना की आहें-कराहें और उसकी देखभाल करनेवालों का हल्का शोर सुनाई देता है। तेतेरेव पानी की बाल्टी लाकर तत्याना के कमरे के बाहर रखता है और बहुत धीरे से दस्तक देता है। स्तेपानीदा दरवाज़ा खोलकर बाल्टी भीतर ले जाती है और फिर माथे का पसीना पोंछती हुई बड़े कमरे में आती है)

तेतेरेव : कैसा हाल है उसका?

स्तेपानीदा : लगता है कि सब ठीक हो जायेगा...

तेतेरेव : डाक्टर ने ऐसा कहा है?

स्तेपानीदा : हाँ। मगर यह भी कोई बात हुई... (निराशा से हाथ झटकती है) माँ-बाप को भीतर जाने से मना कर दिया है...

तेतेरेव : वह अब पहले से अच्छी है?

स्तेपानीदा : भगवान जाने! कराहना तो बन्द कर दिया है... चेहरा एकदम पीला हो गया है...और आँखें ऐसी बड़ी-बड़ी हो गयी हैं... बिल्कुल बेजान-सी पड़ी है... (तिरस्कार से फुसफुसाती है) मैंने उनसे कहा था... कितनी बार उनसे कहा था—इसका ब्याह कर दें! इसकी शादी कर डालें! मेरी नहीं सुनी... देख लिया उसका नतीजा! तगड़ी, जवान लड़की इस उम्र तक बिन ब्याही बैठी रहे, यह भी कोई बात हुई?... फिर न तो पूजा-पाठ से कोई मतलब, न धर्म-कर्म से वास्ता... तो यह है इस सबका फल!

तेतेरेव : बन्द करो अपनी काँय-काँय!

येलेना (इस कमरे में आकर) : कैसी है, कैसी है तत्याना?

तेतेरेव : मालूम नहीं... डाक्टर ने कहा है कि ख़तरे की कोई बात नहीं...

येलेना : माँ-बाप को बहुत बड़ा सदमा पहुँचा है!.. उन पर तरस आता है!..

(तेतेरेव कोई जवाब दिये बिना कन्धे झटककर रह जाता है)

स्तेपानीदा (कमरे से बाहर भागते हुए) : हे भगवान! मैं चूल्हे-चौके को तो भूल ही गयी...

येलेना : आख़िर उसने ऐसा किया क्यों? क्या बात हो गयी थी? बेचारी तत्याना... बहुत तकलीफ हो रही होगी उसे... (अजीब-सी सूरत बनाती है और काँपती है) ज़रूर बहुत तकलीफ हुई होगी? बहुत ज्यादा? दिल काँप उठता है न?

तेतेरेव : मालूम नहीं। अमोनिया स्पिरिट मैंने कभी नहीं पी...

येलेना : आपको इस वक़्त भी मजाक करने की कैसे सूझ सकती है?

तेतेरेव : मैं मजाक़ नहीं कर रहा हूँ...

येलेना (प्योत्र के कमरे के पास जाकर उसमें झाँकती है) : और प्योत्र... प्योत्र वसील्येविच अभी भी उसके कमरे में है?

तेतेरेव : लगता तो ऐसा ही है... क्योंकि वहाँ से बाहर नहीं आया...

येलेना (सोच में डूबते हुए) : मैं कल्पना कर सकती हूँ कि उसके दिल पर क्या बीत रही होगी!..

(खामोशी)

जब कभी मैं... जब कभी मैं... कोई ऐसी बात देखती हूँ तो मैं... ओह, मैं दुख-मुसीबतों से बेहद नफरत करती हूँ...

तेतेरेव (मुस्कराते हुए) : यह तो तारीफ की बात है...

येलेना : आप समझते हैं मेरा मतलब? मन चाहता है कि मैं इन्हें ऐसे पकड़ लूँ, पैरों तले दबाकर रौंद डालूँ... बस, हमेशा के लिए!

तेतेरेव : दुख-मुसीबतों को?

येलेना : हाँ! मैं उनसे डरती नहीं हूँ, नफ़रत करती हूँ! मुझे हँसी-खुशी की, रंग-रंगीली ज़िन्दगी बिताना पसन्द है, मैं चाहती हूँ कि मेरे चारों ओर लोग ही लोग हों... मैं यह गुर जानती हूँ, कि कैसे अपनी और अपने आस-पास के लोगों की ज़िन्दगी आसान, सुहानी और खुशीभरी बनाऊँ,...

तेतेरेव : वाह! बड़ी तारीफ की बात है!

येलेना : एक और बात भी बताऊँ? मैं आपके सामने यह स्वीकार करती हूँ.... मैं कठोर हूँ... बेहद संगदिल! मुझे क़िस्मत के मारे लोग ज़रा भी अच्छे नहीं लगते। कुछ ऐसे लोग भी हैं जो हमेशा क़िस्मत का रोना रोते रहते हैं, आप चाहे कुछ भी क्यों न करें उनके लिए, बेशक आकाश के तारे तोड़ लायें। आप उनके सिर पर सूरज का ताज रख दें, वे फिर भी रोयेंगे, शिकवा-शिकायत करेंगे! सूरज के ताज से बढ़कर भला क्या हो सकता है? मगर ऐसा आदमी फिर भी यही कहेगा—"मैं कितना बदक़िस्मत हूँ! दुनिया में मेरा कोई नहीं! मुझे कोई भी नहीं चाहता... ज़िन्दगी निरी आफ़त है, मुसीबत है... ओह! आह! हाय! वाय!..." जब कोई ऐसा हज़रत मेरे सामने आ जाता है, तो मेरे मन में यह दुर्भावना पैदा होती है कि उसे और भी बदक़िस्मत बना डालूँ...

तेतेरेव : प्यारी सुन्दरी ! मैं भी आपके सामने अपनी एक कमजोरी मानना चाहता हूँ... औरतों का फ़लसफ़ा बघारना मुझसे बर्दाश्त नहीं होता। मगर जब आप ऐसा करती हैं तो मेरा मन होता है कि बढ़कर आपका हाथ चूम लूँ...

येलेना (शरारत और चंचलता से) : सिर्फ़ मेरा हाथ ही? और वह भी तभी, जब मैं फ़लसफ़ा बघारती हूँ?.. (अपने को सँभालते हुए) हाय, हाय! मैं यहाँ मज़ाक़ और बेहूदा बातें कर रही हूँ और वहाँ कोई यातना भोग रहा है...

तेतेरेव (बेस्सेमेनोव के कमरे के दरवाज़े की तरफ इशारा करते हुए) : और वहाँ भी कोई यातना भोग रहा है। आप किसी भी तरफ़ उँगली उठायें, हर जगह ही कोई न कोई मुसीबत में फँसा हुआ है! लोगों की ऐसी आदत ही है...

येलेना : फिर भी उन्हें तकलीफ़ तो होती है...

तेतेरेव : ज़ाहिर है...

येलेना : और आदमी पर तरस खाना चाहिये।

तेतेरेव : हमेशा नहीं... शायद कभी भी नहीं... तरस खाने के बजाय उसकी मदद करना कहीं अच्छा होगा।

येलेना : सभी की तो मदद नहीं की जा सकती... और अगर तरस नहीं आयेगा तो मदद भी नहीं की जायेगी...

तेतेरेव : देवी जी! मैं ऐसे समझता हूँ इस बात को—यातनाएँ इसलिए हैं कि इच्छायें हैं। और इच्छायें होती हैं दो तरह की—एक वे, जिनका हमें आदर करना चाहिए, दूसरी वे, जो इस लायक़ नहीं हैं। हमें शरीर की उन इच्छाओं को पूरा करने में लोगों की मदद करनी चाहिए जो उन्हें बेहतर और मज़बूत बना सकें, जो उन्हें निखारें और नेक बनाकर जानवर की हालत से ऊपर उठायें...

येलेना (उसकी बात की ओर ध्यान न देते हुए) : शायद... शायद ऐसे ही है... मगर वहाँ भीतर क्या हो रहा है? शायद वह सो गयी है? कैसा सन्नाटा है... कुछ कानाफूसी हो रही है... दोनों बुज़ुर्ग भी अपने दरबे में जा छिपे हैं... कैसी अजीब

बात है यह! अचानक आहें-कराहें, ऐसा शोर-शराबा, चीख़पुकार, दौड़-धूप... और फिर अचानक जैसे सबको साँप सूँघ गया—एकदम ख़ामोशी, कहीं कोई हरकत नहीं...

तेतेरेव : यही ज़िन्दगी है! लोग गला फाड़-फाड़कर चीख़ते-चिल्लाते हैं, थककर खामोश हो जाते हैं... सुस्ताकर फिर चीखने-चिल्लाने लगते हैं। यहाँ—इस घर में तो हर चीज़ बहुत जल्दी से दम साध लेती है... दर्दभरी चीखें भी और ख़ुशी के ठहाके भी... दिल दहलानेवाली हर चीज़ कीचड़ में डण्डा मारकर छींटे उड़ाने जैसी होती है... नीचता ही हर क़िस्से, हर कहानी का अन्त होती है। वही यहाँ की आराध्य-देवी है। जीत का डंका बजे, या हार का मातम हो, आख़िरी बाज़ी इसी के हाथ रहती है...

येलेना (सोच में डूबते हुए) : बहुत अच्छे दिन थे वे मेरे, जब मैं जेल में रहती थी... वहाँ ज़िन्दगी कहीं अधिक दिलचस्प थी। मेरा पति जुआरी था... खूब पीता था और अक्सर शिकार को जाता था। हमारा शहर छोटा-सा और दूर-दराज़ के इलाक़े में था... और वहा के लोग थे बेलुत्फ़, बेरंग... ख़ाली वक़्त की कमी न होती थी, मैं क़ैदियों के सिवा न तो किसी के यहाँ जाती थी, न किसी से मिलती-जुलती थी। वे मुझे बहुत चाहते थे... उन्हें बस, अच्छी तरह से जान-समझ लीजिये, तब पता चलता है कि बहुत ही कमाल के लोग होते हैं वे। यक़ीन मानिये, बेहद प्यारे और बड़े ही सीधे-सादे! कभी-कभी तो उन्हें देखकर मन को यह विश्वास ही न होता कि फलां हत्यारा है, फलाँ चोर है या फलाँ ने ऐसा ही कोई दूसरा जुर्म किया है। कभी-कभी मैं किसी हत्यारे से पूछती—"क्या सचमुच तूने हत्या की थी?"— "हा, येलेना निकोलायेव्ना," वह कहता, "सचमुच हत्या की थी... क्या किया जाये?" और मुझे लगता कि उसने किसी दूसरे के जुर्म को अपने सिर ले लिया है... वह तो किसी दूसरे के हाथ का खिलौना बना है... हाँ। मैं उन्हें किताबें ख़रीद देती थी, हर कोठरी में ताश और शतरंज पहुँचा देती थी...तम्बाकू भी... और कभी-कभी थोड़ी-सी शराब भी दे देती... जब उन्हें हवाख़ोरी के लिए बाहर निकाला जाता तो वे गेंद और गुल्ली-डण्डा खेलते—बिल्कुल बच्चों की तरह, क़सम खाती हूँ! कभी-कभी मैं उन्हें हँसी-मज़ाक़ की कहानियाँ पढ़कर सुनाती और वे बच्चों की तरह ठहाके लगाते और हँसते-हँसते लोट-पोट हो जाते। मैंने चिड़ियाँ और पिंजरे ख़रीदे और हर कोठरी की अपनी चिड़िया हो गयी... वे उसे भी मेरे ही तरह प्यार करते! और यह भी बताऊँ कि जब मैं भड़कीले कपड़े पहनती—लाल या पीला ब्लाउज... तो वे बहुत ही खुश होते। यक़ीन कीजिये, उन्हें चमकीले और शोख़ रंग बहुत अच्छे लगते हैं! मैं उन्हें ख़ुश करने के लिए जान-बूझकर भड़कीले रंगों की पोशाकें पहना करती थी... **(निःश्वास छोड़ती है)** उनके साथ ज़िन्दगी में बहुत मज़ा था! पता भी नहीं चला और तीन बरस बीत गये... जब घोड़े ने मेरे पति की जान ले ली तो मुझे उसके मरने से ज़्यादा जेल छोड़ने का दुख हुआ... बेहद अफ़सोस हुआ मुझे उसे छोड़ते वक़्त... क़ैदियों को भी... उन्हें भी बहुत दुख हुआ... **(कमरे में इधर-उधर नज़र दौड़ाती है)** यहाँ, इस शहर में ज़िन्दगी वैसी नहीं है... इस घर में तो ज़रूर कोई मनहूस बात है... लोग बुरे नहीं हैं... कोई और ही बात है... लेकिन अब मेरा मन उदास हो गया है... मन भारी हो रहा है... हम यहा बैठे हैं, बातें कर रहे हैं... और वहाँ शायद वह अपनी ज़िन्दगी की आख़िरी साँसें गिन रही हो...

तेतेरेव (शान्त भाव से) : और हमें इसका कोई अफ़सोस नहीं...

येलेना (जल्दी से) : आपको अफ़सोस नहीं?..

तेतेरेव : और आपको भी नहीं...

येलेना (धीमे से) : हाँ, आप ठीक कह रहे हैं!.. यह... अच्छी बात नहीं, मैं समझती तो हूँ... मगर मैं महसूस नहीं करती कि यह बुरी बात है। जानते हैं, कभी-कभी ऐसा भी होता है—दिमाग़ समझता है कि यह बुरी बात है, मगर दिल महसूस नहीं करता... एक और बात बताऊँ—मुझे तत्याना के बजाय प्योत्र वसील्येविच के लिए ज़्यादा अफ़सोस होता है... उसके लिए तो योंही अफ़सोस होता है... बहुत बुरी है यहा उसकी ज़िन्दगी... है न?

तेतेरेव : यहा सभी की ज़िन्दगी बुरी है...

पोल्या (प्रवेश करते हुए) : हलो!...

येलेना (उछलकर उसके पास जाती है) : शी! धीरे बोलिये! जानती हैं, यहाँ क्या गुल खिल गया है?... तत्याना ने ज़हर खा लिया है!

पोल्या : क्या?

येलेना : हा, हा! सच कह रही हूँ... डाक्टर और उसका भाई वहाँ उसके पास हैं...

पोल्या : क्या दम तोड़ रही है?.. मर जायेगी क्या?

येलेना : कौन जाने...

पोल्या : उसने ऐसा किया क्यों? कुछ बताया?

येलेना : मालूम नहीं! कुछ नहीं बताया!

प्योत्र (दरवाज़े में से झाँकता है, उसके बाल अस्त-व्यस्त हैं) : येलेना निकोलायेव्ना... ज़रा इधर आइये...

(येलेना जल्दी से जाती है)

पोल्या (तेतेरेव से) : आप मुझे... ऐसे घूर क्यों रहे हैं?

तेतेरेव : कितनी बार आप मुझसे यह पूछ चुकी हैं?

पोल्या : अगर आप हमेशा ऐसा ही करेंगे तो मैं पूछे बिना कैसे रह सकती हूँ?...

हमेशा एक ख़ास नज़र से देखते हैं—भला क्यों? (उसके पास जाकर कड़ाई से बोलते हुए) क्या... आप इसके लिए मुझे दोषी मानते हैं?

तेतेरेव (ज़रा हँसकर) : क्या आप अपने को किसी तरह से दोषी... अनुभव करती हैं?

पोल्या : यह अनुभव करती हूँ कि... मैं पहले से कहीं ज़्यादा आपसे बेज़ार हो गयी हूँ! ख़ैर, यह बताइये कि यह सब हुआ कैसे?

तेतेरेव : कल उसे हल्का-सा धक्का दे दिया गया, झकझोरा गया, उसकी टांगें पहले ही लड़खड़ा रही थीं, आज वह गिर गयी... बस, इतना ही हुआ!

पोल्या : यह सच नहीं है!

तेतेरेव : क्या सच नहीं है?

पोल्या : मैं जानती हूँ कि आप किस चीज़ की तरफ़ इशारा कर रहे हैं... मगर यह सच नहीं है! नील...

तेतेरेव : नील? नील का इससे क्या सरोकार?

पोल्या : न उसका... न मेरा, हम दोनों का कोई सरोकार नहीं... आप... आपकी बात ग़लत है! मैं जानती हूँ कि आप हमें क़ुसूरवार मानते हैं... मगर हम... हम क्या कर सकते थे? मैं उसे प्यार करती हूँ... और वह मुझे... बहुत अरसा हो गया प्यार की इस आग को दहकते हुए!

तेतेरेव (गम्भीर होकर) : मैं किसी तरह का भी दोष नहीं देता हूँ... आपको... आप ख़ुद अपने को किसी चीज़ के लिए दोषी मान रही हैं और सामने आनेवाले पहले आदमी के आगे ही अपनी सफ़ाई पेश कर रही हैं। किसलिए? मैं आपकी... बहुत इज़्ज़त करता हूँ... हमेशा, बार-बार और ज़ोर देकर आप-से यह कहता रहा हूँ—जल्दी कीजिये, इस घर से चली जाइये, इस घर में नहीं आइये, यहाँ कोई मनहूस चीज़ है, यहा आपकी आत्मा में ज़हर घोला जाता है? मैं ही तो यह कहता रहा हूँ...

पोल्या : तो क्या हुआ?

तेतेरेव : कुछ नहीं। मैं सिर्फ़ इतना कहना चाहता था कि अगर आपने मेरी बात पर कान दिया होता तो... आज उस परेशानी से दो-चार न होना पड़ता, जिसका सामना इस वक़्त आप कर रही हैं... बस, इतना ही!

पोल्या : समझी... मगर उसने ऐसी हरकत की क्यों? क्या उसकी ज़िन्दगी ख़तरे में है? क्या खाया है उसने?

तेतेरेव : मुझे मालूम नहीं...

(प्योत्र और डाक्टर कमरे से बाहर आते हैं)

प्योत्र : पोल्या! ज़रा जाकर येलेना निकोलायेव्ना की मदद कीजिये...

तेतेरेव (प्योत्र से) : वह कैसी है?

डाक्टर : बड़ी मामूली-सी बात है! अगर लड़की घबरानेवाली तबीयत की न होती तो शायद उस पर कुछ भी बुरा प्रभाव न पड़ता... बहुत थोड़ी-सी स्पिरिट पी थी उसने... थोड़ी-सी ग्रासनली जल गयी... और ज़रा-सी स्पिरिट उसके मेदे में चली गयी थी... मगर वह उसी दम बाहर आ गयी...

प्योत्र : आप थक गये होंगे, डाक्टर! बैठकर थोड़ा आराम कर लीजिये...

डाक्टर : धन्यवाद... कोई एक सप्ताह तक वह ऐसी ढीली-ढाली ही रहेगी... अभी—थोड़े दिन की बात है—मेरे पास एक बहुत दिलचस्प केस आया था...नशे में धुत्त एक रंगसाज़ ने बियर की जगह वारनिश का गिलास चढ़ा लिया था...

(बेस्सेमेनोव अपने कमरे का दरवाज़ा खोलकर चुपचाप खड़ा रहता है, बहुत उदास और प्रश्नसूचक दृष्टि से डाक्टर की तरफ़ देखता है)

प्योत्र : घबराइये नहीं, पिता जी! डर की कोई बात नहीं है!

डाक्टर : हाँ, हाँ! बिल्कुल ऐसी कोई बात नहीं! दो-तीन दिन में वह चलने-फिरने लगेगी...

बेस्सेमेनोव : सच?

डाक्टर : आपको यक़ीन दिलाता हूँ!

बेस्सेमेनोव : धन्यवाद!.. अगर यह सच है... अगर उसकी ज़िन्दगी ख़तरे में नहीं है तो धन्यवाद! प्योत्र... तुमने वह... ज़रा इधर आओ...

(प्योत्र उसके पास जाता है। वे दोनों भीतर वाले कमरे में जाते हैं। भीतर से उनकी खुसुर-फुसुर और सिक्कों की खनक सुनाई देती है)

तेतेरेव (डाक्टर से) : उस रंगसाज़ का क्या हुआ?

डाक्टर : क्या?.. क्या पूछा आपने?

तेतेरेव : उस रंगसाज़ का क्या हुआ?

डाक्टर : अरे हाँ! रंगसाज़ का?... होना क्या था, ठीक हो गया... सुनिये... मुझे लगता है कि मैंने आपको पहले कहीं देखा है?

तेतेरेव : हो सकता है...

डाक्टर : आप... आप टाइफ़ायड से बीमार होकर अस्पताल में रहे थे न?

तेतेरेव : हाँ, रहा था!..

डाक्टर (खुश होते हुए) : देखा? हाँ, हाँ, मुझे लगा कि मैंने आपको पहले कहीं देखा है!... यह... शायद पिछले वसन्त की बात है? लगता है कि मुझे तो आपका

नाम भी याद है...

तेतेरेव : और मैं भी आपको नहीं भूला हूँ...

डाक्टर : सच?

तेतेरेव : हाँ। जब मैं अच्छा होने लगा था तो मैंने आपसे ख़ुराक का राशन बढ़ाने के लिए कहा था और आपने मुँह बनाकर जवाब दिया था—"जितना मिलता है, उसे ही ग़नीमत समझो। तुम जैसे पियक्कड़ों और आवारा लोगों की कुछ कमी तो है नहीं..."

डाक्टर (चकराया-सा) : मगर वह... वह तो... मैं माफ़ी चाहता हूँ!.. आपका नाम... यानी... मैं... मुझे डाक्टर निकोलाई त्रोयेकूरोव कहते हैं... और...

तेतेरेव (उसके पास जाकर) : और मैं हूँ मशहूर तेरेन्ती, ख़ान्दानी पियक्कड़, लाल परी का दीवाना।

(डाक्टर थोड़ा पीछे हट जाता है)

डरिये नहीं, मैं आप पर हाथ नहीं उठाऊँगा...

(उसके पास से गुज़रकर ड्योढ़ी में चला जाता है)

(डाक्टर हक्का-बक्का-सा उसे देखता रह जाता है, अपने टोप से पंखा झलता है। प्योत्र आता है)

डाक्टर (कनखियों से ड्योढ़ी की तरफ़ देखते हुए) : अच्छा, अब मुझे जाना चाहिए। और लोग मेरा इन्तज़ार कर रहे होंगे... अगर वह दर्द की शिकायत करे तो उसे फिर एक बार दवा की कुछ बूँदें पिला दीजिये... अब तेज़ दर्द नहीं होना चाहिए... नमस्ते!.. अरे हाँ, वह... साहब, जो अभी-अभी यहाँ थे... बहुत अनूठे आदमी हैं... क्या वह... वह आपके कोई रिश्तेदार हैं?

प्योत्र : नहीं, हमारे यहाँ रहता है...

डाक्टर : समझा!... जानकर ख़ुशी हुई!... बहुत निराला आदमी है! नमस्ते... धन्यवाद! (जाता है)

(प्योत्र उसे दरवाज़े तक छोड़ने जाता है। बस्सेमेनोव और अकुलीना इवानोव्ना अपने कमरे से बाहर आते है और पंजों के बल चलते हुए तत्याना के कमरे के दरवाज़े पर जाते हैं)

बेस्सेमेनोव : रुक जाओ, भीतर नहीं जाओ... वहा बिल्कुल सन्नाटा है। शायद वह सो रही है... हमें उसकी नींद में ख़लल नहीं डालना चाहिए... (अकुलीना इवानोव्ना को कोने में पड़े हुए सन्दूक़ के पास ले जाता है) तो तत्याना की माँ!

हमें ऐसी ख़ुशी का दिन भी देखना था... लोग लगातार तरह-तरह की बातें करेंगे, अफ़वाहें फैलायेंगे—जितने मुँह, उतनी ही बातें होंगी...

अकुलीना इवानोव्ना : प्योत्र के पिता! यह तुम क्या कह रहे हो? कैसी बात कह रहे हो? बड़ी परवाह पड़ी है हमें दुनिया की!... बेशक ढोल बजाते रहें लोग! बस, किसी तरह बेटी की जान बच जाये! लोग बेशक गला फाड़-फाड़कर चिल्लाते रहें...

बेस्सेमेनोव : हाँ, यह तो ठीक है... मैं जानता हूँ... तुम ठीक कहती हो!... लेकिन तुम... ओह! तुम समझती नहीं ! हमारी इज़्ज़त ख़ाक मे मिल गयी, नाक कट गयी!

अकुलीना इवानोव्ना : नाक कट गयी?.. क्यों?

बेस्सेमेनोव : हमारी बेटी ने ज़हर खा लिया, समझती हो! हमने उसके साथ कौनसी बुराई की थी? हमने उसके साथ कौनसा बुरा सलूक किया था? क्या हम उसके लिए दरिन्दे हैं? वे हमारे बारे में तरह-तरह की बातें करेंगे... मेरी बला से, मैं अपने बच्चों के लिए सब कुछ बर्दाश्त कर सकता हूँ... मगर मैं यह सब बर्दाश्त करूँ किसलिए?.. कौनसे गुनाहों की सज़ा है यह? मैं सिर्फ़ यह जानना चाहता हूँ... और ये मेरे बच्चे हैं! कभी मुँह से एक शब्द भी तो नहीं निकालते, गूँगे पत्थर बने रहते हैं... इनके दिल में क्या है? कुछ मालूम नहीं! इनके दिमाग़ में क्या है? क्या मजाल कि कभी बतायें! यही चीज़ तो घुन की तरह मुझे खाये जा रही है!

अकुलीना इवानोव्ना : मैं यह समझती हूँ... मेरे दिल पर भी बहुत भारी गुज़रती है! आख़िर मैं उनकी माँ हूँ... रात और दिन इन्हीं के लिए मरती-खपती रहती हूँ और कभी कोई शुक्रिया तक नहीं कहता... मैं यह सब समझती हूँ! फिर भी कोई बात नहीं थी... अगर ये ख़ुश और ठीक-ठाक रहते... आज जैसी बुरी बात भी होनी थी!

पोल्या (तत्याना के कमरे से बाहर आते हुए) : उसे झपकी आने लगी है... आप ज़रा धीरे बोलें...

बेस्सेमेनोव (उठते हुए) : वह अब कैसी है? हम उसे जाकर देख लें?

अकुलीना इवानोव्ना : मैं तो बिल्कुल दबे पाँव जाऊँगी? हम दोनों...

पोल्या : डाक्टर ने तो सभी को भीतर जाने से मना किया है...

बेस्सेमेनोव (विश्वास न करते हुए) : तुम कैसे जानती हो? डाक्टर के यहाँ होने के वक़्त तो तुम थीं नहीं...

पोल्या : येलेना निकोलायेव्ना ने मुझसे ऐसा कहा है।

बेस्सेमेनोव : और वह उसके पास ही है? देखा... पराये उसके पास जा सकते हैं, मगर अपने नहीं। कमाल की बात है...

अकुलीना इवानोव्ना : खाना रसोईघर में ही खाना चाहिए... ताकि उसकी नींद में खलल न पड़े... मेरी प्यारी बिटिया!... कमरे में झाँकने तक की इजाज़त नहीं... **(निराशा से हाथ झटककर वह कमरे से बाहर चली जाती है)**

(पोल्या अलमारी का सहारा लेकर खड़ी रहती है और तत्याना के कमरे की तरफ़ देखती है। उसकी भौहें तनी हुई, होंठ भिंचे हुए हैं और वह तनकर खड़ी है। बेस्सेमेनोव मेज़ के पास ऐसे बैठा है, जैसे किसी चीज़ की प्रतीक्षा कर रहा हो)

पोल्या (धीमे से) : मेरे पिता आज यहाँ आये थे?

बेस्सेमेनोव : तुम पिता के बारे में नहीं जानना चाहतीं, तुम्हें क्या ज़रूरत है उसकी? मैं जानता हूँ कि तुम्हें किसकी ज़रूरत है...

(पोल्या हैरानी से उसकी तरफ़ देखती है)

हाँ, तुम्हारा बाप गन्दे चिथड़े पहने हुए यहाँ आया था... भले आदमियों जैसा उसमें कुछ भी नहीं है... फिर भी तुम्हें उसकी इज़्ज़त करनी चाहिए...

पोल्या : मैं इज़्ज़त करती हूँ... आप ऐसा क्यों कह रहे हैं?

बेस्सेमेनोव : ताकि तुम यह समझो... तुम्हारा बाप एक बेघर आवारा है, फिर भी तुम्हें उसकी इच्छा के सामने सिर झुकाना चाहिए... मगर बाप क्या है, क्या तुम लोग यह समझते हो?.. तुम लोगों के पास दिल नाम की कोई चीज़ ही नहीं है... मिसाल के तौर पर तुम... ग़रीब लड़की हो, तुम्हारा कोई घर-घाट नहीं... तुम्हें विनम्र होना चाहिए... सभी के साथ प्यार-मुहब्बत से पेश आना चाहिए... मगर तुम भी उसी रास्ते पर चल रही हो! अपनी राय ज़ाहिर करती हो, पढ़े-लिखे लोगों जैसे अन्दाज़ दिखाया करती हो। तुम दुलहन बनने के फेर में हो... और वहाँ, उस कमरे में, एक ऐसी भी है जिसने तो बस अपनी जान ही ले डाली थी...

पोल्या : आप क्या कह रहे हैं, मेरी समझ में कुछ नहीं आ रहा... किसलिए आप ऐसी बातें कह रहे हैं?

बेस्सेमेनोव (अपने विचारों में उलझनेवाले व्यक्ति की तरह खीझते हुए) : मेरी बात समझो... सोचो... मैं इसीलिए यह सब कह रहा हूँ कि तुम समझ सको! तुम हो क्या? कुछ भी नहीं, फिर भी... शादी कर रही हो! लेकिन मेरी बेटी... तुम यहा खड़ी-खड़ी क्या मुँह ताक रही हो? जाओ रसोईघर में... कुछ काम-काज करो... यहाँ मैं खुद निगरानी कर लूँगा...जाओ!

(पोल्या हतप्रभ-सी उसकी तरफ़ देखती है और बाहर जाना चाहती है)

ज़रा रुको! मैं... मैंने तुम्हारे बाप को आज कुछ खरी-खोटी सुनायी थी...

पोल्या : किस चीज़ के लिए?

बेस्सेमेनोव : तुम्हारा इससे कोई मतलब नहीं! चलो...जाओ!

(पोल्या हैरान-सी बाहर जाती है। बेस्सेमेनोव ततयाना के दरवाज़े तक दबे पाँव जाकर उसे थोड़ा-सा खोलता है, भीतर झाँकना चाहता है। येलेना बाहर आती है और अपने पीछे दरवाज़ा बन्द कर देती है)

येलेना : अन्दर नहीं जाइये। लगता है कि वह सो रही है। उसे परेशान नहीं करना चाहिए...

बेस्सेमेनोव : हुँह... हमें सभी परेशान करते हैं... यह कोई बात नहीं! मगर हमें आपको परेशान नहीं करना चाहिए...

येलेना (हैरान होकर) : यह आप क्या कह रहे हैं? वह तो बीमार है!..

बेस्सेमेनोव : मैं जानता हूँ... मैं सब कुछ जानता हूँ... **(ड्योढ़ी में जाता है)**

(येलेना उसे देखती हुई कन्धे झटकती है। इसके बाद खिड़की की तरफ़ जाती है, सोफ़े पर बैठकर सिर के पीछे अपने हाथ बाँध लेती है। वह विचारों में खो जाती है। उसके होंठों पर मुस्कान दिखाई देती है और वह इस तरह अपनी आँखें मूँद लेती है मानो कोई सपना देख रही हो। प्योत्र आता है, वह उदास है, उसके बाल अस्त-व्यस्त हैं। वह ऐसे सिर झटकता है मानो किसी विचार को उससे निकाल देना चाहता हो। येलेना को देखकर वह रुकता है)

येलना (अपनी आँखें खोले बिना) : कौन है?

प्योत्र : आप किस बात पर हँस रही हैं? बड़ा अजीब लग रहा है अब...इस घटना के बाद किसी के चेहरे पर मुस्कान देखना...

येलेना (उसे देखते हुए) : आप खीझे हुए हैं? थक गये हैं? बेचारा लड़का... मुझे बड़ा अफ़सोस होता है आपके लिए...

प्योत्र (उसके पास कुर्सी पर बैठते हुए) : मुझे भी अपने लिए अफ़सोस होता है।

येलेना : आपको यहाँ से कहीं चले जाना चाहिए...

प्योत्र : हाँ, मुझे ऐसा करना चाहिए आख़िर मैं यहाँ कर भी क्या रहा हूँ इस तरह की ज़िन्दगी बहुत बोझल है...

येलेना : आप कैसी ज़िन्दगी बिताना चाहेंगे? बताइये!.. मैं बहुत बार आपसे यह पूछ चुकी हूँ... मगर आपने कभी जवाब ही नहीं दिया...

प्योत्र : साफ़-साफ़ कहना टेढ़ी खीर है...

येलेना : मुझसे भी?

प्योत्र : आपसे भी... भला मुझे यह क्या मालूम है कि मैं आपको कैसा लगता हूँ... या फिर मैं जो कुछ कहना चाहूँगा, उसके बारे में आपका रवैया क्या होगा? कभी-कभी मुझे ऐसा लगता है कि आप...

येलेना : मैं क्या? कहिये तो...

प्योत्र : कि आप... अच्छा...

येलेना : आप मुझे अच्छे लगते हैं, बहुत अच्छे लगते हैं! प्यारे लड़के!

प्योत्र (जोश से) : मैं लड़का नहीं हूँ! मैंने बहुत सोच-विचार किया है... मेरी बात सुनिये और बताइये... नील, शीश्किन, त्स्वेतायेवा और उन जैसे हो-हल्ला करनेवाले दूसरे लोग जो दौड़-धूप करते रहते हैं, आपको वह पसन्द है?.. क्या आप यह यक़ीन कर सकती हैं कि समझदारी की किताबों को ज़ोर-ज़ोर से पढ़ना, मज़दूरों के लिए नाटक खेलना—क्या यह मनबहलाव का अच्छा तरीक़ा है?.. और उनकी सभी तरह की दूसरी दौड़-धूप—क्या वह सचमुच ही इतनी महत्वपूर्ण और इस लायक़ है कि आदमी उसी के लिए जिये? आप बताइये...

येलेना : मेरे प्यारे! मैं अनपढ़ औरत हूँ... इन बातों के बारे में कुछ फ़ैसला नहीं कर सकती, मैं यह सब समझती नहीं हूँ। मैं तो गम्भीर, संजीदा प्राणी नहीं हूँ... नील, शीश्किन और इनके साथी मुझे अच्छे लगते हैं... खुशमिज़ाज लोग हैं, हमेशा कुछ न कुछ करते हैं... मुझे हँसने-हँसानेवाले ज़िन्दादिल लोग अच्छे लगते हैं... मैं खुद भी ऐसी ही हूँ... मगर आपने यह किसलिए पूछा है?

प्योत्र : लेकिन... मुझे इस सब से झल्लाहट होती है! अगर उन्हें इस तरह से जीना पसन्द है, अगर उन्हें इसमें लुत्फ़ मिलता है तो खुशी से ऐसे जियें! मैं उनके आड़े नहीं आता हूँ... मैं किसी के रंग-ढंग में दख़ल नहीं देना चाहता, लेकिन मैं जैसे जीना चाहता हूँ, उनमें वे भी टाँग न अड़ायें! अपने कामों को वे ख़ास अर्थ क्यों देते हैं?... मुझे क़ायर और स्वार्थी क्यों कहते हैं?...

येलेना (उसके सिर पर हाथ रखते हुए) : बेचारे को परेशान कर डाला है, बेचारा थक गया है...

प्योत्र : नहीं, मैं थका नहीं हूँ... खीझ उठा हूँ। मुझे जैसे पसन्द है, मैं वैसे जीने का अधिकार रखता हूँ, जैसे भी चाहूँ! मुझे इसका हक़ है न?

येलेना (उसके बालों से खेलते हुए) : यह फिर से मेरी समझ के परे की बात है... मैं तो बस, इतना जानती हूँ कि खुद जैसे चाहती हूँ, वैसे रहती हूँ, जो मन में आता है, वही करती हूँ... और अगर कोई मुझे यह यक़ीन दिलाने की कोशिश करेगा कि मुझे धर्म-मठ में जाकर रहना चाहिए—तो नहीं जाऊँगी! अगर ज़बरदस्ती की

जायेगी, तो वहा से भाग जाऊँगी या नदी में डूब मरूँगी...

प्योत्र : आप उनके साथ ज़्यादा और मेरे साथ कम वक़्त बिताती हैं... आप उन्हें मुझसे ज़्यादा चाहती हैं! मैं ऐसा महसूस करता हूँ... मगर मैं यह कहना चाहता हूँ—मैं यह कह सकता हूँ कि वे ख़ाली ढोल हैं!

येलेना (हैरान होकर) : क्या? क्या हैं वे?...

प्योत्र : ख़ाली ढोल... ढोलों के बारे में एक क़िस्सा है...

येलेना : अरे हाँ,... वह मैं जानती हूँ... इसका मतलब, तब तो मैं भी ...ख़ाली ढोल हूँ?

प्योत्र : ओह, नहीं आप नहीं! आपमें तो ज़िन्दगी मचलती है, आप तो झरने की तरह आदमी को ताज़गी देती हैं!

येलेना : यह खूब रही! तो आपके मुताबिक़ मै ऐसी ठण्डी हूँ?

प्योत्र : मज़ाक नहीं कीजिये! मैं आपकी मिन्नत करता हूँ! मेरे लिए यह क्षण... मगर आप हँस रही हैं! भला क्यों? क्या मैं मसख़रे जैसा लगता हूँ? मैं जीना चाहता हूँ! अपनी समझ के मुताबिक़... अपनी इच्छा के अनुसार...

येलेना : खुशी से जियें! कौन आड़े आ रहा है?

प्योत्र : कौन? कोई तो आड़े आ रहा है... कुछ तो आड़े आ रहा है! जब कभी मैं यह सोचता हूँ कि मुझे आज़ाद और अकेले रहना चाहिए तो मुझे लगता है कि जैसे कोई कह रहा हो—नहीं, यह असम्भव है!

येलेना : आपकी आत्मा?

प्योत्र : आत्मा का क्या सवाल पैदा होता है? मैं... मैं... क्या कोई जुर्म करना चाहता हूँ? मैं सिर्फ़ आज़ाद होना चाहता हूँ... मैं यह कहना चाहता हूँ...

येलेना (उसकी तरफ़ झुकते हुए) : यह ऐसे नहीं कहा जाता है! इसे तो कहीं सीधे-सादे ढंग से कहना चाहिए! मैं आपकी, बेचारे लड़के की मदद करूँगी... ताकि आप ऐसी मामूली बातों में गड़बड़ा न जायें...

प्योत्र : येलेना निकोलायेव्ना! आप अपने मज़ाकों से... आप मुझ पर सरासर जुल्म कर रही हैं! यह बड़ी बेरहमी है! मैं आपसे कहना चाहता हूँ कि मैं... मैं पूरी तरह से आपके सामने हूँ!

येलेना : इस बार भी बात नहीं बनी!

प्योत्र : लगता है कि मैं कमज़ोर आदमी हूँ... इस ज़िन्दगी का बोझ उठाना मेरे बस की बात नहीं! मैं इसके घटियापन को महसूस करता हूँ, मगर इसे ज़रा भी नहीं बदल सकता, कुछ भी तो बेहतर नहीं बना सकता... मैं यहाँ से जाना चाहता हूँ, अकेला रहना चाहता हूँ...

येलेना (उसका सिर अपने हाथों में लेते हुए) : मेरे साथ-साथ बोलिये,

दोहराइये—"मैं आपको प्यार करता हूँ!"

प्योत्र : प्यार! हाँ, वह तो है... वह तो मैं करता हूँ!.. मगर...नहीं। आप मज़ाक कर रही हैं!...

येलेना : नहीं, यह मज़ाक नहीं है। मैं बहुत पहले और बड़ी संजीदगी से आपसे शादी करने का फ़ैसला कर चुकी हूँ! शायद ऐसा करना अच्छा नहीं... मगर मैं जी-जान से यह चाहती हूँ...

प्योत्र : ओह, कितना ख़ुश हूँ मैं! मैं आपको प्यार करता हूँ... ऐसे प्यार करता हूँ...

(तत्याना का कराहना सुनाई देता है। प्योत्र उछलकर खड़ा हो जाता है और घबराकर इधर-उधर देखता है। येलेना इतमीनान से खड़ी होती है। प्योत्र धीमे से कहता है)

यह तत्याना की ही आवाज़ है न? और यहाँ... हम...

येलेना (प्योत्र के पास से तत्याना के कमरे की तरफ़ जाते हुए) : हमने कोई बुरी बात नहीं की...

तत्याना की आवाज़ : पानी... पानी दीजिये...

येलेना : मैं आ रही हूँ... **(प्योत्र की ओर मुस्कराती है और जाती है)**

(प्योत्र अपना सिर हाथों में थामे हुए चकराया-सा अपने सामने देखता रहता है। ड्योढ़ी का दरवाज़ा खुलता है और अकुलीना इवानोव्ना ऊँचे फुसफुसाती है)

अकुलीना इवानोव्ना : प्योत्र! प्योत्र! तुम कहाँ हो?..

प्योत्र : यहाँ...

अकुलीना इवानोव्ना : चलकर खाना खा लो...

प्योत्र : मेरा मन नहीं है... मैं नहीं खाऊँगा...

येलेना (तत्याना के कमरे से बाहर आते हुए) : वह मेरे यहाँ जा रहा है...

(अकुलीना इवानोव्ना उसे नाराज़गी से देखते हुए बाहर जाती है)

प्योत्र (जल्दी से येलेना के पास जाकर) : कितना बुरा हुआ... है यह! वह वहाँ ऐसी हालत में है... और हम...

येलेना : चलिये मेरे साथ... इसमें बुराई की क्या बात है? थियेटर में भी दुखद दृश्य के बाद हँसी-मज़ाक़ का हल्का-फुल्का दृश्य प्रस्तुत किया जाता है... वास्तविक जीवन में तो यह और भी ज़्यादा ज़रूरी है...

(प्योत्र येलेना के साथ सट जाता है और वह उसकी बाँह में बाँह डालकर उसे

अपने साथ ले जाती है)

तत्याना (खरखरी आवाज़ से कराहते हुए) : येलेना!.. येलेना!..

(पोल्या दौड़ती हुई आती है)

(परदा गिरता है)

चौथा अंक

मंच-सज्जा पहले जैसी ही है

(संध्या। मेज पर जल रहे लैम्प की रौशनी कमरे में फैली हुई है। पोल्या चाय के बर्तन मेज़ पर रख रही है। बीमार-सी तत्याना कोने में सोफ़े पर लेटी हुई है जहाँ बहुत मद्धिम रोशनी है। त्स्वेतायेवा उसके पास कुर्सी पर बैठी है।)

तत्याना (धीमे, उदासी से) : तुम क्या सोचती हो कि मैं भी तुम्हारी तरह ज़िन्दगी की तरफ़ हँसी-ख़ुशी और मस्ती का अन्दाज़ नहीं अपनाना चाहती? ओह, मैं बेहद चाहती हूँ, मगर... ऐसा कर नहीं पाती! मैं दिल पर भरोसा करूँ, यह मेरी घुट्टी में ही नहीं है...मुझे हर चीज़ पर सोचने की आदत पड़ गयी है...

त्स्वेतायेवा : मेरी प्यारी! तुम बहुत ज़्यादा सोच-विचार करती हो... तुम्हें यह मानना होगा कि सिर्फ़ सोचने के लिए आदमी के अक्लमन्द होने में कोई तुक नहीं है... सोचना-विचारना अच्छी चीज़ है, लेकिन... अगर आदमी यह चाहता है कि उसकी ज़िन्दगी बोझल और उकतानेवाली न हो, तो उसे कुछ कल्पना से भी काम लेना चाहिए—अक्सर तो नहीं, मगर कभी-कभी आगे की तरफ़ देखने, भविष्य के गर्भ में भी झाँकने की कोशिश करनी चाहिए...

(त्स्वेतायेवा की बात सुनते हुए पोल्या सोच में डूबी, सस्नेह मुस्कराती है)

तत्याना : और क्या दिखाई देता है भविष्य के गर्भ में?

त्स्वेतायेवा : जो कुछ भी हम देखना चाहें, सब कुछ!

तत्याना : हाँ... कल्पना के महल खड़े करने चाहिए!

त्स्वेतायेवा : विश्वास करना चाहिए...

तत्याना : किस चीज़ पर?

त्स्वेतायेवा : अपनी कल्पना, अपने मन के सपने पर... जब मैं अपने स्कूल के छात्रों की आँखों में झाँककर देखती हूँ तो उनके बारे में सोचती भी हूँ—यह रहा नोविकोव। स्कूल की पढ़ाई ख़त्म करके कालेज में जायेगा... और उसके बाद यूनिवर्सिटी में... शायद डाक्टर बनेगा! यह होनहार बालक है, बहुत भला और गम्भीर...उसका माथा चौड़ा है। वह सभी की चिन्ता करता है, बड़ा मिलनसार है... वह एड़ी-चोटी का पसीना एक करेगा, अपने ही फ़ायदे की नहीं सोचेगा, दूसरों

के साथ नेकी करेगा... लोग उसे बहुत प्यार करेंगे, उसकी बड़ी इज़्ज़त करेंगे, उसे सिर-आँखों पर बिठायेंगे... मुझे इसका यक़ीन है! और कभी अपने बचपन की याद आने पर उसे यह भी याद आयेगा कि कैसे उसकी अध्यापिका त्स्वेतायेवा ने आधी छुट्टी के समय उसके साथ खेलते हुए उसकी नाक घायल कर दी थी...हो सकता है कि उसे यह न भी याद आये... इससे कोई फ़र्क़ नहीं पड़ता!... मगर मैं सोचती हूँ कि उसे यह याद आयेगा ही... वह मुझे बहुत चाहता है। और यह रहा दूसरा लड़का—क्लोकोव। हार समय खोया-खोया, बाल बिखरे-बिखराये, गन्दा-मन्दा। हर वक़्त बहस करता और झगड़ता रहता है, हमेशा उसे कोई न कोई शरारत सूझती रहती है। यतीम है वह—अपने मामा के पास रहता है...मामा रात को चौकीदारी करता है... रोटियों के लाले हैं, मगर लड़के में बड़ा स्वाभिमान है, वह बड़ा दिलेर है! सोचती हूँ, बड़ा होकर पत्रकार बनेगा। ओह, मेरे क्लास में कैसे-कैसे दिचस्प लड़के हैं! मैं अनजाने ही हमेशा यह अनुमान लगाती रहती हूँ कि वे बड़े होकर क्या बनेंगे, ज़िन्दगी में क्या भूमिका निभायेंगे... इस बात की कल्पना करना बड़ा दिलचस्प है कि मेरे शागिर्द आगे चलकर कैसी ज़िन्दगी बितायेंगे... देखती हो न तत्याना, यह तो मामूली-सी बात है... लेकिन काश, तुम यह जानतीं कि इससे मुझे कितनी खुशी होती है!

तत्याना : और तुम? तुम अपने बारे में क्या सोचती हो? शायद तुम्हारे छात्रों का भविष्य बहुत उज्ज्वल हो... मगर तुम उस वक़्त तक?...

त्स्वेतायेवा : क़ब्र में पहुँच जाऊँगी? अरे नहीं! मैं बहुत अरसे तक जीने का इरादा रखती हूँ...

पोल्या (धीरे-धीरे, स्नेह से, मानो निःश्वास छोड़ते हुए) : आप कितनी अच्छी हैं मरीया! कितनी प्यारी...

त्स्वेतायेवा (पोल्या की ओर मुस्कराते हुए) : चहक उठीं, मेरी बुलबुल... तत्याना, मैं भावुक नहीं हूँ, कोरी भावनाओं की लहरों में नहीं बहती हूँ। पर जब मैं भविष्य की बात सोचती हूँ... भावी लोगों, भावी जीवन की बात सोचती हूँ तो मीठी-मीठी उदासी मेरे दिल-दिमाग़ में घर कर लेती है...जैसे कि मेरे अन्तर में पतझर का उजला, प्यारा दिन चमक उठता है... जानती हो न—पतझर में ऐसे दिन भी होते हैं—निर्मल आकाश में प्यारा-प्यारा सूरज चमकता होता है, हवा बिल्लौरी और मस्तीभरी होती है, जब दूर-दूर तक हर चीज़ साफ़ दिखाई देती है... जब ताज़गी होती है, मगर ठण्डक नहीं, हल्की उष्णता होती है, लेकिन गर्मी नहीं...

तत्याना : ये सब...मनगढ़न्त क़िस्से हैं...वैसे... मैं यह मानने को तैयार हूँ कि... शायद तुम, नील शीश्किन—और तुम्हारे जैसे दूसरे सभी लोग सचमुच सपनों के सहारे जी सकते हैं... मगर मैं नहीं जी सकती।

त्स्वेतायेवा : लेकिन, ज़रा रुको... ये केवल सपने ही नहीं हैं...

तत्याना : मुझे तो कभी, कुछ भी वास्तविक नहीं लगा... इसके सिवा कि यह दीवार है और यह मैं हूँ... जब मैं "हाँ" या "नहीं" कहती हूँ... तो किसी विश्वास से ऐसा नहीं करती...बल्कि इसलिए कि मुझे कुछ तो जवाब देना ही है। सच! जब मैं "नहीं" कहती हूँ तो उसी वक़्त मन में सोचने लगती हूँ कि मुझसे ग़लती तो नहीं हो गयी? शायद मुझे "हाँ" कहना चाहिए था?

त्स्वेतायेवा : तुम्हें ऐसा करने में मज़ा आता है...अपने मन में झाँककर जवाब दो—क्या तुम्हें अपनी आत्मा का यह दुरंगापन अच्छा नहीं लगता? या फिर शायद तुम किसी भी चीज़ पर यक़ीन करते हुए डरती हो... यक़ीन करने से आदमी पर ज़िम्मेदारी भी आ जाती है...

तत्याना : मैं नहीं जानती...नहीं जानती। मुझे यक़ीन करना सिखा दो। दूसरों को तो तुम लोग अपने पर यक़ीन करना सिखाते हो न... **(धीरे से हँसती है)** मुझे उन लोगों पर तरस आता है जो तुम्हारी बातों पर यक़ीन करते हैं... तुम लोग तो उनकी आँखों में धूल झोंकते हो! ज़िन्दगी तो हमेशा ऐसी ही थी, जैसी आज है—धुँधली-धुँधली, घुटी-घुटी और आगे भी हमेशा ऐसी ही रहेगी!

त्स्वेतायेवा (मुस्कराते हुए) : सच? लेकिन शायद ऐसी ही नहीं रहेगी?

पोल्या (मानो अपने आपसे) : ऐसी नहीं रहेगी!

तत्याना : तुमने क्या कहा?

पोल्या : मैंने कहा कि ज़िन्दगी हमेशा ऐसी ही नहीं रहेगी!

त्स्वेतायेवा : शाबाश, मेरी शान्त बुलबुल!

तत्याना : यह भी तुम पर यक़ीन करनेवालों में से एक है... क़िस्मत की मारी!... मगर इससे पूछो कि ऐसी ही क्यों नहीं रहेगी ज़िन्दगी? क्यों बदल जायेगी वह? इससे यह पूछो...

पोल्या (धीरे से उसके पास जाकर) : बात यह है कि अभी तो सभी लोग जी नहीं पाते हैं! बहुत कम लोग ही ज़िन्दगी का लुत्फ़ उठाते हैं... बहुतों को तो जीने की फ़ुरसत ही नहीं मिलती... वे तो रोटी कमाने के लिए काम में ही जुटे रहते हैं... मगर जब वे भी...

शीश्किन (तेज़ी से आता है) : सभी को नमस्ते! **(पोल्या से)** प्रणाम, महाराजा डंकन की सुनहरे बालों वाली सुन्दर बेटी!

पोल्या : क्या? किस महाराजा की बेटी?

शीश्किन : अहा, पकड़ी गयीं! देख रहा हूँ कि आपने हाइने को नहीं पढ़ा, गो किताब दो हफ़्ते से आपके पास है। नमस्ते, तत्याना वसील्येव्ना!

तत्याना (हाथ बढ़ाते हुए) : अब उसे किताबों से क्या लेना-देना है... वह

दुल्हन बननेवाली है...

शीश्किन : सच? किसकी?

त्स्वेतायेवा : नील की...

शीश्किन : अरे! तब तो मैं आपको बधाई भी दे सकता हूँ... वैसे शादी-ब्याह करना, घर-गिरस्ती के चक्कर में पड़ना कोई अक़्ल की बात नहीं... आज के ज़माने में शादी...

तत्याना : बस, बस रहने दीजिये! हम पर रहम कीजिये! इसके बारे में आप पहले भी कई बार बहुत कुछ कह चुके हैं...

शीश्किन : चलिये, तब बख़्श देता हूँ! यों भी मेरे पास वक़्त नहीं है। (त्स्वेतायेवा से) आप मेरे साथ चल रही हैं न? अच्छी बात है! प्योत्र घर पर नहीं है?

पोल्या : ऊपर है...

शीश्किन : हुँह... नहीं, मैं अब उसके पास नहीं जाऊँगा! तत्याना वसील्येव्ना... या, पोल्या, आप ज़रा उसे यह बता दीजिये... कह दीजिये... मेरा मतलब है... प्रोख़ोरोव की ट्यूशन से मेरी छुट्टी हो गयी है...

त्स्वेतायेवा : फिर वही मुसीबत? आप भी तक़दीर के सिकन्दर हैं!

तत्याना : क्या उससे झगड़ा हो गया?

शीश्किन : कुछ ख़ास तो नहीं!.. मैंने बहुत संयम से काम लिया...

त्स्वेतायेवा : लेकिन फिर भी यह ऐसा हुआ किसलिए? आपने तो ख़ुद ही प्रोख़ोरोव की तारीफ़ की थी?..

शीश्किन : जी हाँ! तारीफ़ की थी... गोली मारो! वैसे वह बहुतों से अच्छा है... दिमाग़ में भूसा नहीं है... लेकिन शेख़ीख़ोर है... बड़ा बातूनी है और कुल मिलाकर... **(सहसा भड़कते हुए)** जंगली जानवर है!

तत्याना : अब तो शायद ही प्योत्र आपको कोई ट्यूशन दिलवाये...

शीश्किन : हाँ, शायद वह मुझसे नाराज़ हो जायेगा...

त्स्वेतायेवा : आख़िर प्रोख़ोरोव के साथ आपका झगड़ा क्यों हुआ?

शीश्किन : आप कल्पना कीजिये—वह यहूदियों से नफ़रत करता है!

तत्याना : आपको इससे क्या लेना-देना है?

शीश्किन : मगर... यह तो घटिया बात हुई न! सभ्य आदमी को ऐसा शोभा नहीं देता! और फिर वह ओछा टुटपुंजिया है! अब इसी क़िस्से को ले लीजिये—उसकी नौकरानी रविवार के स्कूल में जाती थी। बहुत अच्छा करती थी! ख़ुद उसने रविवार के इन स्कूलों के फ़ायदे साबित करने के लिए भाषण झाड़ा था... जिसके लिए मैंने उससे बिल्कुल नहीं कहा था! उसने यह शेख़ी भी बघारी कि वह ऐसे स्कूलों को चलाने की पहलक़दमी करनेवालों में से एक है। ख़ैर, अभी कुछ दिन पहले, एक

इतवार को जब वह घर आया तो—बस, कुछ न पूछो!—नौकरानी की जगह आया ने दरवाज़ा खोला! "नौकरानी कहाँ है?" उसने पूछा। "स्कूल गयी है," आया ने जवाब दिया। अहा! उस दिन के बाद वह नौकरानी आज स्कूल जाती है। क्यों, कैसी रही?

(तत्याना सिर्फ़ कन्धे झटककर रह जाती है)

त्स्वेतायेवा : और बातें करने में कितना तेज़ है...

शीश्किन : न जाने प्योत्र कहाँ से मेरे लिए सदा ऐसे ही ढोंगी चेले ढूँढ़ देता है।

तत्याना (रूखेपन से) : मुझे याद आ रहा है कि आप उस ख़ज़ांची से बहुत खुश थे जिसे पहले पढ़ाते थे...

शीश्किन : हाँ... बेशक... वह प्यारा-सा बुड्ढा है! मगर उसे सिक्के इकट्ठे करने की बीमारी है! हर वक़्त मेरे सामने तांबे के सिक्के लेकर बैठा रहता और कहता—यह सीज़र है, यह फ़राऊँ है अपने रथ में और यह फलां बादशाह है। जब तक हो सका, मैंने यह बर्दाश्त किया और फिर तंग आकर एक दिन कह उठा—"सुनिये, विकेन्ती वसील्येविच! मेरे ख्याल में यह सब बकवास है! सड़क पर पड़ा हुआ हर पत्थर आपके इन सिक्कों से अधिक पुराना है।" बूढ़े पर तो जैसे गाज गिर गयी। "आपका मतलब है कि मैंने अपनी ज़िन्दगी के पन्द्रह बरस बकवास के काम में बरबाद कर दिये?" मैंने जवाब दिया कि ऐसा ही है। मेरा हिसाब चुकता करते वक़्त उसने आधा रुबल मार लिया... मेरे ख़्याल में अपने सिक्कों की गिनती बढ़ाने के लिए। ख़ैर, यह कोई बात नहीं... मगर यह प्रोख़ोरोव वाला मामला... हाँ, क्या कहा जाये... **(उदास-सा होकर)** मेरा मिज़ाज भी ख़ासा टेढ़ा है! **(जल्दी से)** मरीया निर्कोतिश्ना, अब हमें चलना चाहिए!

त्स्वेतायेवा : मैं बिल्कुल तैयार हूँ। नमस्ते, तत्याना! कल इतवार है... मैं सुबह ही तुम्हारे पास आ जाऊँगी...

तत्याना : धन्यवाद। वैसे... मुझे कुछ ऐसा लगता है कि मैं लोगों के पैरों में उलझनेवाली जंगली घास जैसी हूँ... जिसमें न कोई ख़ूबसूरती है और जो न किसी को ख़ुशी देती है... मैं लोगों के रास्ते में आती हूँ, पैरों में उलझती हूँ...

शीश्किन : उफ़, ये कैसे भयानक विचार हैं!

त्स्वेतायेवा : तुम्हारे मुँह से ऐसी बातें सुनकर दिल को बड़ा दुख होता है, तत्याना...

तत्याना : मगर सुनो... मैं सोचती हूँ... मैं समझती हूँ... हाँ, आख़िर ज़िन्दगी की एक कड़वी सचाई को समझ गयी हूँ... जो किसी चीज़ में यक़ीन नहीं रखता, वह ज़िन्दा नहीं रह सकता... उसे मर जाना चाहिए... हाँ, मर जाना चाहिए!

त्स्वेतायेवा (मुस्कराते हुए) : सच? शायद नहीं मरना चाहिए?

तत्याना : तुम मेरी खिल्ली उड़ा रही हो... क्या ऐसा करना अच्छा है? मेरा मज़ाक उड़ाना? क्या ऐसा करना अच्छा है?

त्स्वेतायेवा : नहीं तत्याना, नहीं मेरी प्यारी! यह तुम नहीं, तुम्हारी बीमारी बोल रही है, तुम्हारी थकान—अच्छा, तो कल फिर मिलेंगी! और हमें इतने कठोर और बुरे दिल के आदमी नहीं मानो...

तत्याना : जाइये... नमस्ते!

शीश्किन (पोल्या से) : तो कहिये, हाइने कब पढ़ेंगी? अरे हाँ, आप तो दुल्हन बननेवाली हैं... शादी के खिलाफ़ कुछ कहा तो ज़रूर जा सकता है... लेकिन ख़ैर, नमस्ते! (त्स्वेतायेवा के पीछे-पीछे बाहर जाता है)

(ख़ामोशी)

पोल्या : मेरे ख़्याल में प्रार्थना तो जल्द ही ख़त्म हो जायेगी... क्या मैं समोवार लाने को कह दूँ?

तत्याना : अम्मां और पिता जी शायद ही चाय पियें... पर, जैसा तुम ठीक समझो, करो।

(ख़ामोशी)

पहले ख़ामोशी मुझे मानो काटती थी, मगर अब मैं उसके लिए बेचैन रहती हूँ।

पोल्या : आपके दवा पीने का वक़्त हो गया न?

तत्याना : अभी नहीं... पिछले दिनों में यहाँ बहुत ज़्यादा दौड़-धूप और हो-हल्ला रहा है शीश्किन कितना शोर मचाता है यह...

पोल्या (उसके पास जाकर) : वह बहुत भला है...

तत्याना : रहमदिल...मगर बुद्धू...

पोल्या : वह बहुत अच्छा है और दिलेर भी। जहाँ बेइंसाफ़ी देखता है, वहीं सामने डट जाता है। देखिये न, कैसे नौकरानी की हिमायत की उसने। अमीरों के यहाँ काम करनेवाले नौकर-नौकरानियाँ और दूसरे लोग कैसी ज़िन्दगी बिताते हैं, कौन इस बात की तरफ़ ध्यान देता है? कोई ध्यान भी देता है तो उनकी हिमायत कौन करता है?

तत्याना (पोल्या की तरफ़ देखे बिना ही) : पोल्या, मुझे यह बताओ... क्या तुम्हें... नील से शादी करते हुए डर नहीं लगता?

पोल्या (हैरान होकर, इत्मीनान से) : डरने की कौन-सी बात है? नहीं, मुझे किसी चीज़ से डर नहीं लगता...

तत्याना : किसी चीज़ से डर नहीं लगता? मगर मुझे तो जरूर डर लगता। मैं तुमसे इसलिए यह कह रही हूँ... मैं तुम्हें... प्यार करती हूँ! तुम उसके जैसी नहीं हो। तुम सीधी-सादी हो... मगर उसने बहुत कुछ पढ़ा-पढ़ाया है, वह सुशिक्षित है। हो सकता है कि उसे तुम्हारे साथ ऊब महसूस हो... तुमने इसके बारे में सोचा है, पोल्या?

पोल्या : नहीं। मैं जानती हूँ कि वह मुझे प्यार करता है...

तत्याना (चिढ़कर) : जैसे कि यह जाना जा सकता है...

(तेतेरेव समोवार लिये हुए आता है)

पोल्या : धन्यवाद! मैं दूध ले आती हूँ। (बाहर जाती है)

तेतेरेव (खुमार से उसका चेहरा भारी-सा लग रहा है) : मैं रसोईघर के पास से गुज़र रहा था कि स्तेपानीदा गिड़गिड़ाने लगी—"भैया, समोवार भीतर लेते जाओ! इसके बदले में मैं तुम्हें जब भी कहोगे, अचारी खीरे दे दूँगी..." झट से मुँह में पानी भर आया—पेटू जो ठहरा...

तात्याना : आप प्रार्थना से लौटे हैं?

तेतेरेव : नहीं, मैं आज वहाँ नहीं गया। सिर फटा जा रहा है। आप कैसी हैं? तबीयत पहले से बेहतर है न?

तत्याना : हाँ, बुरी नहीं, शुक्रिया। दिन में कम से कम बीस बार तो मुझसे पूछा ही जाता है... अगर हमारे यहाँ कुछ कम शोर-शराबा रहता तो मेरी तबीयत और भी ज़्यादा अच्छी हो जाती। मुझे यह हो-हल्ला परेशान कर देता है—सभी कहीं भागते रहते हैं, चीख़ते-चिल्लाते हैं... पिता जी नील पर बिगड़ते रहते हैं, अम्मां लगातार आहें भरा करती हैं... और मैं यहाँ पड़ी-पड़ी ये सब नाटक देखा करती हूँ... और मुझे उसमें कोई तुक नजर नहीं आती जिसे ये लोग... ये सभी लोग... ज़िन्दगी कहते हैं...

तेतेरेव : नहीं, बहुत कुछ विचित्र है इसमें! मुझे दुनिया से कोई मतलब नहीं, मैं इस धरती के झमेलों में नहीं पड़ता... तमाशा देखने के लिए जी रहा हूँ, फिर भी मुझे लगता है कि काफ़ी दिलचस्प है यह ज़िन्दगी।

तत्याना : आप ज़िन्दगी से कोई माँग नहीं करते, बिल्कुल फक्कड़ हैं, यह मैं जानती हूँ। मगर आपको इसमें दिलचस्प क्या दिखाई देता है?

तेतेरेव : दिलचस्प यह है कि सभी लोग जीने के लिए अपने साज़ों के सुर-ताल ठीक करने में लगे हुए हैं। थियेटर में जब वादक अपने साज़ों के सुर मिलाते हैं, तो मुझे उनकी आवाज़ें सुनना बहुत अच्छा लगता है। अलग-अलग, अनेक सुरीली ध्वनियाँ कानों में पड़ती हैं, कभी कोई प्यारी-सी तान भी सुनाई दे जाती है... दिल जल्दी से जल्दी यह जानने को बेक़रार हो उठता है कि ये कौन-सी धुन बजायेंगे? न जाने प्रमुख गायक कौन होगा? नाटक कैसा होगा? ज़िन्दगी में भी यही कुछ हो रहा है... लोग अपने बाजों के सुर-ताल मिला रहे हैं।

तत्याना : थियेटर के बारे में... ऐसा कहा जा सकता है... वहाँ संगीत-निदेशक आता है, अपनी छड़ी हिलाता है और वादक किसी पुरानी और घिसी-पिटी धुन को भद्दे और नीरस ढंग से बजाना शुरू कर देते हैं। मगर यहाँ?... हमारे ये लोग? कौन सी धुन बजा सकते हैं? मैं नहीं जानती।

तेतेरेव : शायद कोई बहुत ही ज़ोरदार धुन...

तत्याना : यह तो वक़्त बतायेगा।

(खामोशी)

(तेतेरेव अपना पाइप जलाता है)

आप पाइप क्यों पीते हैं? सिगरेट क्यों नहीं?

तेतेरेव : ज़्यादा सुविधा रहती है। मैं ठहरा आवारा आदमी, सड़कें नापते हुए ही साल का अधिकतर समय बीतता है। जल्द ही फिर से चला जाऊँगा। जाड़ा आते ही चल दूँगा।

तत्याना : किधर?

तेतेरेव : मालूम नहीं... कहीं भी चला जाऊँगा...

तत्याना : नशे में धुत्त कहीं पड़े-पड़े बर्फ़ हो जायेंगे...

तेतेरेव : सफ़र में मैं कभी नहीं पीता... और अगर मैं ठिठुर कर मर भी जाऊँगा तो इससे क्या फ़र्क़ पड़ेगा? एक ही जगह बैठे-बैठे सड़ने के बजाय चलते-फिरते मर जाना ही कहीं बेहतर है...

तत्याना : आप मेरी तरफ इशारा कर रहे हैं?

तेतेरेव (घबराकर उछलता है) : भगवान बचाये! यह आप क्या कह रही हैं? मैं भला ऐसी बात कह सकता हूँ... मैं दरिन्दा नहीं हूँ!

तत्याना (मुस्कुराते हुए) : परेशान होने की जरूरत नहीं! मुझे कुछ भी बुरा नहीं लगता—दर्द नाम की कोई चीज अब मुझ पर असर नहीं करती। **(कटुता से)** सभी जानते हैं कि मुझे किसी बात से ठेस नहीं लगती। नील, पोल्या, येलेना मरीया... वे सभी उन रईसों जैसा बर्ताव करते हैं जिन्हें इस बात से कोई मतलब नहीं कि किसी भिखमंगे के दिल पर क्या गुज़रती है... वह बेचारा उस वक़्त क्या सोचता है जब उन्हें बढ़िया पकवान खाते हुए देखता है...

तेतेरेव (मुँह बनाता है और दाँतो को भींचकर बोलता है) : आप अपने को

इतना गिरा क्यों रही हैं? आपमें आत्म-सम्मान होना चाहिए...

तत्याना : चलिये... हटाइये इस क़िस्से को!

(खामोशी)

मुझे अपने बारे में... कुछ बताइये। आप अपनी चर्चा कभी नहीं करते... क्यों?

तेतेरेव : यह बड़ा, किन्तु नीरस विषय है।

तत्याना : नहीं, बताइये! क्यों आप... इस अजीब ढंग से ज़िन्दगी बिता रहे हैं? मुझे आप ख़ासे समझदार और गुणी आदमी लगते हैं... ऐसा क्या हो गया है आपकी ज़िन्दगी में?...

तेतेरेव (दाँत निकालते हुए) : क्या हो गया है मेरी ज़िन्दगी में? अगर मैं अपने शब्दों में बताऊँगा तो यह बेहद लम्बी और उबानेवाली बात हो जाएगी... यों कहा जा सकता है--

गया खुशी की खोज में
लौटा नंग-धड़ंग।
कपड़े, जूते भी गये
सपने और उमंग।

इतनी ही बात है... बेशक बहुत नपी-तुली, मगर मेरे मामले में कुछ ज़्यादा ही खूबसूरत। इसमें मुझे इतना और जोड़ना होगा कि रूस में एक सच्चे और ईमानदार आदमी के मुक़ाबले में किसी आवारा और शराबी की ज़िन्दगी कहीं ज़्यादा आराम से गुज़रती है।

(प्योत्र और नील आते हैं)

तलवार की तरह सख़्त और मज़बूत लोग ही इस ज़िन्दगी में अपना रास्ता बना सकते हैं... अरे! नील कहा से आ रहे हो?

नील : रेलवे के डिपो से। बहुत ही शानदार बाज़ी मारकर। उस काठ के उल्लू से, हमारे उस सबसे बड़ा अफ़सर से...

प्योत्र : शायद जल्द ही तुम्हारी वहाँ से छुट्टी कर दी जायेगी...

नील : मैं दूसरी नौकरी ढूंढ़ लूँगा...

तत्याना : सुनो प्योत्र, शीश्किन प्रोख़ोरोव से झगड़ा कर आया है। खुद तुमसे यह कहने की हिम्मत नहीं हुई उसकी...

प्योत्र (खीझकर) : बेड़ा ग़र्क़ हो जाये उसका! बेवकूफ़ी की भी कोई हद होती है! अब मैं प्रोख़ोरोव को क्या मुँह दिखाऊँगा? इससे भी बुरी बात यह है कि अब

मैं किसी दूसरे की भी मदद नहीं कर सकूँगा...

नील : ऐसे लाल-पीले होने से पहले यह तो जान लो कि ग़लती किसकी है?

प्योत्र : यह मैं जानता हूँ!

तत्याना : शीश्किन को यह अच्छा नहीं लगा कि प्रोख़ोरोव यहूदियों से नफ़रत करता है...

नील (हँसते हुए) : अरे, वाह रे प्यारे!

प्योत्र : हाँ, हाँ, तुम्हें तो बहुत अच्छा लगेगा ही! तुम खुद भी तो दूसरों के दृष्टिकोण का आदर नहीं करते... जंगली लोग!

नील : लेकिन यह बताओ, क्या तुम यहूदियों से नफ़रत करने वालों का आदर करते हो?

प्योत्र : मैं किसी भी हालत में अपने को यह हक़ नहीं दूँगा कि किसी को गले से जा पकड़ूँ!

नील : मगर मैं ऐसा करूँगा...

तेतेरेव (दोनों को बारी-बारी से देखकर) : तो पकड़ लो!

प्योत्र : किसने... किसने तुम्हें यह अधिकार दिया है?

नील : अधिकार कोई देता नहीं, अधिकार लिये जाते हैं... अगर कोई कत्तव्यों के बोझ तले दबकर कुचला नहीं जाना चाहता, तो उसे लड़कर अपने अधिकार लेने ही होंगे...

प्योत्र : भई, वाह!...

तत्याना (क्षुब्ध होकर) : फिर से बहस शुरू हो रही है... कभी न ख़त्म होने वाली बहस! क्या तुम लोग इससे कभी तंग नहीं आते?..

प्योत्र (अपने पर क़ाबू पाते हुए) : माफ़ी चाहता हूँ, मैं और बहस नहीं करूंगा। मगर यह तो सच है न कि शीश्किन ने मुझे अटपटी स्थिति में डाल दिया है...

तत्याना : मैं जानती हूँ... वह बुद्धू है!

नील : वह बहुत भला आदमी है! वह कभी यह नहीं होने देगा कि कोई उसे कुचलता हुआ निकल जाये, मगर ज़रूरत पड़ने पर ख़ुद ऐसा करने से कभी नहीं चूकेगा! अपनी प्रतिष्ठा की चेतना होना अच्छी बात है...

तत्याना : तुम्हारा मतलब बचकाना हरकतें करने से है?

नील : नहीं, मेरा यह मतलब नहीं था। बेशक यह बचकाना हरकत ही हो, फिर भी अच्छी है!

प्योत्र : हँसी आती है...

नील : जब कोई रोटी का आख़िरी टुकड़ा भी सिर्फ़ इसलिए फेंक देता है कि उसे देनेवाला हाथ घिनौना है...,

प्योत्र : मतलब यह है कि रोटी का टुकड़ा फेंकने वाला बहुत भूखा नहीं है... मैं जानता हूँ कि तुम मेरी इस बात को काटोगे। तुम खुद भी वैसे ही हो... तुममें भी बचपन है... तुम हर वक़्त पिता जी को यह जताने के फेर में पड़े रहते हो कि तुम उनकी ज़रा भी इज़्ज़त नहीं करते...भला क्यों?

नील : मैं इसे छिपाऊँ भी तो, किसलिए?

तेतेरेव : मेरे दोस्त! शिष्टता यह माँग करती है कि आदमी झूठ बोले...

प्योत्र : लेकिन ऐसा करने में तुक क्या है? क्या तुक है?

नील : मेरे भाई, हम एक दूसरे को कभी नहीं समझ पायेंगे... बेकार है तुमसे इसके बारे में बात करना। तुम्हारे पिता जो कुछ करते और कहते हैं, मुझे उस सब से नफ़रत होती है...

प्योत्र : मुमकिन है कि... मुझे भी नफ़रत होती हो, मगर मैं उसे दिल में ही पी जाता हूँ। तुम हमेशा मुँह पर ही खरी-खरी सुनाकर उन्हें चिढ़ाते रहते हो... और इसका बदला हमें चुकाना पड़ता है—मुझे और मेरी बहन को।

तत्याना : ओह, बस भी करो, प्योत्र! वही, बेसुरा गाना!

(नील उसकी तरफ़ देखकर मेज़ के पास चला जाता है)

प्योत्र : तुम्हें हमारी बातचीत में परेशानी होती है?

तत्याना : मैं ऐसी बातों से तंग आ गयी हूँ! बार-बार वही क़िस्सा... कान पक गये हैं सुन-सुनकर!

(पोल्या दूध का जग लिये हुए आती है। नील के चेहरे पर स्वप्निल-सी मुस्कान देखकर सभी पर नज़र डालती है और कहती है)

पोल्या : देखिये तो, लगता है न किसी महात्मा जैसा?

तेतेरेव : तुम्हें हँसी किसलिए आ रही है?

नील : मुझे? अपने बड़े अफ़सर को आज जो खरी-खोटी सुनाकर आया हूँ, उसे याद कर रहा था...दिलचस्प चीज़ है यह ज़िन्दगी हमारी!

तेतेरेव (भारी आवाज़ में) : तथास्तु!

प्योत्र (कन्धे झटकते हुए) : बड़ी हैरानी होती है मुझे! ज़िन्दगी के सिर्फ़ उजले पहलू को देखनेवाले आशावादी क्या अंधे पैदा होते हैं?

नील : मैं आशावादी हूँ या कुछ और—इससे कोई फ़र्क़ नहीं पड़ता—मगर जीना मुझे बहुत अच्छा लगता है! (उठकर इधर-उधर टहलने लगता है) बहुत मज़ा है इस धरती पर जीने में।

तेतेरेव : हाँ, दिलचस्प है ज़िन्दगी!

प्योत्र : अगर तुम ईमानदारी से ऐसा कह रहे हो, तो दोनों मसख़रे हो!

नील : और तुम कौन हो—मैं नहीं जानता कि तुम्हें क्या उपाधि दूँ? मैं जानता हूँ—और वैसे तो यह किसी से भी छिपा हुआ नहीं है— कि तुम उसके दीवाने हो और वह भी तुम्हें प्यार करती है। और कुछ नहीं, तो क्या इसी वजह से तुम्हारा मन नहीं चाहता कि तुम गाओ, नाचो? क्या तुम्हें इससे भी ख़ुशी नहीं होती?

(पोल्या समोवार के पीछे से सबको गर्व से देखती है। तत्याना सोफ़े पर बेचैनी से इधर-उधर हिल-डुलकर नील के चेहरे की झलक पाने की कोशिश करती है। तेतेरेव मुस्कराते हुए पाइप से राख झाड़ता है)

प्योत्र : तुम कुछ बातें भूल रहे हो। पहली बात तो यह है कि विद्यार्थियों को शादी करने की इजाज़त नहीं है। दूसरे, अभी मुझे अपने माता-पिता से मोर्चा लेना होगा, और तीसरे...

नील : हे भगवान! कैसी बेसिर-पैर की बातें कर रहे हो? तुम्हारे लिए तो अब सिर्फ़ यही रह गया है—भाग जाओ! किसी वीराने में भाग जाओ!...

(पोल्या मुस्कराती है)

तत्याना : तुम मसख़रापन दिखा रहे हो, नील...

नील : नहीं, प्योत्र, नहीं! किसी के प्यार में दीवाना न होने पर भी जीने में बड़ा लुत्फ़ है! पतझर की रात में, मूसलाधार बारिश और अँधड़ में...या फिर जाड़ें मे जब बर्फ़ का तूफ़ान चारों तरफ़ से साँय-साँय करता हो, आस-पास की दुनिया का कहीं अता पता न हो, उसे अँधेरे ने निगल लिया हो, वह बर्फ़ के नीचे दब गयी हो, ऐसी रात में छकड़े जैसे ख़स्ताहाल इंजन को चलाना बेहद थका देनेवाला, मुश्किल और कहा जा सकता है कि ख़तरनाक भी होता है...मगर इसका भी अपना एक मज़ा है! बेशक है! हाँ, एक चीज़ है जो अच्छी नहीं लगती। वह यह कि मुझ पर, मेरे जैसे दूसरे ईमानदार लोगों पर गधे, उल्लू और चोर-उचक्के हुक्म चलाते हैं... लेकिन ज़िन्दगी इन्हीं लोगों के लिए नही है! ये भी नहीं रहेंगे, ये भी मिट जायेंगे, जैसे तन्दुरुस्त जिस्म से नासूर मिट जाते हैं। कोई भी तो ऐसी समय-सारिणी नहीं जो बदली न जाती हो!..

प्योत्र : तम्हारे ये भाषण मैंने बहुत बार सुने हैं। देखेंगे कि ज़िन्दगी तुम्हें इनके क्या जवाब देती है!

नील : मैं जैसे चाहूँगा, ज़िन्दगी को वैसे ही जवाब देने के लिए मजबूर करूँगा।

तुम मुझे डराओ नहीं! मैं तुमसे कहीं बेहतर यह जानता हूँ कि ज़िन्दगी काफ़ी मुश्किल चीज़ है, कभी-कभी इसके थपेड़े इतने ज़ोरदार होते हैं कि होश हवा हो जाते हैं। मैं यह भी जानता हूँ कि ज़ुल्म और अत्याचार का मज़बूत पंजा लोगों की गर्दन दबोचता जा रहा है। मैं यह सब कुछ जानता हूँ। मुझे यह सब नापसन्द है, इससे मेरा खून खौलने लगता है! मैं ज़िन्दगी को इसी रूप में स्वीकार करने को तैयार नहीं हूँ! मैं जानता हूँ कि ज़िन्दगी कोई खेल नहीं, गम्भीर मामला है, इसकी शक्ल बिगड़ी हुई है... इसे खूबसूरत शक्ल देने के लिए मुझे एड़ी-चोटी का ज़ोर और दिमाग़ की पूरी ताक़त लगानी होगी। मैं यह भी जानता हूँ कि मैं कोई सूरमा नहीं हूँ, सिर्फ़ एक मज़बूत और ईमानदार आदमी हूँ। फिर भी मैं यह कहता हूँ—कोई बात नहीं!—आख़िर जीत हमारी होगी! ज़िन्दगी को बदलने की अपनी इस चाह को पूरा करने के लिए मैं अपनी पूरी ताक़त लगा दूँगा। अपनी पूरी शक्ति से इस तूफ़ान में कूद पड़ूँगा... मैं इसे कभी इस साँचे में ढालूँगा, तो कभी दूसरे में... मैं कहीं अपना कन्धा बढ़ाकर सहारा दूँगा, तो कहीं चट्टान बनकर खड़ा हो जाऊँगा... इसी में है ज़िन्दगी का मज़ा—जीने का मज़ा!

तेतेरेव (व्यंग्यपूर्वक मुस्कराते हुए) : यह है गहरी से गहरी विद्या का सार! यह है सभी दर्शनों का निचोड़! बाक़ी सारे फ़लसफ़े, जायें भाड़ में!

येलेना (दरवाज़े से) : किस वजह से यहा चीखा-चिल्लाया और हाथों को लहराया जा रहा है?

नील (येलेना की ओर लपकते हुए) : अरे, आप मेरी बात को ज़रूर समझ जायेगीं! मैंने अभी-अभी ज़िन्दगी का स्तुति-गान किया है! आप कहिये—ज़िन्दगी में बहुत मज़ा है न!

पोल्या (धीरे से) : जीने में बड़ा सुख है!

येलेना : कौन इसे मानने से इन्कार करता है?

नील (पोल्या से) : अरी मेरी...शान्त बुलबुल!

येलेना : मेरे सामने—यह प्यार-मुहब्बत!

प्योत्र : शैतान ही जानता है कि यह सब क्या है! यह नील तो जैसे नशे में है...

(तत्याना सोफ़े की पीठ पर सिर टिकाकर धीरे-धीरे हाथ ऊपर उठाती है और अपने चेहरे को छिपा लेती है)

येलेना : अरे! आप लोग तो चाय की चुसकियाँ लेने की तैयारी में हैं? और मैं आपको अपने यहाँ बुलाने आयी थी...लेकिन अब मैं भी आपके साथ ही चाय पी लूँगी—आज यहा हँसी-खुशी का रंग है। **(तेतेरेव से)** लेकिन आप, अक़्लमन्द कौवे, केवल आप ही बुत बने बैठे हैं—भला क्यों?

तेतेरेव : मैं भी बड़े रंग में हूँ। लेकिन मुझे खुशी में ख़ामोश रहना और ऊब में शोर मचाना अच्छा लगता है...

नील : सभी बड़े, समझदार और उदास कुत्तों की तरह...

येलेना : मैंने तो आपको न कभी उदास और न कभी खुश, बल्कि हमेशा फ़लशफ़े की टाँग तोड़ते देखा है। महानुभाव, आप जानते हैं, तत्याना, तुम्हें मालूम है, ये हज़रत मुझे फ़लशफ़ा पढ़ा रहे हैं। कल इन्होंने मुझे अस्तित्व के पर्याप्त आधार के नियम पर एक लम्बा-चौड़ा लेक्चर पिलाया था... ओह, मैं भी क्या भुलक्कड़ हूँ, कैसे व्यक्त किया जाता है यह अद्‌भुत नियम... किन शब्दों में? किन शब्दों में?

तेतेरेव (मुस्कराते हुए) : हर चीज़ की कोई जड़ होती है, क्योंकि जड़...

येलेना : सुना आपने? ज़रा सोचिये तो, मैं कैसी-कैसी अक़्ल की बातें जानती हूँ! आप लोग नहीं जानते कि यह नियम क्या है, यह नियम किस चीज़ का प्रतीक है। यह प्रतीक है दाढ़ का, क्योंकि उसकी चार जड़ें होती हैं... मैं ठीक कह रही हूँ न?

तेतेरेव : आपकी बात काटने की हिम्मत नहीं कर सकता...

येलेना : बेशक नहीं कर सकते! ज़रा कोशिश कर देखिये! पहली जड़, हो सकता है कि यह पहली न हो,—यही है अस्तित्व के पर्याप्त आधार का नियम—यह क्या है? शक्लधारी पदार्थ... मुझे देखो, मैं क्या हूँ? मैं पदार्थ हूँ, जिसने—किसी आधार के बिना ही—औरत का रूप ले लिया है...मगर—इस बार किसी आधार के बिना ही मैं अस्तित्वहीन हो जाती हूँ। अस्तित्व कभी ख़त्म नहीं होता, मगर पदार्थ कभी एक और कभी दूसरा रूप धारण करता रहता है—यह आनी-जानी चीज़ है! मैं ठीक कह रही हूँ न?

तेतेरेव : कोई बात नहीं, यह भी चलेगा...

येलेना : इसके अलावा मैं यह भी जानती हूँ कि एक कारण के साथ उसकी दूसरी कड़ी जुड़ी रहती है—यानी यों कह लो कि मुर्ग़ी से अण्डा और अण्डे से फिर मुर्ग़ी,-मगर यह सिलसिला कैसे चलता जाता है, यह तो मैं दस जन्म भी याद नहीं कर पाऊँगी! अगर अक़्ल की इन बातों से चाँद गंजी न हो गयी तो ज़रूर अक़्लमन्द हो जाऊँगी! मगर इस सारे फ़लसफ़े में जो सबसे दिलचस्प सवाल पैदा होता है, वह यह है कि, जनाब, तेरेन्ती ख़्रीसान्फ़ोविच, आपके दिमाग़ में मुझे फ़लसफ़ा सिखाने की सनक क्यों आई?

तेतेरेव : पहली बात तो यह है कि आपको अपने नज़दीक देखते रहने से मेरा जी खुश होता है...

येलेना : शुक्रिया! दूसरी बात शायद बेमज़ा हो...

तेतेरेव : दूसरी बात यह है कि सिर्फ़ फ़लसफ़ा छाँटते वक़्त ही आदमी झूठ नहीं

बोलता, क्योंकि फ़लसफ़ा तो सिर्फ़ दिमाग़ी उड़ान होती है...

येलेना : कुछ भी दिमाग़ में नहीं घुसा! अरे हाँ, तत्याना! कैसी तबीयत है तुम्हारी? **(जवाब की प्रतीक्षा बिना ही)** प्योत्र... वसील्येविच? आप किससे रूठे बैठे हैं?

प्योत्र : अपने से।

नील : और बाक़ी सब से भी?

येलेना : जानते हैं, अचानक मेरा गाने को मन बेक़रार हो रहा है! बड़े अफ़सोस की बात है कि आज शनिवार है और संध्या की प्रार्थना अभी तक ख़त्म नहीं हुई...

(बेस्सेमेनोव और अकुलीना इवानोव्ना प्रवेश करते हैं)

अरे! लीजिये, वे आ रहे हैं भगवान का नाम जपनेवाले! नमस्ते!

बेस्सेमेनोव (रुखाई से) : अभिवादन करता हूँ आपका...

अकुलीना इवानोव्ना (उसी के अन्दाज़ में) : नमस्ते, देवी जी! मगर हम तो आज एक बार पहले भी मिल चुकी हैं।

येलेना : ओह, हाँ! मैं भूल गयी थी... तो, तो... क्या गिरजे में बहुत गर्मी थी?

बेस्सेमेनोव : हम तापमान लेकर गर्मी मापने के लिए गिरजे में नहीं गये थे...

येलेना (सहमकर) : जी, सो तो ज़ाहिर है... मगर मैं यह नहीं...मैं तो यह पूछना चाहती थी कि क्या वहाँ बहुत लोग थे?

अकुलीना इवानोव्ना : हमने गिनती नहीं की...

पोल्या (बेस्सेमेनोव से) : चाय पियेंगे?

बेस्सेमेनोव : पहले खाना खायेंगे... तत्याना की माँ, जाओ, जाकर कुछ तैयार कर लो।

(अकुलीना इवानोव्ना नाक फरफराती हुई बाहर जाती है। सब ख़ामोश रहते हैं। तत्याना उठती है, येलेना का सहारा लेकर मेज़ तक पहुँचती है। नील तत्याना की जगह सोफ़े पर जा बैठता है। प्योत्र इधर-उधर टहलता है। तेतेरेव पियानो के पास बैठा हुआ इन सबको देखता और मुस्कराता है। पोल्या समोवार के पास बैठी है। बेस्सेमेनोव कोने में सन्दूक़ पर बैठा है)

कैसा ज़माना आ गया है—हद हो गयी! लोग कैसे चोर हो गये हैं। थोड़ी देर पहले, जब हम गिरजे को जा रहे थे, तो मैंने फाटक के पास कीचड़ को लाँघने के लिए उस पर एक तख़्ता डाल दिया था। अब लौटे तो देखा कि तख़्ता ग़ायब है... कोई चोर ले उड़ा। लोगों का कोई धर्म-ईमान तो रहा ही नहीं...

(ख़ामोशी)

पुराने ज़माने में ऐसे चोर-उचक्के कम थे, लोग बड़े-बड़े डाके डालते थे, क्योंकि उनके दिल बड़े थे, छोटी-मोटी चीज़ों के लिए अपना ईमान नहीं बिगाड़ते थे...

(सड़क पर गाना-बजाना सुनाई देता है)

अरे वाह...गा रहे हैं। शनिवार, प्रार्थना का दिन है और वे गा रहे हैं...

(गाने की आवाज़ पास आ जाती है। दो व्यक्ति मिलकर गा रहे हैं।)

ज़रूर मज़दूर होंगे। काम से छुट्टी मिली कि सीधे पहुँचे शराबख़ाने में, कमाई कर दी शराब की नज़र और अब गला फाड़ रहे हैं...

(गाना खिड़कियों के नीचे सुनाई देता है। नील खिड़की के शीशे से चेहरा सटाकर बाहर देखता है)

एक साल, दो साल तक ये ऐसी ज़िन्दगी बितायेंगे और बस, फिर इन्हें चौपट समझो। चोर-उचक्के बन जायेंगे...

नील : लगता है कि यह पेर्चीख़िन है...

अकुलीना इवानोव्ना (दरवाज़े से) : प्योत्र के पिता, खाना तैयार है...

बेस्सेमेनोव (उठते हुए) : पेर्चीख़िन...वह भी...इन निकम्मों में से एक है... (बाहर जाता है)

येलेना (आँखें उसका पीछा करती हैं) : मेरे यहाँ... चाय पीना ज़्यादा अच्छा रहेगा...

नील : आज बुज़ुर्गों से आपकी बातचीत ख़ूब बढ़िया रही।

येलेना : मेरी बातचीत... बुज़ुर्ग की बातें सुनकर मुझे घबराहट होने लगती है. .. बड़े मियाँ को फूटी आँखों नहीं सुहाती...मुझे यह अच्छा नहीं लगता...दिल को ठेस भी लगती है! भला मैंने क्या बिगाड़ा है उनका? वह मुझे क्यों पसन्द नहीं करते?

प्योत्र : वह दिल के बुरे नहीं हैं... मगर उनमें अकड़ ज़रूर है...

नील : कुछ लालची... और कुछ झगड़ालू भी हैं।

पोल्या : शी!.. किसी के पीठ पीछे ऐसी बात नहीं कहनी चाहिए। यह अच्छा नहीं!

नील : लालची होना अच्छा नहीं...

तत्याना (रूखेपन से) : अब इस क़िस्से को यहीं ख़त्म कर देना चाहिए... पिता जी किसी दम भी भीतर आ सकते हैं... पिछले तीन दिनों से उन्होंने किसी को

डाँटा-डपटा नहीं... सभी के साथ प्यार-मुहब्बत से पेश आने की कोशिश कर रहे हैं...

प्योत्र : उनके लिए यह आसान नहीं है...

तत्याना : हमें इस चीज़ की तारीफ़ करनी चाहिए... वह बूढ़े हैं..इसमें उनका कोई कुसूर नहीं कि वह हमसे पहले इस दुनिया में आये... और वह वैसे नहीं सोचते, जैसे हम... **(खीझकर)** लोग कितने निर्मम होते हैं! हम सभी कितने रूखे और पत्थरदिल हैं... हमें सिखाया जाता है कि हम एक दूसरे को प्यार करें... हमसे कहा जाता है कि हमें नम्र और रहमदिल होना चाहिए...

नील (उसी के अन्दाज़ में) : ताकि दूसरे लोग हम पर सवारी करें...

(येलेना खिलखिलाकर हँसती है। पोल्या और तेतेरेव मुस्कराते हैं। प्योत्र नील से कुछ कहना चाहता है और उसके पास जाता है। तत्याना तिरस्कारपूर्ण ढंग से सिर हिलाती है)

बेस्सेमेनोव (भीतर आते हुए येलेना को कड़ी नज़र से देखता है) : पोल्या, तुम्हारा बाप... वहा रसोईघर में है... जाकर उससे कहो... कि वह फिर कभी आये. .. जब वह... नशे में न हो... उससे कह दो कि घर चला जाये!

(पोल्या जाती है और उसके पीछे-पीछे नील)

हाँ, हाँ... तुम भी जाओ... अच्छी तरह देख लो अपने होनेवाले...मेरा मतलब... (अपनी बात अधूरी छोड़कर मेज़ के पास बैठ जाता है) तुम सब लोग चुप क्यों हो? देखता हूँ कि जैसे ही मैं यहाँ आता हूँ, तुम सबको साँप सूँघ जाता है...

तत्याना : जब आप यहाँ नहीं होते, हम तो... तब भी बहुत कम बातचीत करते हैं...

बेस्सेमेनोव (येलेना की तरफ़ भृकुटी चढ़ाकर देखते हुए) : किस बात पर हँसी आ रही थी?

प्योत्र : कोई ख़ास बात नहीं... नील...

बेस्सेमेनोव : नील! सभी मुसीबतों की जड़ में नील ही होता है...यह मैं जानता हूँ...

तत्याना : आपके लिए चाय डाल दूँ?

बेस्सेमेनोव : डाल दो...

येलेना : तत्याना, मैं डाल देती हूँ...

बेस्सेमेनोव : आपको तकलीफ़ करने की ज़रूरत नहीं। मेरी बेटी यह काम कर देगी...

प्योत्र : मेरे ख़्याल में इससे कोई फ़र्क़ नहीं पड़ेगा कि कौन चाय डालकर देता है? तत्याना की तबीयत अच्छी नहीं है...

बेस्सेमेनोव : इस मामले में तुम्हारा क्या ख़्याल है, मैंने तुमसे यह नहीं पूछा था। अगर तुम्हारे लिए पराये लोग अपनों से ज़्यादा नज़दीक हैं तो...

प्योत्र : पिता जी! आपको शर्म नहीं आती?

तत्याना : लो, हो गये शुरू! प्योत्र, समझ से काम लो।

येलेना (मुस्कराने की कोशिश करते हुए) : कोई तुक नहीं है इसमें...

(दरवाज़ा चौपट खुलता है और पेर्चीख़िन अन्दर आता है। वह हल्के नशे में है)

पेर्चीख़िन : वसीली वसील्येविच! तुम वहाँ से चले आये, सोचा होगा पिंड छूटा, मगर मैं यहाँ भी आ पहुँचा... मैं तुम्हारे पास... यहाँ आया हूँ...

बेस्सेमेनोव (उसकी तरफ़ देखे बिना) : आ गये तो बैठ जाओ... चाय पी लो. ..

पेर्चीख़िन : मुझे चाय नहीं चाहिए! तुम पियो अपनी चाय... मैं तुमसे कुछ बात करने आया हूँ...

बेस्सेमेनोव : क्या बात करोगे? सब बकवास है।

पेर्चीख़िन : बकवास है? अच्छा? **(हँसता है)** बड़े अजीब आदमी हो तुम!

(नील भीतर आ जाता है, अलमारी का सहारा लेकर खड़ा हो जाता है और बेस्सेमेनोव को कठोर दृष्टि से देखता है)

पिछले चार दिन से मैं तुमसे बात करने की सोचता रहा हूँ और... आख़िर आज आ ही पहुँचा...

बेस्सेमेनोव : बस, हटाओ यह क़िस्सा...

पेर्चीख़िन : नहीं, यह क़िस्सा ऐसे ख़त्म नहीं होगा! तुम बहुत अक़्लमन्द आदमी हो, वसीली वसील्येविच! अमीर आदमी हो... मैं तुम्हारी आत्मा से बात करने आया हूँ!

प्योत्र (नील के पास जाकर दबी ज़बान से बात करते हुए) : तुमने इसे यहाँ क्यों आने दिया?

नील : तुम अपनी टाँग नहीं अड़ाओ! इससे तुम्हारा कोई मतलब नहीं...

प्योत्र : न जाने तुम हमेशा क्या करते रहते हो...

पेर्चीख़िन (प्योत्र की आवाज़ को दबाते हुए) : तुम बूढ़े आदमी हो... एक

मुद्दत से मैं तुम्हें जानता हूँ!

बेस्सेमेनोव (गुस्से में आकर) : तुम मुझसे चाहते क्या हो?

पेर्चीख़िन : तुम मुझे यह बताओ कि तुमने उस दिन मुझे अपने घर से क्यों निकाला था? मैंने बहु- सोचा, बार-बार सोचा, मगर मेरी समझ में कुछ नहीं आया! मुझे बताओ, मेरे भाई! तुमने ऐसा क्यों किया था? मैं अपने दिल में कोई बुरी भावना नहीं... प्यार लेकर आया हूँ...

बेस्सेमेनोव : और सिर में भूसा लेकर!

तत्याना : प्योत्र! ज़रा मुझे सहारा दो... नहीं, तुम पोल्या को बुलाओ...

(प्योत्र बाहर जाता है)

पेर्चीख़िन : अब पोल्या को ही ले लो! मेरी प्यारी गुड़िया को... मेरी पवित्र बुलबुल को... उसी की वजह से तुमने मुझे उस दिन निकाला था? ठीक है न? इसलिए कि वह तुम्हारी तत्याना के चहेते को ले उड़ी?

तत्याना : ओह, कैसी बेहूदा बात है!.. कितनी कमीनी बात!..

बेस्सेमेनोव (धीरे से उठते हुए) : होश मे आओ, पेर्चीख़िन! खबरदार, जो फिर यह बात मुँह से...

येलेना (नील को धीरे से) : इसे बाहर ले जाइये! नहीं तो ये उलझ पड़ेंगे।

नील : मैं नहीं चाहता उसे बाहर ले जाना।

पेर्चीख़िन : तुम मुझे दूसरी बार तो बाहर निकालने से रहे, सलवी वसील्येविच! तुम्हें इसकी जरूरत नहीं पड़ेगी... पोल्या... मैं उसे प्यार करता हूँ...वह अच्छी लड़की है! मगर फिर भी उसने जो कुछ किया है, वह उसे नहीं करना चाहिए था... नहीं, भाई, उसे वह नहीं करना चाहिए था! दूसरे के माल पर हाथ क्यों साफ़ कर लिया? अच्छा नहीं...

तत्याना : येलेना! मैं... मैं अपने कमरे में जा रही हूँ...

(येलेना उसकी बाँह थामकर सहारा देती है। नील के पास से गुज़रते हुए तत्याना उसे धीरे से कहती है)

शर्म आनी चाहिए! उसे बाहर ले जाओ...

बेस्सेमेनोव (अपने पर क़ाबू पाते हुए) : पेर्चीख़िन! तुम...अपनी ज़बान बन्द रखो! बैठ जाओ—ज़बान को बन्द रखो...नहीं तो घर जाओ...

(पोल्या आती है। उसके पीछे-पीछे प्योत्र आता है)

प्योत्र (पोल्या से) : ज़रा शान्ति से काम लीजिए... मैं मिन्नत करता हूँ!..

पोल्या : वसीली वसील्येविच! पिछली बार आपने मेरे बापू को यहाँ से निकाला क्यों था?

(बेस्सेमेनोव चुपचाप और गुस्से से उसकी तरफ़ और फिर बारी-बारी से सबकी ओर देखता है)

पेर्चीख़िन (अपनी उँगली दिखाकर धमकाते हुए) : शी! बेटी! कुछ नहीं बोलो... तुम्हें समझना चाहिए...तत्याना ने ज़हर पी लिया—किसलिए? देखा? देखा वसीली वसील्येविच? भाई मेरे, मैं तो बस, सच्ची बात करूँगा... सबके साथ इन्साफ़ करूँगा! सीधे-सादे ढंग से...

पोल्या : ज़रा रुक जाओ, बापू...

प्योत्र : पोल्या, सुनिये तो...

नील : तुम चुप रहो तो...

बेस्सेमेनोव : पोल्या, तुम... सुन लो, तुम गुस्ताख़ हो...

पेर्चीख़िन : पोल्या? अरे नहीं... वह तो...

बेस्सेमेनोव : चुप रहो! मैं कुछ समझ नहीं पा रहा हूँ... यह किसका घर है? यहाँ मालिक कौन है? यहाँ ग़लत और सही का फ़ैसला करनेवाला कौन है?

पेर्चीख़िन : मैं! मैं बारी-बारी से सबके बारे में फ़ैसला सुनाऊँगा...पहली बात तो यह है कि पराया माल उड़ाना ज़्यादती है! दूसरे, अगर ऐसा किया है, तो लौटा दो!

प्योत्र (पेर्चीख़िन से) : सुनो! बातें बनाना बन्द करो! आओ, मेरे कमरे में चलो...

पेर्चीख़िन : तुम मुझे बिल्कुल अच्छे नहीं लगते, प्योत्र! तुम घमण्डी हो... अन्दर से खोखले हो! तुम्हें न कुछ आता है, न जाता है... ज़मीनदोज़ नाले-नालियाँ—यह क्या होता है? यह भी नहीं जानते! मुझे दूसरों ने बताया...

(प्योत्र उसे आस्तीन से पकड़कर खींचता है)

मुझे मत छुओ, नहीं छेड़ो...

नील (प्योत्र से) : उसे नहीं छेड़ो... रहने दो!

बेस्सेमेनोव (नील से) : तुम यहाँ किसलिए खड़े हो? कुत्तों को भड़काने के लिए? यही करने के लिए न?

नील : नहीं मैं यह जानना चाहता हूँ कि मामला क्या है? पेर्चीख़िन का क्या

कुसूर था? उसे किसलिए यहाँ से बाहर निकाला गया था?... और पोल्या का इस मामले से क्या सरोकार है?

बेस्सेमेनोव : तुम क्या मुझ पर जिरह कर रहे हो?

नील : अगर कर भी रहा हूँ, तो क्या हुआ? आप इंसान हैं, मैं भी...

बेस्सेमेनोव (गुस्से में आकर) : नहीं, तुम इंसान नहीं हो... तुम... ज़हर हो! तुम दरिन्दे हो!...

पेर्चीख़िन : शी-शी! हमें शान्ति से बात करनी चाहिए, ईमानदारी से...

बेस्सेमेनोव (पोल्या से) : और तुम नागिन हो! तुम भिखमंगी!...

नील (दाँत पीसकर) : आप चिल्लायें नहीं!

बेस्सेमेनोव : क्या कहा? दफ़ा हो जाओ यहाँ से! आस्तीन के साँप... मैंने खून-पसीने की कमाई से तुम्हें पाला-पोसा है...

तत्याना (अपने कमरे से ही) : पिता जी! चुप हो जाइये!

प्योत्र (नील से) : क्यों? मिल गये न तुम्हें तुम्हारी मन के लड्डू?.. ओह, डूब मरो!

पोल्या (धीरे से) : मुझ पर चीख़िये-चिल्लाइये नहीं! मैं आपकी गुलाम नहीं हूँ... हर कोई आपकी धौंस बर्दाश्त नहीं करेगा... मैं जानना चाहती हूँ कि आपने मेरे बापू को यहाँ से क्यों निकाला था?

नील (शान्ति से) : हाँ, मैं भी यह जानना चाहता हूँ... यहाँ कोई पागलख़ाना तो है नहीं... हमें अपने किये-धरे का जवाब देना चाहिए...

बेस्सेमेनोव (अपने को वश में करते हुए, धीरे से) : चले जाओ, नील, यहाँ से!... कहीं कोई गुल न खिल जाये, चले जाओ! तुम्हें यह न भूलना चाहिए कि तुम मेरे टुकड़ों पर पलकर बड़े हुए हो... मैंने तुम्हें पाला-पोसा है...,

नील : आप अपने इन टुकड़ों के मुझे ताने नहीं दीजिये! मैंने जो कुछ खाया है, उसके लिए कौड़ी-कौड़ी अदा कर चुका हूँ!

बेस्सेमेनोव : तुम... तुम मेरी आत्मा को खा गये हो... तुम कमीने!..

पोल्या (नील का हाथ थामते हुए) : आओ, चलें यहा से!

बेस्सेमेनोव : जा... जा रेंगनेवाली नागिन! तू ही तो इस सारे क़िस्से की जड़ में है... यह सब तेरी ही वजह से हुआ है... तूने ही मेरी बेटी को डसा... और अब इसे. .. बुरा हो तेरा... तेरी वजह से ही मेरी बेटी...

पेर्चीख़िन : वसीली वसील्येविच! शान्ति से! इन्साफ़ से!

तत्याना (चिल्लाते हुए) : यह झूठ है! यह झूठ है, पिता जी! प्योत्र, तुम कुछ कहते क्यों नहीं? **(अपने कमरे के दरवाज़े में दिखाई देती है और लड़खड़ाती तथा हाथ फैलाये हुए कमरे के बीच में आ खड़ी होती है)** प्योत्र, यह सब किसलिए!

हे भगवान! तेरेन्ती ख्रीसान्फ़ोविच! इनसे कहिये...कहिये इनसे...नील! पोल्या! चले जाओ यहां से! भगवान के लिए चले जाओ यहाँ से! यह सब किसलिए...

(सब योंही कमरे में इधर-उधर आने-जाने लगते हैं। तेतेरेव खींसे निपोरते हुए धीरे से उठकर खड़ा होता है। बेस्सेमेनोव अपनी बेटी के सामने से हट जाता है। प्योत्र तत्याना का हाथ थाम लेता है और परेशान-सा इधर-उधर देखता है)

पोल्या : आओ चलें!

नील : चलो! **(बेस्सेमेनोव से)** हम जा रहे हैं! यह क़िस्सा ऐसे हंगामे के साथ ख़त्म हो रहा है, इसका मुझे अफ़सोस है।

बेस्सेमेनोव : जाओ, जाओ!.. ले जाओ इसे भी अपने साथ...

नील : अब मैं कभी लौटकर नहीं आऊँगा...

पोल्या (ज़ोर से, काँपती आवाज़ में) : मेरे मत्थे यह कलंक मढ़ा जाये... तत्याना के लिए मुझे दोषी ठहराया जाये... क्या कोई ऐसा भी कर सकता है? इसमें भला मेरा क्या क़ुसूर है? शर्म आनी चाहिए आपको...

बेस्सेमेनोव (बौखलाकर) : तुम जाती हो या नहीं?!

नील : ऐसे गरजिये नहीं!

पेर्चीख़िन : बुरा नहीं मानो, बच्चो! तुम्हें नम्र होना चाहिए...

पोल्या : तो विदा! चलो, बापू!

नील (पेर्चीख़िन से) : आओ चलें!

पेर्चीख़िन : नहीं, मैं तुम्हारे साथ नहीं जाऊँगा... मेरा रास्ता अलग है... मैं तो दम का दम हूँ... तेरेन्ती! खुद अपने पैरों पर... अपना मामला तो सीधा-सादा है...

तेतेरेव : मेरे यहाँ चलो...

पोल्या : चलो! चलो भी, इससे पहले कि कहीं फिर से न निकाल दें...

पेर्चीख़िन : नहीं... मैं तुम्हारे साथ नहीं जाऊँगा... तेरेन्ती, मेरे और इनके रास्ते अलग-अलग हैं! मैं यह समझता हूँ...

प्योत्र (नील से) : आख़िर जाओ भी यहाँ से!...

नील (प्योत्र से) : जा रहा हूँ... विदा... तुम भी खूब नमूने हो...

पोल्या (नील से) : आओ चलें। आओ भी...

(वे बाहर जाते हैं)

बेस्सेमेनोव (उनके पीछे चिल्लाकर कहता है) : मेरी बात याद रखना! यहीं आओगे एक दिन... यहीं आकर नाक रगड़ोगे!..

प्योत्र : हटाइये भी, पिता जी! बस भी कीजिये...

तत्याना : पिता जी! प्यारे पिता जी... चिल्लाइये नहीं...

बेस्सेमेनोव : थोड़े दिनों की बात है... हम भी देखेंगे...,

पेर्चीख़िन : लो... अब तो वे चले गये... अच्छा हुआ! जाते हैं तो जायें!

बेस्सेमेनोव : जाते-जाते उन्हें दिल की कुछ बातें तो बता देता... खून चूसनेवाली जोंकें! खिलाया, पिलाया... **(पेर्चीख़िन से)** और तुम, शैतान बुड्ढे! उल्लू! आकर लगे बड़बड़ करने... क्या चाहिए तुम्हें? क्या?

प्योत्र : पिता जी! बस, काफ़ी है...

पेर्चीख़िन : वसीली वसील्येविच! चिल्लाओ नहीं... मैं तुम्हारी इज़्ज़त करता हूँ—अजीब आदमी हो तुम भी! मैं। बुद्धू हूँ—यह ठीक है! लेकिन मैं भी अच्छे-बुरे का फ़र्क समझता हूँ...

बेस्सेमेनोव (सोफ़े पर बैठ जाता है) : मेरा दिमाग़ बिल्कुल काम नहीं कर रहा। मेरी समझ में कुछ भी नहीं आ रहा...यह सब हो क्या गया? जैसे गर्मियों की आँधी से अचानक आग भड़क उठे... एक चला गया—कहता है कि कभी नहीं लौटेगा... भई वाह, कितना आसान है—यह जा... वह जा... मगर नहीं... मैं इस पर विश्वास नहीं कर सकता...

तेतेरेव (पेर्चीख़िन से) : तुम यहा क्या कर रहे हो? किसलिए बैठे हो?

पेर्चीख़िन : मामला ठीक करने के लिए... मैं तो सीधे-सीधे बात निपटाता हूँ... दो और दो-चार, बस। वह मेरी बेटी है न? बड़ी अच्छी बात है... इसका मतलब यह है कि उसका कर्त्तव्य है... **(सहसा चुप हो जाता है)** मैं नालायक़ बाप साबित हुआ हूँ... मेरे प्रति कोई कर्त्तव्य नहीं है उसका... जैसे चाहे, वैसे रहे! मगर मुझे तत्याना के लिए अफ़सोस होता है... तत्याना, मुझे तुम्हारे लिए अफ़सोस होता है... मुझे तुम सबके लिए अफ़सोस होता है! ओह! सच बात तो यह है कि तुम सभी मूर्ख हो!..

बेस्सेमेनोव : चुप रहो...

प्योत्र : तत्याना, क्या येलेना निकोलायेव्ना चली गयी?

येलेना (तत्याना के कमरे से) : नहीं, मैं यहा हूँ... दवा तैयार कर रही हूँ...

बेस्सेमेनोव : मेरे दिमाग़ में सब कुद गड्डमड्ड हो गया है... कुछ भी समझ में नहीं आ रहा! क्या नील... सचमुच ही कभी वापस नहीं आयेगा?

अकुलीना इवानोव्ना (परेशान-सी आती है) : क्या बात हो गयी? नील और पोल्या वहाँ रसोईघर में हैं... मैं तो स्टोर में थी...

बेस्सेमेनोव : वे चले गये?

अकुलीना इवानोव्ना : नहीं... पेर्चीख़िन का इन्तज़ार कर रहे हैं... पोल्या ने कहा है... बापू से कह दीजिये... और उसके होंठ काँप रहे थे। नील बौखलाये कुत्ते की तरह गुर्रा रहा है... मामला क्या है?...

बेस्सेमेनोव (उठते हुए) : मैं अभी... अभी जाकर उनके होश ठिकाने करता हूँ...

प्योत्र : नहीं, पिता जी! नहीं जाइये...

तत्याना : पिता जी! कृपया यह सब नहीं कीजिये...

बेस्सेमेनोव : क्या नहीं कीजिए?

अकुलीना इवानोव्ना : मामला क्या है?

बेस्सेमेनोव : मामला यह है कि नील जा रहा है... हमेशा के लिए...

प्योत्र : तो क्या हुआ? जा रहा है—बड़ी अच्छी बात है... आपको उसकी क्या ज़रूरत है? वह शादी करना चाहता है... अपना अलग घर बसाना चाहता है...

बेस्सेमेनोव : अहा! अपना अलग घर बसाना चाहता है? क्या... मैं... क्या मैं उसके लिए पराया हूँ?

अकुलीना इवानोव्ना : तुम किसलिए इतने परेशान हो रहे हो, प्योत्र के पिता? जाता है, तो जाये!.. हमारे अपने बच्चे हैं... पेर्चीख़िन, तुम यहाँ क्या कर रहे हो? जाओ उनके पास!

पेर्चीख़िन : मेरा और उनका रास्ता अलग-अलग है...

बेस्सेमेनोव : नहीं, बात यह नहीं है... जाता है, तो जाये! लेकिन—कैसे? वह गया किस तरह से... जाते वक़्त कैसी आँखों से वह मुझे देख रहा था?..

(येलेना तत्याना के कमरे से बाहर आती है)

तेतेरेव (पेर्चीख़िन का हाथ थामकर उसे दरवाज़े की तरफ़ ले जाते हुए) : चलो चलें, चलकर ढालें एक-एक जाम, तुम और मैं...

पेर्चीख़िन : ओह, भगवान के भोंपू! आदमी तुम ढंग के हो...

(दोनों बाहर जाते हैं)

बेस्सेमेनोव : यह मैं जानता था कि एक दिन वह हमें छोड़ जायेगा... मगर क्या इस तरह से? और वह... वह कैसे चिल्ला रही थी... भिखारिन, कल की छोकरी... नहीं, मैं अभी जाकर उनकी अक़्ल ठिकाने करता हूँ...

अकुलीना इवानोव्ना : हटाओ भी, प्योत्र के पिता! वे हमारे लिये पराये लोग हैं! अफ़सोस भी क्या? चले गये, तो चले गये!

येलेना (धीरे से प्योत्र को) : आओ, मेरे यहा चलें...

तत्याना (येलेना से) : मैं भी चलती हूँ... मुझे भी अपने साथ ले चलो!..

येलेना : हाँ, हाँ, तुम भी चलो...

बेस्सेमेनोव (उसकी बात सुनकर) : कहा?

येलेना : मेरे यहाँ!

बेस्सेमेनोव : किसे चलने को कह रही हैं? प्योत्र को?

येलेना : हाँ, और तत्याना को भी...

बेस्सेमेनोव : तत्याना का क्या सवाल पैदा होता है! और प्योत्र भी आपके यहाँ... नहीं जायेगा!

प्योत्र : मगर पिता जी, मैं कोई बच्चा नहीं हूँ! मैं जाऊँगा या नहीं जाऊँगा यह खुद...

बेस्सेमेनोव : तुम नहीं जाओगे!

अकुलीना इवानोव्ना : मान लो, प्योत्र! ओह, अपने पिता की बात मान लो!

येलेना (बिगड़ते हुये) : आप हद कर रहे हैं, वसीली वसील्येविच!..

बेस्सेमेनोव : नहीं, यह तो आप हद कर रही हैं! चाहे आप पढ़े-लिखे लोग हैं... चाहे आप लोग शर्म-हया को घोलकर पी गये हैं... और किसी की इज़्ज़त नहीं करते...

तत्याना (पागलों की तरह चीख़ती है) : पिता जी! अब रहने दीजिये...

बेस्सेमेनोव : चुप रहो! अगर तुम ख़ुद अपनी तक़दीर से नहीं निपट सकतीं, तो चुप रहो... रुको! किधर चल दीं?

(येलेना दरवाज़े की तरफ़ बढ़ती है)

प्योत्र (उसके पीछे लपककर उसका हाथ पकड़ लेता है) : ज़रा रुक जाइये! हमें इस क़िस्से को अभी...और हमेशा के लिए... तय कर लेना चाहिए...

बेस्सेमेनोव : मेरी पूरी बात सुन लीजिये... मेहरबानी कीजिये, मेरी पूरी बात सुन लीजिये! मुझे यह समझने दीजिये कि यह सब हो क्या रहा है?

(पेर्चीख़िन रंग में और खुश-खुश आता है। उसके पीछे-पीछे तेतेरेव है। वह भी मुस्करा रहा है। ये दोनों दरवाज़े में खड़े रहकर एक-दूसरे से नज़रें मिलाते हैं। पेर्चीख़िन बेस्सेमेनोव की तरफ़ आँख मारता है और निराशा का भाव दिखाते हुए हाथ झटकता है)

सभी कहीं चले जा रहे हैं... अपने इरादे बताये बिना... कितनी बुरी बात है! कितने दुख और कैसी नादानी की बात है! तुम कहाँ जा सकते हो, प्योत्र! तुम... तुम हो क्या? कैसे जीना चाहते हो? क्या करना चाहते हो?

(अकुलीना इवानोव्ना धीरे-धीरे सिसकने लगती है। प्योत्र, येलेना और तत्याना एक दल-सा बनाकर बेस्सेमेनोव के सामने खड़े हो जाते हैं। मगर जब बेस्सेमेनोव यह कहता है—"तुम कहाँ जा सकते हो, प्योत्र?"—तो तत्याना उन्हें छोड़कर मेज़ के पास चली जाती है, जहाँ उसकी माँ खड़ी है। पेर्चीख़िन इशारों से तेतेरेव को कुछ दिखाता है, सिर झटकता है और इस तरह अपने हाथों को हिलाता है मानो पक्षियों के झुण्ड को उड़ा रहा हो)

मुझे तुमसे यह पूछने का पूरा हक़ है... तुम अभी जवान और बेसमझ हो! मैं पिछले अट्ठावन वर्ष से कोल्हू के बैल की तरह काम कर रहा हूँ—सिर्फ़ तुम बच्चों की ख़ातिर!..

प्योत्र : मैं यह सुन चुका हूँ, पिता जी! सैकड़ों बार...

बेस्सेमेनोव : रुको! चुप रहो!

अकुलीना इवानोव्ना : ओह प्योत्र, प्योत्र...

तत्याना : अम्मां, आप... कुछ भी तो नहीं समझतीं!

(अकुलीना इवानोव्ना अपना सिर हिलाती है)

बेस्सेमेनोव : चुप रहो! तुम कह ही क्या सकते हो? सिखा ही क्या सकते हो? नहीं, कुछ भी नहीं...

प्योत्र : पिता जी! आप मुझे सता रहे हैं! आप मुझसे क्या चाहते हैं? आपको क्या चाहिए?

अकुलीना इवानोव्ना (अचानक ऊँची आवाज़ में) : ठहरो, मैं भी दिल रखती हूँ, मुझे भी कुछ कहने का हक़ है! मेरे बेटे! तुम यह क्या कर रहे हो! क्या सोच लिया है तुमने दिल में? तुमने हमसे पूछा, हमारी सलाह ली?

तत्याना : बहुत भयानक है यह सब! जैसे कोई दिल पर कुंद आरी चला रहा हो... (माँ से) आप मेरे तन और आत्मा दोनों के टुकड़े-टुकड़े किये दे रही हैं...

अकुलीना इवानोव्ना: तुम्हारी माँ—और कुंद आरी? तुम्हारी माँ?

बेस्सेमेनोव : ज़रा रुक जाओ, बुढ़िया! इसे... प्योत्र को अपनी बात कहने दो...

येलेना (प्योत्र से) : बस, बहुत हो चुका!.. मुझसे अब और बर्दाश्त नहीं होता—मैं जा रही हूँ...

प्योत्र : भगवान के लिए ज़रा रुक जाइये! अभी सब कुछ तय हो जायेगा...

येलेना : नहीं, यह तो पागलख़ाना है! यह...

तेतेरेव : येलेना निकोलायेव्ना, आप चली जाइये! भाड़ में जायें ये सब!

बेस्सेमेनोव : आप, जनाब! आप...

तत्याना : यह क़िस्सा कभी ख़त्म भी होगा या नहीं? जाओ, यहाँ से चले जाओ, प्योत्र!

प्योत्र (लगभग चीख़ते हुए) : पिता जी... देखिये! अम्मां... यह है मेरी मंगेतर!

(ख़ामोशी। सभी की आँखें प्योत्र पर जमी हुई हैं। कुछ देर बाद अकुलीना इवानोव्ना स्तम्भित-सी हाथ पर हाथ मारती है और भयभीत-सी अपने पति को देखती है। बेस्सेमेनोव इस तरह पीछे की ओर हटता है, जैसे कि किसी ने उसे धक्का दे दिया हो। उसका सिर झुक जाता है। तत्याना गहरी साँस छोड़ती है और धीरे-धीरे पियानो की तरफ़ बढ़ती है। उसके हाथ दायें-बायें लटके हुए हैं)

तेतेरेव (धीमे से) : क्या बढ़िया मौक़ा चुना है इसने,...

पेर्चीख़िन (आगे बढ़कर) : तो क़िस्सा ख़त्म हो गया! सभी पंछी... फुर हुए जा रहे हैं! अरे जवान लोगो, उड़ जाओ पिंजरे तोड़कर जैसे चिड़ियाँ उड़ती है मस्ती से...

येलेना (प्योत्र के हाथ से अपना हाथ छुड़ाते हुए) : मुझे जाने दो! मैं यह सब सहन नहीं कर सकती...

प्योत्र (बुदबुदाते हुए) : अब सब कुछ तय हो गया...आन की आन में...

बेस्सेमेनोव (अपने बेटे को सिर झुकाकर) : बहुत-बहुत शुक्रिया, मेरे बेटे!.. दिल ख़ुश कर दिया ऐसी बढ़िया ख़बर सुनाकर...

अकुलीना इवानोव्ना (रोते हुए) : तुमने अपने आपको बरबाद कर लिया, प्योत्र! क्या यह... यह तुम्हारे लायक़ है...

पेर्चीख़िन : क्या कहा? येलेना? प्योत्र के लायक़ नहीं? यह... तुम क्या कह रही हो बुढ़िया? दो कौड़ी का भी नहीं है तुम्हारा बेटा!

बेस्सेमेनोव (येलेना से धीमी आवाज़ में) : और आपका भी शुक्रिया, देवी जी! तो अब यह कहीं का नहीं रहा! उसे अभी पढ़ना चाहिए था... और अब?... ख़ूब हाथ मारा! वैसे मैं यह पहले से ही महसूस कर रहा था... **(ज़हरीले ढंग से)** शिकार फाँस लेने के लिए बधाई! तुम्हें मेरा आशीर्वाद नहीं मिलेगा, प्योत्र! और तुम... आख़िर तुमने उसे दबोच ही लिया? ले उड़ीं? बिल्ली... कमीनी...

येलेना : अपनी ज़बान को लगाम दें!..

प्योत्र : पिता जी! आप... पागल हो गये हैं!

येलेना : नहीं, ज़रा रुकिये! हाँ, यह सही है कि मैंने उसे आपसे छीन लिया है! हा मैंने ही!... मैंने ही उससे कहा था कि वह मुझसे शादी कर ले! सुनते हैं आप झगड़ालू बुड्ढे?... मैंने ही उसे आप लोगों के चंगुल से निकाल लिया है! उस पर तरस खाकर! आप लोगों ने उसे सता-सताकर उसकी जान ले ली है... आप आत्मा को खा जानेवाले घुन हैं! आपका प्यार—उसकी बरबादी बन जाता! आप सोचते हैं—ओह, मैं जानती हूँ, आप क्या सोचते हैं!—आप सोचते हैं कि मैंने यह सब कुछ अपना उल्लू सीधा करने के लिए किया है? ख़ैर, आप जो चाहें, सोचते रहें—ओह, कितनी नफ़रत करती हूँ मैं आपसे!

तत्याना : येलेना! येलेना! यह तुम क्या कह रही हो?

प्योत्र : येलेना... आइये चलें!

येलेना : हो सकता है कि मैं उससे कभी शादी भी न करूँ! आप ख़ुश हैं न? यह बहुत मुमकिन है! अभी से नहीं घबराइये! मैं शादी किये बिना, किसी रस्म के बिना... योंही इसके साथ रहूँगी... मगर इसे आपके पास नहीं फटकने दूँगी! आप अब उसे और नहीं सता सकेंगे, नहीं सता सकेंगे! और वह अब कभी भी आपके पास नहीं आयेगा! कभी भी! कभी भी!

तेतेरेव : ज़िन्दाबाद, येलेना! ज़िन्दाबाद!

अकुलीना इवानोव्ना : हे भगवान! प्योत्र के पिता, यह सब क्या है?... यह सब क्या है?...

प्योत्र (येलेना को दरवाज़े की तरफ़ धकेलते हुए) : जाओ.. जाइये... जाइये...

(येलेना बाहर जाती है और प्योत्र को भी अपने साथ खींच ले जाती है)

बेस्सेमेनोव (लाचारी की हालत में इधर-उधर देखता है) : क्यों, कैसी रही?... **(अचानक गुस्से में आकर)** पुलिस को बुलाओ! **(पाँव पटकता है)** मैं इसका बिस्तर-बोरिया सड़क पर फिंकवा दूँगा! कल ही... ओह, कमीनी!...

तत्याना : पिता जी, अपने को सम्भालिये!

पेर्चीख़िन (हैरान होकर, कुछ न समझते हुए) : वसीली वसील्येविच! मेरे प्यारे! तुम्हें क्या हुआ है? इस तरह चिल्ला क्यों रहे हो? तुम्हें तो ख़ुश होना चाहिए...

तत्याना (अपने पिता के पास जाकर) : सुनिये...

बेस्सेमेनोव : तुम? तुम अभी भी... यहाँ हो! तुम भी क्यों नहीं चली जातीं? चलती बनो... तुम्हारे जाने के लिए कोई जगह नहीं? कोई ऐसा नहीं जिसके साथ जा सको? पंछी उड़ गया?

(तत्याना लड़खड़ाती हुई पीछे हटती है, जल्दी से पियानो की तरफ़ चली जाती है। परेशान और दयनीय-सी अकुलीना इवानोव्ना उसकी तरफ़ लपकती है)

पेर्चीख़िन : वसीली सवीलयेविच, गोली मारो इस क़िस्से को! अक़्ल से काम लो! प्योत्र अब पढ़े-लिखेगा नहीं...उसे ऐसा करने की ज़रूरत भी क्या है?

(बेस्सेमेनोव बुझी-बुझी नज़रों से पेर्चीख़िन को देखता है और सिर हिलाता है)

मज़े की ज़िन्दगी गुज़ारने के लिए उसके पास काफ़ी पैसा है—तुमने जोड़ दिया है... बीवी बिल्कुल रसभरी है... और तुम चिल्ला रहे हो, शोर मचा रहे हो! तुम भी अजीब आदमी हो! होश मे आओ!

(तेतेरेव ज़ोर से हँसता है)

अकुलीना इवानोव्ना (रोते हुए) : सभी छोड़कर चले गये! सभी हमें छोड़ गये!

बेस्सेमेनोव (इधर-उधर देखते हुए) : चुप रहो, तत्याना की माँ! लौट आयेंगे... इतनी हिम्मत नहीं है इनमें। कहाँ जायेंगे? **(तेतेरेव से)** तुम क्या खड़े-खड़े दाँत निकाल रहे हो? तुम सड़े नासूर! शैतान की आँत! निकल जाओ मेरे घर से! कल ही निकल जाओ! तुम लोगों का पूरा गिरोह है यहाँ...

पेर्चीखिन : वसीली वसील्येविच!..

बेस्सेमेनोव : दफ़ा हो जाओ तुम भी! आवारा... उठाईगीरे...

अकुलीना इवानोव्ना : तत्याना! तत्याना! मेरी प्यारी बिटिया! मेरी बदक़िस्मत, फूटे नसीबवाली बेटी! जाने क्या होनेवाला है?

बेस्सेमेनोव : बेटी, तुम सब कुछ जानती थीं... तुमसे कुछ भी छिपा न था... मगर तुम चुप रहीं! बाप के खिलाफ़ साज़िश? **(सहसा ही उसके चेहरे पर भय दिखाई देता है)** क्या वह इसको... इस बेहया औरत को धता नहीं बता देगा? छिनाल... और बीवी! मेरा बेटा... लानत के मारे हो तुम सब लोग! तुम सब बेहया और गिरे हुये लोग!

तत्याना : बस, मेरा पिंड छोड़ दीजिये! कहीं ऐसा न हो... कि मैं आपको नफ़रत करने लगूँ।

अकुलीना इवानोव्ना : मेरी प्यारी गुड़िया! मेरी बदक़िस्मत बेटी! इन सबने तुम्हें बुरी तरह सता डाला है! हम सभी को सता डाला है!... आख़िर किसलिए?

बेस्सेमेनोव : और किसने किया है यह सब? यह सारी आग उस कमीने, उस बदमाश नील की लगायी हुई है! उसी ने हमारे बेटे को ग़लत रास्ते पर डाला है... उसी की वजह से हमारी बेटी ग़म में घुल रही है! **(अलमारी के पास खड़े हुए तेतेरेव को देखकर)** अरे ओ घनचक्कर! तुम यहाँ खड़े क्या कर रहे हो? निकल जाओ मेरे घर से! दफ़ा हो जाओ!

पेर्चीखिन : वसीली वसील्येविच! इसने कौनसा गुनाह किया है? ओह... बुड्ढे का बिल्कुल दिमाग़ ख़राब हो गया है!

तेतेरेव (शान्ति से) : चिल्लाओ नहीं, बुड्ढे! वक़्त का जो तूफ़ान तुम्हारे ऊपर घिर रहा है, उसे रोकना तुम्हारे बल-बूते का काम नहीं... मगर घबराओ नहीं... तुम्हारा बेटा लौट आयेगा...

बेस्सेमेनोव (जल्दी से) : तुम... तुम यह कैसे जानते हो?

तेतेरेव : वह तुमसे दूर नहीं जायेगा। थोड़ी देर को वह ऊपर उठ गया है, उसे ऊपर उठा लिया गया है... मगर वह फिर से अपनी जगह पर लौट आयेगा... इस दुनिया से तुम्हारे कूच करने की देर है और वह झट से तुम्हारे इस बाड़े में वापस आयेगा, इसे थोड़ा-बहुत बदलेगा, कुर्सियों-मेज़ों की जगह बदल देगा और फिर तुम्हारी तरह ही सुख-चैन की बंसी बजायेगा...

पेर्चीखिन (बेस्सेमेनोव से) : देखा तुमने? अजीब आदमी हो! योंही आपे से बाहर हुए जा रहे थे! वह तुम्हारी भलाई चाहता है...तुम्हारे दिल के चैन के लिए इतनी अच्छी-अच्छी बातें कह रहा है और तुम चिल्ला रहे हो! तेरेन्ती, मेरे भाई, यह समझदार आदमी है...

तेतेरेव : वह बस, मेज़ों-कुर्सियों को इधर-उधर कर देगा और यह मान लेगा कि ज़िन्दगी और लोगों के सामने उसने बहुत अच्छी तरह से अपना कर्त्तव्य पूरा कर दिया है। वह भी तुम्हारे ही साँचे में ढला है, बिल्कुल तुम्हारे जैसा है...

पेर्चीखिन : एक ही पतीली के दो चावल!

तेतेरेव : बिल्कुल वैसा ही... वैसा ही कायर, और वैसा ही मूर्ख...

पेर्चीखिन (तेतेरेव से) : ज़रा रुको! यह तुम क्या कह रहे हो?

बेस्सेमेनोव : तुम बात करो... गाली-गलौज नहीं करो... तुम्हारी यह मजाल?

तेतेरेव : और वक़्त आने पर वह भी कौड़ी-कौड़ी को दाँत से पकड़ेगा, चमड़ी से दमड़ी निकालेगा, तुम्हारी तरह की अकड़बाज और पत्थर दिल बन जायेगा।

(पेर्चीखिन यह न समझते हुए हैरान होकर तेतेरेव की तरफ़ देखता है कि वह बूढ़े को शान्त कर रहा है या उसे कोस रहा है। बेस्सेमेनोव भी हतप्रभ-सा दिखाई देता है, मगर तेतेरेव की बातें उसे दिलचस्प लगती है)

और अन्त में वह भी इसी तरह अपनी क़िस्मत को रोयेगा, जैसे आज तुम रो रहे हो... ज़िन्दगी आगे बढ़ती जा रही है, बुड्ढे। जो इसके साथ क़दम मिलाकर नहीं चलेगा, वह पीछे रह जायेगा, अकेला रह जायेगा...

पेर्चीखिन : सुना तुमने? मतलब यह कि सब कुछ वैसे ही हो रहा है जैसे होना चाहिए... और तुम आपे से बाहर हुए जा रहे हो!

बेस्सेमेनोव : रुको, बीच में नहीं टपको!

तेतेरेव : और इसी तरह तुम्हारे बदक़िस्मत और तुच्छ बेटे पर भी किसी को दया नहीं आयेगी। लोग उसके मुँह पर सब कुछ ऐसे दो टूक ही कह देगें जैसे मैं इस वक़्त तुमसे कह रहा हूँ—"उम्र भर तुमने क्या भाड़ झोंका है? क्या नेक काम किया है?" और जैसे इस वक़्त तुमसे, वैसे ही तुम्हारे बेटे से भी इसका कोई जवाब देते

न बनेगा...

बेस्सेमेनोव : हाँ... तुम यह सब कह रहे हो... तुम हमेशा बड़े ढंग से अपनी बात कहते हो! मगर तुम्हारी आत्मा में क्या है? नहीं, मैं तुम पर विश्वास नहीं कर सकता! और—सुनो—तुम यहाँ से चलते बनो! बस, बहुत हो चुका...बहुत बर्दाश्त कर लिया तुम सबको! मेरे ख़िलाफ़ आग भड़काने में... तुम्हारा कुछ कम हाथ नहीं है...

तेतेरेव : काश, ऐसा होता! ओह, नहीं मैंने यह नहीं किया... नहीं... (बाहर जाता है)

बेस्सेमेनोव (सिर झटकते हुए) : ख़ैर... कोई बात नहीं... हम सब बर्दाश्त करेंगे! इन्तज़ार करेंगे... ज़िन्दगी भर बर्दाश्त करते रहे हैं... और बर्दाश्त करेंगे! **(अपने कमरे में चला जाता है)**

अकुलीना इवानोव्ना (अपने पति के पीछे भागते हुए) : प्योत्र के पिता! मेरे प्यारे! हम किस्मत के मारे हैं! हमारे बच्चों ने हमारे साथ ऐसा क्यों किया? किस गुनाह की सजा दी है उन्होंने हमें? **(अपने कमरे में चली जाती है)**

(पेर्चीखिन कमरे के बीच हक्का-बक्का-सा खड़ा हुआ आँखें मिचमिचाता है। पियानो के स्टूल पर बैठी हुई तत्याना बहकी-बहकी नज़रों से इधर-उधर देखती है। बेस्सेमेनोव के कमरे से दबी-दबी आवाज़ें सुनाई देती हैं)

पेर्चीखिन : तत्याना! तत्याना...

(तत्याना उसकी ओर न तो देखती है और न कोई जवाब देती है)

तात्याना! यह सब क्या है? किसलिए कुछ यहाँ से भाग गये और कुछ रो-धो रहे हैं? **(तत्याना को देखकर आह भरता है)** अजीब लोग हैं! **(बेस्सेमेनोव के कमरे के दरवाजे की तरफ देखता है और फिर सिर हिलाता हुआ ड्योढ़ी की तरफ जाता है)** चलता हूँ तेरेन्ती के पास... बहुत अजीब हैं लोग ये!

(तत्याना धीरे-धीरे झुकते हुए पियानो के परदों पर कोहनियाँ टिकाती है। बहुत-से स्वर एकसाथ गूँज उठते हैं और फिर धीरे-धीरे उनकी आवाज़ समाप्त हो जाती है)

(परदा गिरता है)

परिशिष्ट

'करवट'

—कोन्स्तान्तीन स्तानिस्लाव्स्की



देश में व्याप्त उथल-पुथल और क्रान्ति की खदबदाहट हमारे थिएटर के लिए ऐसे नाटकों की शृंखला लेकर आयी जो सामाजिक और राजनीतिक भावनाओं, असन्तोष, विरोध, और एक ऐसे नायक के स्वप्नों को प्रतिबिम्बित करते थे जो साहस के साथ सच कह सकता था।

सेंसर और पुलिस प्रशासन चौकन्ना थे, नीली पेंसिल नाटकों के पन्नों पर अनवरत इधर से उधर चलती रहती थी, और ऐसे हिस्सों को काटती रहती थी जिनसे अशान्ति पैदा होने की ज़रा-सी भी आशंका थी। डर था कि थिएटरों को प्रचार के अड्डों में बदल दिया जायेगा। और सच कहें, तो इस दिशा में कोशिशें भी की गयीं।

प्रयोजन और कला का मेल नहीं हो सकता; वे एक-दूसरे को बहिष्कृत करती हैं। जब भी प्रयोजनमूलक, उपयोगितावादी, अकलात्मक विचारों से सच्ची कला की ओर बढ़ा जाता है तो वह फीकी पड़ जाती है। कला में प्रयोजन को खुद अपने विचारों में, भावना में तबदील हो जाना चाहिए, उसे अभिनेता का ईमानदार प्रयास और उसके स्वभाव का अंग बन जाना चाहिए। तभी वह अभिनेता के आत्मिक-जीवन, भूमिका और नाटक का अभिन्न अंग बन सकेगा। लेकिन तब वह प्रयोजन नहीं रह जायेगा, वह निजी विश्वास बन जायेगा। दर्शक थिएटर में जो देखता है उससे अपने निष्कर्ष निकाल सकता है, और खुद अपना प्रयोजन निर्मित कर सकता है।

यह एक आवश्यक शर्त है, और जब ऐसी शर्त मौजूद हो तभी हम सामाजिक-राजनीतिक चरित्र के नाटक प्रस्तुत करने के बारे में सोच सकते हैं। क्या हमारे पास सृजन की ऐसी शर्तें हैं?

हमारे थिएटर में सामाजिक-राजनीतिक लाइन की शुरुआत मक्सिम गोर्की ने की। हम जानते थे कि वह दो नाटक लिख रहे हैं। उन्होंने एक के बारे में मुझे

क्रीमिया में बताया था—उस समय इसका कोई नाम नहीं था। दूसरे का नाम था 'दि पेटी बुर्जुआ' ('करवट'—सं.)। हमें पहले वाले में दिलचस्पी थी, क्योंकि इसमें गोर्की ने उन लोगों के जीवन को चुना था जो उन्हें प्यारे थे, वे "प्राणी जो कभी इनसान थे" जिन्होंने लेखक के रूप में उन्हें ख्याति दिलायी थी। आवारागर्दों के जीवन को पहले कभी रूसी मंच पर प्रस्तुत नहीं किया गया था। लेकिन, समाज के निचले तबकों से आने वाली हर चीज़ की तरह वे लोगों का ध्यान खींच रहे थे। उन दिनों हम उनके बीच प्रतिभाओं की तलाश कर रहे थे। हमारे नाट्य विद्यालय के ज्यादातर विद्यार्थी जनता के बीच से आये थे। गोर्की, जो खुद भी जनता के बीच से आये थे, हमारे थिएटर के लिए बिलकुल ज़रूरी थे।

हमने आग्रह किया कि गोर्की अपना पहला नाटक जल्द से जल्द पूरा करें ताकि हम इसकी प्रस्तुति से उस थिएटर का शुभारम्भ कर सकें जो मोरोज़ोव हमारे लिए बना रहे थे। लेकिन गोर्की ने अपने नाटक के चरित्रों के बारे में शिकायत की :

"देखिये, मुश्किल यह है कि मेरे इन लोगों ने मुझे घेर लिया है, और मुझ पर तथा एक दूसरे पर चढ़े जा रहे हैं, और मैं उन्हें अपनी-अपनी उचित जगहों पर जाने के लिए राज़ी नहीं कर पा रहा और न ही उनका आपस में मेलजोल करा पा रहा हूँ। भाड़ में जायें वे! वे बस बोलते रहते हैं, बोलते रहते हैं, बोलते रहते हैं, और वे इतना अच्छा बोलते हैं कि, ईमान से, उनको चुप कराना बड़े दुख की बात होगी।"

'दि पेटी बुर्जुआ' पहले नाटक से पहले प्रस्तुति के लिए तैयार हो गया। बेशक, इसे पाकर हमें खुशी हुई और हमने इसी की प्रस्तुति से अपने नये थिएटर का उद्घाटन करने का फैसला किया। मुश्किल यह थी कि हमारे पास ऐसा कोई अभिनेता नहीं था जो तेतेरोव की भूमिका निभा सके। वह एक प्रान्तीय कस्बे के गिरजा की भजनमण्डली का मन्द्रगायक था और नाटक का हीरो था। उसकी भूमिका के लिए शानदार व्यक्तित्व और ज़बर्दस्त गूँज भरी आवाज़ होना ज़रूरी था। हमारे स्कूल के विद्यार्थियों में एक था जो बिला शक इस भूमिका के लिए उपयुक्त था। उसके पास तेतेरोव के लिए ज़रूरी आवाज़ थी, वह गिरजा की भजनमण्डली में, और बाद में एक उपनगरीय रेस्त्रां के कोरस में गा भी चुका था। बरानोव—यही उसका नाम था—बिला शक प्रतिभाशाली और दिल का भला था, लेकिन इसके साथ ही, वह पियक्कड़ और एकदम असंस्कृत भी था। गोर्की के नाटक की साहित्यिक बारीकियाँ उसे समझाना मुश्किल होता। लेकिन जैसाकि हमने बाद में देखा, तेतेरोव की भूमिका में उसका यही फूहड़पन बड़ा काम आया। तेतेरोव नाटक में जो कुछ कहता और करता है उसे उसने परम सत्य मान लिया। तेतेरोव उसके लिए एक जीता-जागता

व्यक्ति, एक नायक और आदर्श बन गया, और इसके चलते, लेखक के प्रयोजन तथा उसके विचारों का अभिनेता की आत्मा में पुनर्सृजन हो सका। कोई भी तकनीक या कौशल नाटक की सिचुएशनों और पात्र के विचारों में इतनी संजीदगी और ईमानदारी नहीं पैदा कर सकता था। बरानोव का तेतेरोव नाटकीय नहीं था, वह एक असली भजन गायक था, और दर्शक फ़ौरन इसे महसूस कर लेता था तथा उसके सही मोल को पहचान लेता था। बाकी सब मंच निर्देशक के हाथों में था जिसके पास इस पात्र को सही ढंग से पेश करने और उसे वास्तविक महत्त्व प्रदान करने के लिए प्रचुर साधन मौजूद थे।

वर्ष 1901-02 का सीज़न, जब 'दि पेटी बुर्जुआ' का रिहर्सल चल रहा था, खत्म होने के करीब था, लेकिन नाटक अब भी ड्रेस रिहर्सल के लिए तैयार नहीं था। आम तौर पर हम ड्रेस रिहर्सल के साथ ही नाटक को अपने दिमाग में बैठाते थे। अगर यह समय रहते मन में नहीं बैठा, तो सब कुछ भूल जायेगा और हमें सारा काम फिर से शुरू करना पड़ेगा। इसलिए, तमाम बाधाओं के बावजूद, हमने पीटर्सबर्ग में एक सार्वजनिक ड्रेस रिहर्सल करने का फैसला किया, जहाँ आम तौर पर हम वसन्त में प्रदर्शन करते थे। राजनीतिक अशान्ति का दौर था, और हमारे हर क़दम पर पुलिस तथा सेंसर की नज़र थी, क्योंकि अपने नये रंगमण्डल की वजह से, आर्ट थिएटर को प्रगतिशील समझा जाता था, जबकि खुद गोर्की पुलिस की निगरानी में थे। समस्याओं का कोई अन्त न था!

प्रस्तुति के लिए अनुमति प्राप्त करने में काउण्ट विट्टे ने सबसे ज़्यादा मदद की। आख़िरकार अनुमति तो मिल गयी लेकिन सेंसर ने नाटक के पाठ में ढेरों फेर-बदल कर डाले। उनमें से कुछ तो बड़े मज़ाकिया थे। जैसे, "व्यापारी रोमानोव की पत्नी" इन शब्दों को बदल कर "व्यापारी इवानोव की पत्नी" कर दिया गया क्योंकि रोमानोव नाम से ज़ार के घराने की बू आती थी। शुरू में हमें सिर्फ सीज़न-टिकट धारकों के लिए नाटक की प्रस्तुति की अनुमति मिली, क्योंकि अधिकारियों के साथ अपनी वार्ताओं के दौरान नेमिरोविच-दांचेंको ने उन्हें समझाया कि नाटक पर रोक लगाकर वे हमें सीज़न-टिकट धारकों के प्रति अपनी वचनबद्धता पूरी करने से वंचित कर रहे हैं। इसके चलते एक दिलचस्प प्रसंग सामने आया जिसे बहुत से लोग अविश्वसनीय मानते हैं, लेकिन उस समय को देखते हुए ऐसा होना ही था।

पीटर्सबर्ग के गर्वनर को डर था कि कमोबेश "भरोसेमन्द" सीज़न-टिकट धारकों के अलावा बहुत से बेटिकट नौजवान भी शो में पहुँच सकते हैं—और, वैसे भी हम ऐसे लोगों को हमेशा ही भीतर आने देते थे—इसलिए उसने दर्शकों को सीटों पर बैठाने का काम करने वाले सभी व्यक्तियों को हटवाकर उनकी जगह पुलिसवाले तैनात कर दिये। जब नेमिरोविच-दांचेंको को इसका पता चला, तो उन्होंने पुलिसवालों

को हटाकर थिएटर के स्वागत कर्मियों को फिर से तैनात कर दिया क्योंकि पुलिस की मौजूदगी से दर्शकों पर बुरा प्रभाव पड़ रहा था। पहले पुलिस के असिस्टेण्ट चीफ ने, फिर पुलिस चीफ ने और फिर पीटर्सबर्ग के गर्वनर ने उनसे इस बात के लिए जवाब तलब किया। व्लादीमिर इवानोविच ने नाटक के प्रदर्शन के दौरान थिएटर छोड़कर गर्वनर से मिलने जाने से इनकार कर दिया और अगले दिन सुबह ही उससे मिले। उन्होंने गर्वनर को बताया कि वर्दीधारी पुलिसवालों का दर्शकों पर बुरा प्रभाव पड़ता है और तब गर्वनर ने आदेश दिया कि पुलिसवाले सादे कपड़े में रहेंगे। समूचा आधिकारिक पीटर्सबर्ग–ग्रैण्ड ड्यूक और मंत्री, पूरी सेंसरशिप कमेटी, पुलिस और अन्य सरकारी महकमों के प्रतिनिधि, उनकी पत्नियाँ और परिवार–पानायेव थिएटर में मौजूद था जहाँ ड्रेस रिहर्सल का मंचन हुआ। थिएटर के आसपास के इलाकों और ख़ुद थिएटर पर स्पेशल पुलिस का पहरा था और थिएटर के सामने के चौक में घुड़सवार हथियारबन्द पुलिस तैनात थी। ऐसा लगता था मानो ये सारी तैयारियाँ किसी नाटक के ड्रेस रिहर्सल के लिए नहीं बल्कि युद्ध के लिए की गयी हों।

प्रीमियर को औसत सफलता मिली। बरानोव नाटक से अधिक सफल रहा। वह धरती पुत्र था, एक और शल्यापिन।

सोसायटी लेडीज़ उससे परिचय करने को बेताब थीं। उसे प्रेक्षागृह में ले जाया गया। वह उनके साथ फ़्लर्ट कर रहा था। उस दृश्य का बयान करना मुश्किल है।

अगले दिन अख़बारों ने उसकी तारीफ़ के पुल बाँध दिये। यह तारीफ़ ही उसकी बरबादी की वजह बन गयी। समीक्षाएँ पढ़ने के बाद पहला काम उसने यह किया कि एक टॉप हैट, दस्ताने और एक फ़ैशनेबल कोट खरीद लिया। फिर वह रूसी संस्कृति को कोसने लगा।

कहने लगा, "हमारे यहाँ तो बस दस-पन्द्रह अखबार निकलते हैं। पेरिस और लन्दन में पाँच सौ, बल्कि पाँच हज़ार निकलते हैं।"

दूसरे शब्दों में, बरानोव को अफ़सोस था कि सिर्फ पन्द्रह अखबारों ने उसकी तारीफ़ की थी, और अगर वह पेरिस में होता, तो पाँच हज़ार समीक्षाएँ हुई होतीं। उसके नज़रिये से, संस्कृति के यही असल मायने थे।

बरानोव का लहज़ा बदल गया। जल्दी ही, वह पीने लगा। वह ठीक हो गया और उसे माफ़ कर दिया गया क्योंकि वह था प्रतिभाशाली। वह अनुकरणीय ढंग से जीवन बिताने लगा। लेकिन जैसे-जैसे वह तेतेरोव की भूमिका निभाता गया और उसकी सफलता बढ़ती गयी, वह दिनोदिन बिगड़ता गया। उससे गलतियाँ होने लगी, वह अपनी बीमारी का फ़ायदा उठाने लगा, और एक बार तो वह थिएटर पहुँचा ही नहीं। हमें मजबूरन उससे नाता तोड़ना पड़ा। वह अपनी ज़बर्दस्त आवाज़ में कविताएँ और नाटकों के संवाद बोले हुए और पूरी ताक़त से गाते हुए मास्को की सड़कों पर घूमता रहता था। उसे अकसर थानों में ले जाया जाता था। कभी-कभार वह हमसे मिलने चला आता। हम हमेशा उसका स्वागत करते और उसे खिलाते-पिलाते थे लेकिन उसने कभी हमसे उसे वापस लेने के लिए नहीं कहा।

वह कहता था, "मैं जानता हूँ कि मैं इस लायक नहीं हूँ।"

बाद में किसी ने उसे सिर्फ भीतर के कपड़ों में घूमते देखा, और फिर वह ग़ायब ही हो गया। कहाँ है वह अब, बच्चों जैसे दिल और दिमाग़ वाला वह प्यारा, प्रतिभाशाली आवारा? ज़्यादा सम्भावना है कि उसकी मौत हो गयी है–बहुत अधिक यश, बहुत अधिक सफलता के कारण। उसकी आत्मा को शान्ति नसीब हो!

कुल मिलाकर, नाटक सफल नहीं रहा, न पीटर्सबर्ग में और न ही मास्को में, और हमारी सारी कोशिशों के बावजूद दर्शक इसके सामाजिक-राजनीतिक महत्त्व को पकड़ नहीं सके, सिवाय बरानोव की भूमिका के, और वह तो राजनीति के बारे में कुछ भी नहीं सोचता था।